ज्ञान – राशी

(हिन्दी भाषा में पूर्ण तरेश ज्ञान प्राप्त करने के लिए एकमेव उपयोगी पुस्तक)

लेखक तथा प्रकाशक—
नेशनल प्रिन्टर्स, पब्लिशिंग कॉपरेटिव सोसायटी,
जोधपुर।

प्रथम आवृत्ति

नवम्बर, १९५४.

मूल्य १.

ज्ञान -- राशी

(हिन्दी भाषा में पूर्ण रुपेण ज्ञान प्राप्त करने के लिए
एकमेव उपयोगी पुस्तक)

लेखक तथा प्रकाशक—
नेशनल प्रिन्टर्स, पब्लिशिंग कॉपरेटिव सोसाइटी, लिमिटेड
जोधपुर।

प्रथम आवृत्ति

नवम्बर, १९५४.

मूल्य १-४-०

विषय—सूची

॥ ॐ ॥

पर्यायवाची शब्द

अग्नि — पावक, वसु, वन्हि, दहन, वृक हिरण्यरेता, आग, धनंजय, हव्याद।

अटा — सौध, हर्म्य, प्रसाद।

आँख— लोचन, नयन, चक्षु नेत्र दृग।

अंधेरा— अंध. तमिस्त्र, तम, तिमिर, अंध्यार।

अनार— रक्तबीज, हालिक, करक, शुकप्रिय, दाड़िम

अमृत— अंम, सुधा, पीयूष, सुरभोग, अगदराज, सोम।

आकाश— नभ, व्योम, गगन, अम्बर, अनन्त, ख, पुष्कर वियत घनवास, सुरवग।

आम— आम्र, रसाल, चूतः, पिकवल्लभ, माकंद।

इन्द्र— मघवा, मालती-सुत, शतमन्यु, वज्रधर, आखंडल, देवराज घराक, सुरपति, दिवपति, घनाघन, तुरापाट, परजन्य प्राचीपति।

उदर— कुक्षि, जठर, तुंद, रु, पेट,

ऊँट— अध्वग, सल, लंबोष्ट्र, वक्रग्रीव।

ऋषि— तापस, यती, व्रती, तपी।

कज्जल— पाटल, मषी, दीपसुत, लोकांजन।

कनेर— हयमारक, प्रतिहास, करवीर, शतप्रास।

कपट— कुन्तृति, कैतव, छल।

कपूर— चंद्रसंज्ञ, हिमवालुका, चंद्रक, कपूर,

कबूतर— पारावात, आरक्तपद, कलरव, कपोत ।
कमल— पुष्कर, पयोज, जलज, महोत्पल, कञ्ज, राजीव, वारिज पद्म, अम्भोज, पंकज, सरोज, वारिजात ।
कर्ण— श्रोत, श्रवण, श्रुति, शब्दग्रह, कान ।
कवच— बख्तर, वर्म, अवधान, देहत्राण, मर्म-रक्षक, दंशन ।
कस्तूरी— मृगनाभि, मृगमद ।
काग— सकृत, परभृत, काट, आत्मघोष ।
कुत्ता— सारमेय, रसकील, श्वा, कौलेयक, श्वान ।
कुबेर— धनद, पुण्यजनेश्वर, वैश्रवण ।
केश— अलक, शिरोरुह, चिकुर, कच ।
कोकिल— परभृत, वनप्रिय ।
क्रोध— [illegible]तेधा, रिस, अमरप, तमस, कोप, क्षुध, रोष ।
कामदेव—मदन, मनोमय, मार, स्मर, मथन, मनोज, अनङ्ग, रतिपति ।
कल्पवृक्ष—सुर-तरु, हरिचन्दन, मन्दार, पारिजात, देववृक्ष ।
खंग— कौक्षेयक, तलवार, चन्द्रहास, करवाल, कृपाण, खड्ग ।
गणेश— गणपति, गण-नायक, एक दन्त, लम्बोदर, गजानन, धूम-केतु ।
गधा— चिरमेही, वालेय, खर, गर्दभ ।
गाय— माता, गाहेइ, गऊ, गो, रोहिणी, गनाय ।
गीदड़— भूरिमाय, वंचक, शिवा मृग, धूर्तक, शृंगालु, क्रोष्टु, जंबुक ।
गुलाब— थलज, कमल, पौष्पद्रविय, पाटल ।
गंगा— भागीरथी, सुरसरि, विष्णुपदी, मंदाकिनी, निर्झरनदी ।
घर— गेह, भवन, निकेतन, सदन, गृह ।
घृत— सार आज्य, सरपिष, हविष, घत रस, घी ।
घोड़ा— हरिकांत, हेषी, तुरंग, वातायन, गंधर्व, अश्व, चामर श्री पुत्र, वाजी.

चतुर— वैज्ञानिक, शिक्षित, निपुण, विज्ञ, कृति, प्रवीण, कुशल, सुमति।
चमेली— मालती, सुमना उत्तम गंधा, सुवतन।
चन्द्रमा— मयंक, इंदु, सोम, अमीकर, शशि, द्विज, सुधाकर, रजनीपति।
चाँदी— रजत, रूप्य, कलधौत, सित, दुर्वर्ण।
चाँदनी— ज्योत्स्ना, कौमदी, चँद्रीका।
चोर— स्तेन, दस्यु, प्रतिरोधि, मोसक, तस्कर, एकागारिक, पाटच्चर।
चन्दन— गन्धसार, श्रीखण्ड, हरि, मलयज।
जल— वारि, अम्बु नीर, तोय, सलिल, पानी।
तर्कस— उपासंग, तूण, भाथा, निषङ्ग, तूणीर, पिडुरी।
तालाब— ह्रद, पुष्कर, कासार, सर, सरसी, तालसढ़ांग।
दर्पण — कांच, प्रतिविम्बी, आदर्श, मुकुर, स्वकर।
दान— त्याग, विश्रापित, निर्वविशण, वितरण।
दीपक— दीप, दशेधन, नेहप्रिय, दशाकर्षी, नेहाश, गृहमणि
दिन— अहनि, वासर, दिवस।
धरती— पृथ्वी, क्षिति, क्षोणी, वसुधा, जगति, वसुमति भू, धरा।
धर्मराज—वैवस्वत, पितृपति, शमन, प्रेतपति, महिषध्वज, समवर्मी, यम।

नदी— सरिता, तटिनी, तरंगिनी, श्रोति, वगा, जलमाल।
नेत्र— लोचन, अवंक, चक्षु, दृग, ईक्षण, नैन, आँख।
नौकर— दास, अनुचर, भृत्य, किंकर, परिचारक।
पपीहा— वर्षाप्रिय, वाहीण, चातक, सारंग।
पृथ्वी— क्षिति, क्षोणी, धरती, वसुधा वसुमती, जगती।
पर्वत— पहाड़, नग, अचल, भूधर, शैल, गिरि।
पवन— मारुत, वायु, बयारि, नभस्वत, आजिर, मातरिश्वा, प्रषदश्व गन्धवह, प्रभंजन।

शीश— ललाट, अलिक, रु, गोधी, भाग, भाल, थाहर।
शैया— शयन, कशिपु, तल्प, सम्वेश्न, सेज, शयनीय।
सर्प— उरग, भुजंग, नाग, काकोदर, पन्नग, विषधर, चक्षुश्रवा, व्याल अहि, कालि, शेष।
हीरा— निष्कु, पदिक, वज्र।
हंस— मानस, ओक, मराल, स्वेत, गरुत, चक्रांग।
हरिण— एण, प्रषत, सारंग, कुरंग, मृग, अजिनयोनि।
हरड़े— अभया, पथ्यया, अव्यथा, अमृता, चेतकि, हरीतकी।
हवा— पवन, मारुत, समीर, वायु।
हाथी— गज, हस्ती, दन्ती, द्विरध, कुञ्जर, नाग, मातंग, मातंग।
अष्टसिद्धि—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, काम, प्राकम्य, ईशित्व,
नवनिधि के नाम—

महापद्म अरु पद्म पुनि कच्छप मकर मुकुंद।
शंख खर्व अरु नील इक कहियत अरु इक कुंद।

अध्याय— २

अलंकार

१. शब्दों में तथा काव्य में विशेषता प्रगट करने के लिये जिन शब्द का प्रयोग किया जाय, जिससे उनमें चमत्कार या सौन्दर्य झलके, उन अलकार कहते हैं।

अलंकार तीन भागों में बांटे जा सकते हैं:—

(१) शब्दा अलंकार।
(२) अर्थालंकार।
(३) उभयालंकार।

(१) जब रचना में शब्द - संबन्धी चमत्कार होता है तो उसे शब्दालंकार कहते हैं जैसे - "इस सौंदर्य को देख कर मन - मयूर मत्त होकर नृत्य करने लगा"

(२) जहाँ अर्थ संबन्धी - चमत्कार होता है वहाँ अर्थालंकार होता है।

"बन्दउँ गुरुपद पदुम परागा"

जहाँ शब्दालङ्कार और अर्थालङ्कार दोनों एक ही वाक्यावली या कथन में विद्यमान हो और दोनों का सौन्दर्य एक साथ देख पड़ता हो, वहाँ उभयालंकार होता है। उपरोक्त उदाहरण में उभयालंकार भी है।

शब्दा अलंकार के कई भेद हैं - उनमें से मुख्य ये हैं:—

अनुप्रास— एक ही अक्षर का बार २ आना अनुप्रास होता है - मत्त - मयूर - मत्त में 'म' की, चतुर चितेरे में 'च' और 'त' की आवृत्ति बार २ है।

यमक— जब पद खण्ड, पद या पद समूह की आवृति भिन्न २ अर्थों से होती है तो यमक अलंकार होता है। "असरन सरन चरन गनपति" में रन की आवृति भिन्न २ अर्थ में है।

श्लेष— जब एक ही शब्द दो या दो से अधिक अर्थों में आते हैं तो पहला होता है। जैसे - मतवाले आपस में लड़ते हैं - (मतवाले=पागल और मतवाले=मजहबी लोग)

अर्थालंकार १०० से ऊपर हैं उनके कुछ भेद निम्नलिखित हैं:—

उपमा— जब किसी सुन्दरता का वर्णन करने के लिये किसी वस्तु से तुलना की जाती है तो उसे उपमा अलंकार कहते हैं — मुख चन्द्र के समान उज्जवल है।

रूपक— जिस वाक्य में कवि उपमेय और उपमान को प्रकट नहीं करते, किन्तु उनको छिपा लेते हैं उसे रूपक कहते हैं जैसे – मुख चन्द्र है।

उत्प्रेक्षा— उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है जैसे मुख मानो चन्द्र है।

२. प्रसंगः— प्रसंग से अभिप्राय यह है कि यह किस अवसर का, किसका कथन, किसके प्रति और किस प्रयोजन से है ? इस लिये प्रसंग देते समय जहां तक हो सके यह बतलाना आवश्यक है कि कौन, किससे, किस अवसर पर और किस उद्देश्य से कहता है।

३ अन्तर्कथाः-जिन पद्यों में कोई अन्तर्कथा हो और यदि परीक्षक उसके लिखने को विशेष रूप से कहे तब तो उस कथा को अवश्य लिखना ही चाहिए। अन्यथा उसको प्रथक लिखने की आवश्यकता नहीं। केवल सक्षेप मे उसका उतना भाग जितना अर्थ की पूर्ति के लिये आवश्यक हो लिख देना ही पर्याप्त है। सारी गाथा गाने की आवश्यकता नहीं।

४. व्याख्याः—व्याख्या का अभिप्राय है – टीका टिप्पीनी पूर्वक या विस्तार – पूर्वक अर्थ लिखना अर्थात् प्रसंग (कौन, किससे, किस अवसर पर, किस अभिप्राय से कहता है), अन्तर्कथा (यदि कोई हो तो) – पिंगल, रस, अलंकार, गुण और दोष का बतलाना, आक्षेपों का समाधन, इत्यादि, सभी आवश्यक बातों की स्पष्टीकरण व्याख्या है। यह कार्य साधारण योग्यता वाले के लिये कठिन है।

५ अनुवाद– किसी बात को एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलने को अनुवाद कहते हैं, परन्तु आधुनिक काल मे किसी बात को

सरल शब्दों में उसकी पूर्ण व्याख्या करने को अनुवाद कहते हैं।

६. भावार्थ—किसी ऐसे पद्य व गद्य का अर्थ जिसमें कवि ने अपने विचार प्रगट किये हों या कोई बात दूसरे पर डाल कर कही हो तो उसका यह अर्थ, जिससे वास्तव में कवि का मतलब है, उस अर्थ के प्रगट करने को भावार्थ कहते हैं। भावार्थ को दूसरे शब्दों में सारांश, तात्पर्यार्थ या संक्षिप्तार्थ भी कहते हैं।

गुण

रस को बढ़ाने वाले धर्म को "गुण" कहते हैं।

गुण के तीन भेद हैं:—

(१) माधुर्य्य।

(२) ओज।

(३) प्रसाद।

माधुर्य्य:— जिस रचना को सुनकर चित पिगल जाय उसे 'माधुर्य गुण' कहते हैं।

ओज:— जिस रचना से चित्त में उत्तेजना, वीरता और साहस बढ़े उसे 'ओज गुण' कहते हैं।

प्रसाद:— जिस रचना को सुनते ही उसके अर्थ का ज्ञान हो जाय उसे 'प्रसाद गुण' कहते हैं।

अध्याय ३

शब्द अध्ययन

अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप

संस्कृत भाषा में शुद्ध शब्दों को तत्सम रूप और अशुद्ध शब्दों को तद्भव रूप कहते हैं।

अ. शब्द (तद्भव)	शुद्ध शब्द (तत्सम)	अ. शब्द (तद्भव)	शुद्ध शब्द (तत्सम)
अग्नि	अग्नि	कान	कर्ण
अरथ	अर्थ	किसान	कृषक
असीस	आशिष	कुम्हार	कुम्भकार
आधीन	अधीन	ग्यान	ज्ञान
अंगूठा	अंगुष्ठ	घनिष्ट	घनिष्ठ
अत्याधिक	अत्यधिक	चिन्ह	चिह्न
आल्हाद	आह्लाद	ज्योतिष विद्या	ज्योतिर्विद्या
आवश्यकीय	आवश्यक	त्रैवार्षिक	त्रिवार्षिक
औषधि	ओषधि, औषध	दुरावस्था	दुरवस्था
ईर्षा	ईर्ष्या	निर्धनी	निर्धन
उपरोक्त	उपर्युक्त	गाहक	ग्राहक
उपलक्ष	उपलक्ष्य	घर	गृह
एकत्रित	एकत्र	छन	क्षण
एक्यता	ऐक्य, एकता	चमार	चर्मकार
किंवदन्ती	किंवदन्ती	क्षत्री	क्षत्रिय
किम्वा	किंवा	चोंच	चञ्चु
कलेश	क्लेश	तुरन्त	त्वरित
कपूर	कर्पूर	दोपहर	द्विपहरी

अ.शब्द (तद्भव)	शुद्ध शब्द(तत्सम)	अ.शब्द (तद्भव)	शुद्ध शब्द (तत्सम)
निरोगी	निरोग	राजनैतिक	राजनीतिक
पैत्रिक	पैतृक	राष्ट्रीय	राष्ट्रिय
प्रगट	प्रकट	श्रेष्ठतम	श्रेष्ठ
प्रफुल्लित	प्रफुल	पष्ठम	षष्ठ
पत्थर	प्रस्तर	सज्जन पुरुष	सज्जन
भाप	वाष्प	सदा – सर्वदा	सदा, सर्वदा
भैंस	महिष	सन्मान	सम्मान
बिच्छु	वृश्चिक	सन्मुख	सम्मुख
मक्खी	मक्षिका	समतुल्य	सम, तुल्य
पहर	प्रहर	सम्वत्	संवत्
सेठ	श्रेष्ठ	सविनयपूर्वक	सविनय,
शक्कर	शर्करा		विनय पूर्वक
सांकल	शृंखला	साधु सज्जन	साधु, सज्जन
प्रियम्वदा	प्रियंवदा	सिञ्चन	सेचन
फाल्गुण	फाल्गुन	सौजन्यता	सौजन्य
ब्राम्हण	ब्राह्मण	संगठन	संघटन
भाग्यमान्	भाग्यवान्	स्वयम्वर	स्वयंवर
मुहूर्त्त	मुहूर्त		

अध्याय ४.

विपरीत (विलोम) शब्द

निम्न लिखित शुद्ध शब्दों के साथ २ उनके विलोम भी बतलाये गये हैं।

शुद्ध शब्द	(विलोम)	शुद्ध शब्द	(विलोम)
अपना	पराया	आदर	अनादर
अच्छा	बुरा	आशा	निराशा
अनावृष्टि	अतिवृष्टि	आय	व्यय

शुद्ध शब्द	(विलोम)	शुद्ध शब्द	(विलोम)
आकाश	पाताल	चतुर	मूर्ख
आदि	अन्त	साध्य	असाध्य
आगे	पीछे	स्वाभाविक	अस्वाभाविक
आज्ञा	अवज्ञा	लाभ	हानि
अपकार	उपकार	ज्ञान	अज्ञान
अधम	उत्तम	कुटिल	सरल
अन्त	अनन्त	ऊँच	नीच
उदय	अस्त	विदेश	स्वदेश
उन्नति	अवनति	ज्ञात	अज्ञात
जीवन	मरण	दुर्गन्ध	सुगन्ध
कृश	स्थूल	दिन	रात
दानी	कृपण	दोष	गुण
नूतन	पुरातन	धर्मात्मा	पापात्मा
प्राचीन	अर्वाचीन	निर्बल	सबल
सफल	निष्फल	न्याय	अन्याय
एक	अनेक	पाप	पुण्य
पंडित	मूर्ख	प्रकाश	अंधकार
कृतज्ञ	कृतघ्न	पावन	अपावन
सुअवसर	कुअवसर	ब्रह्मचारी	व्यभिचारी
क्रय	विक्रय	महात्मा	दुरात्मा
खट्टा	मीठा	यश	अपयश
खोटा	खरा	राजा	रङ्क
जय	पराजय	विष	अमृत
सदाचारी	दुराचारी	शोक	हर्ष
आहार	निराहार	स्वतन्त्र	परतन्त्र

शुद्ध शब्द	(विलोम)	शुद्ध शब्द	(विलोम)
स्थावर	जंगम	सुलभ	दुलभ
बलवान	निर्बल	धीर	अधीर
सुख	दुख	गर्मी	सर्दी
मलिन	निर्मल	जय	पराजय
ऋणी	उऋणी	जड़	चेतन
नास्तिक	आस्तिक	सज्जन	दुर्जन
प्रसन्न	अप्रसन्न	साकार	निराकार
सीधा	वक्र	स्वर्ग	नरक
स्नेह	द्वेष	उदार	अनुदार
दयालु	निर्दयी	उत्कर्ष	अपकर्ष

अध्याय ४

— युग्म — (जोड़ा)

एक से शब्दों का सूक्ष्म भेद

प्रसाद— कृपा, देवताओं का भोग।
प्रासाद— महल
उपेक्षा— त्याग, अस्विकार
अपेक्षा— चाह, अभिलाषा, आशा, मुकाबिला
गृह— घर
ग्रह— पकड़ना, नक्षत्र (ग्रह नव प्रकार के होते हैं
कुल— वंश, घराना, तमाम
कूल— तट, किनारा, तालाब, नहर
परिणाम— नतीजा, फल,
परिमाण— अन्दाजा

प्रमाण— सबूत
प्रणाम— नमस्कार
सुर— देवता, विद्वान,
सूर— योद्धा, सूर्य, आचार्य
शुक्ल— श्वेत, निर्दोष, उजाला पक्ष,
शुल्क— फीस, महसूल, चन्दा, इनाम
वृज— व्रज (कृष्ण की जन्म भूमि)
वज्र— इन्द्र का शस्त्र, हीरा, बरछा
रत्न— जवाहरात, मणी,
पाषाण— पत्थर
संकोच— तनाव, लज्जा, डर
लज्जा— लाज,
ओज— तेज, प्रकाश, (थोड़ी देर तक रहने वाला) काव्य का गुण।
तेज— प्रताप, आभा, (सदा रहने वाला या स्थिाई)
आय— आमदनी
व्यय— खर्च
काम— कामदेव, (पु० लि०)
कामना— इच्छा, (स्त्री० लि०)
अज्ञ— जड़बुद्धि
मूर्ख— जिसे कुछ ज्ञान न हो।
दया— दूसरों के दुःख को दूर करने की स्वाभाविक इच्छा
कृपा — छोटों के प्रति दया
अलौकिक— जो लोक और समाज में पहिले देखा न गया हो।
अस्वाभाविक— जो सृष्टि के नियम के विरुद्ध हो।
भ्रम— असावधानी से जहां सन्देह हो।
प्रमाद— मूर्खता और मत्तता से जहां सन्देह हो

अज्ञान— जिसमें स्वाभाविक बुद्धि न हो
अनभिज्ञ— जिसे समझने को अवसर ही प्राप्त न हुआ हो
द्वेष— किसी कारण से घृणा करना
ईर्षा— बे कारण दूसरों की बढ़ती को देख कर जलना।

श्रम— शरीर के अङ्गों से काम करना
आयास— मन की शक्ति से काम करना
परिश्रम— श्रम की विशेषता को परिश्रम कहते हैं

उत्साह— कार्य करने की उमंग
उद्योग— काम में लग जाना
उद्यम— उद्योग की स्थिरता को उद्यम कहते हैं।

प्रयास— सफलता के समीप उद्यम का नाम प्रयास है
चेष्टा— किसी कार्य का बाहिरी प्रयत्न करना चेष्टा है

युक्ति— किसी कार्य का हेतु दिखलाना युक्ति है
तर्क— युक्ति की कसौटी को तर्क कहते हैं।
वाद— किसी निर्णय पर पहुँचने के लिये युक्ति-प्रत्युक्ति को वाद कहते हैं

प्रेम— साधारणतः हृदय के आकर्षण का भाव प्रेम है
श्रद्धा— बड़ों से जो प्रेम हो उसे श्रद्धा कहते हैं
भक्ति— देवताओं से जो प्रेम हो वह भक्ति है
स्नेह— छोटों से प्रेम को स्नेह कहते हैं
प्रणय— स्त्री में जो प्रेम हो उसे प्रणय कहते हैं

ज्ञान— किसी विषय को भली प्रकार जानना ज्ञान है
बुद्धि— मन की ठीक वृत्ति का नाम बुद्धि है
धी— विचारने की शक्ति को धी कहते हैं
मति— इच्छा करने की शक्ति मति है

मन— स्मरण रखने की शक्ति (ज्ञानेन्द्रीय) का नाम मन है
चित्त— जानने वाली (चेतन) ज्ञानेन्द्री यको चित्त कहते हैं
मानव— इच्छा में ज्ञानेन्द्रीय का नाम मानव हैं
हृदय— अनुभव करने वाली ज्ञानेन्द्रीय का नाम हृदय है
अन्तःकरण— बाहिरी इन्द्रीयों से सम्बंध न रखने को अन्तःकरण कहते हैं
दुःख— मन से दुःख होता है
शोक— चित की व्याकुलता को शोक कहते हैं
क्षोभ— मनमाना काम न होने को क्षोभ कहते हैं
खेद— निराशा को खेद कहते हैं
विषाद— दुःख की विशेषता में कर्त्तव्य और ज्ञान के नष्ट होने को विषाद कहते हैं

अध्याय ५.

कुछ पौराणिक विषयों का स्पष्टीकरण—

प्राचीन काल में दानव लोग देवताओं के यज्ञ तथा तपस्या में बाधा डालते थे। उनसे बचने के लिये आपस के भेद-भाव को छोड़ कर वे भगवान कृष्ण के पास गये और उनके कहने के मुताबिक उन्होंने सागर का मंथन किया जिसमें से जो रत्न निकले, उनके नाम इस प्रकार हैं।

श्री, रम्भा, विष, वारुणि, अमृत, शंख, ऐरावत (हाथी), धनवन्तरी, काम धेनु, कल्प वृक्ष, चन्द्रमा, सूर्य का घोड़ा, मणि।

(२) योग का साधन प्रत्येक प्राणी नहीं कर सकता और जो करना चाहता है उसके लिये कम बध अष्टांग योग निम्न लिखित प्रकार करना आवश्यक है जिससे वह इस योग मे सफल हो सके:-

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

(३) भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि जब २ धर्म की हानी होती है और पापों का उत्कर्ष होता है तब २ पापों का नाश करने के लिये मैं (कृष्ण) युग २ में अवतार धारण करता हूँ। उन्होंने निम्न प्रकार अवतार धारण किये।

मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।

(४) प्राचीन काल में पुराणों के मतानुसार संस्कारों का अधिक ध्यान रखा जाता था परन्तु समय के परिवर्तन से इनका लोप होता जा रहा है। पुराणों में प्रत्येक प्राणी के लिये सोलह संस्कार रक्खे गये है। वे इस प्रकार हैं:-

गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न-प्राशन, मुण्डन, कर्ण-वेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास, अन्त्येष्ठि।

(५) किसी वर्णन को सुनकर या पढ़कर अथवा नाटकादि का अभिनय देखकर हृदय में जो एक स्थायी और अपूर्व भाव पैदा होता है उसे रस कहते हैं। रस नौ प्रकार के होते हैं:-

शृङ्गार, वीर, करुणा, अद्भुत, रौद्र, भयानक, वीभत्स, हास्य और शान्त।

(६) हिन्दु धर्म के अनुसार अठारह पुराण बताये जाते हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं:—

मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कन्द, अग्नि, विष्णु, नारद, भागवत, गरुड़, पद्म, वाराह, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त्त, मारकण्डेय, वामन, ब्रह्म, भविष्य॥

(७) पुराणों तथा वेदों के मतानुसार चौदह-विद्या बतलाई जाती हैं। जो इन सब विद्याओं का अध्यन कर लेता था वह पूर्ण विद्वान गिना जाता था। इन विद्याओं के नाम इस प्रकार हैं:-

ब्रह्मज्ञान, रसायन, स्वरसाधन, वेद-पाठ, ज्योतिष, व्याकरण शास्त्र विद्या, जलतरण, वैद्यक, काव्य कला, कोक, अश्वारोहण समाधान करण, चातुर्य।

गूढार्थ-शब्द

(८) वेदों के काण्डः—ज्ञान, कर्म और उपासना
अग्नि के प्रकारः- बड़वाग्नि, दावाग्नि और जठराग्नि
शरीर की अवस्थाः—बालपन, यौवन, वृद्धा अवस्था।
शरीर के गुण,—सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण।
ऋणः—देव ऋण, ऋषि-ऋण, पितृ-ऋण
कर्म के प्रकार,— सञ्चित, प्रारब्ध, क्रियमान।
देवः—ब्रह्मा, विष्णु, महेश,
लोकः—आकाश, पाताल, मृत्यु
नित्य पदार्थ तीन प्रकार के होते हैं:—जीव, ब्रह्म, प्रकृति
शरीर के तीन रुप होते हैं—सूक्ष्म, स्थूल और कारण रुप
काल तीन प्रकार के होते हैं:—वर्तमान, भूत, भविष्यत्
क्रिया तीन प्रकार की होती हैं:—शारिरिक, मानसिक, सामाजिक
धर्म के अंग तीन हैं:—विद्या, दान, यज्ञ,
दुख तीन प्रकार के होते हैं—आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक।
वायु तीन प्रकार की होती हैं:—शीतल, मंद, सुगन्ध
कारण तीन प्रकार के होते हैं:—उपादान, निमित, साधारण

चार वेदः—ऋग, यजु, साम, अथर्व
" मुक्ति के प्रकार— सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य, सारिष्ट।
" उपवेद— आयुर्वेद धनुर्वेद, गन्धर्वेद, अर्थवेद।
" ब्राह्मण— शतपथ, गोपथ, एतरेय, साम।
" वर्ण— ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
" आश्रम— ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास।
" युग— सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग।
" पदार्थ— धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।
" अवस्था— जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति तुर्य।
" प्रकार की रचना— अण्डज, स्वेदज, उद्भिज, जरायुज।
" " के मत— शैव, वेदान्त, वैष्णव, शाक्त।
" " " भक्त— जिज्ञासु, अर्थार्थी, शान्त-चित, ज्ञानी
" " " सेना के अङ्ग— हाथी, घोड़े, रथ, पैदल।
" " " निति के उपाय— साम, दाम, दंड, भेद।
" " " स्त्रियें— पद्मनी, चित्रिणी, हस्तिनी, शंखिनी।

पंच भूत— आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी।
पांच ज्ञानेन्द्रियें— आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा।
" कर्मेन्द्रियें— हाथ, पांव, मुख, मल और मुत्र के स्थान।
" यम— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय-निग्रह।
" नियम— शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणीधान।
" यज्ञ— ब्रह्म, देव, भूत, पितृ अथिति।
" कोष— अन्न-मय, मनोमय, प्राण-मय, आनन्द-मय, विज्ञान-मय।
" कन्या— अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती, मन्दोदरी।
" कामदेव के शर— मोहिन, मस्त, तपन, शुष्क, शिथिल।

,, शब्द— ताल, झांझ, तन्त्र, फूंक, ठोक।

,, विद्यार्थी के लक्षण— काक-चेष्टा, बक-ध्यान, श्वान-निद्रा, अल्पा-हार, स्त्री-त्याग।

,, शत्रु मनुष्य के— काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद।

,, पाण्डव— युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव।

,, अमृत— दूध, दही, घी, शहद, गगाजल।

,, गव्य (पंच गव्य)— दूध, दही, घी, गोबर, गो-मूत्र।

,, पिता— जनक, उपनेता, ससुर, अन्न-दाता, भय-त्राता।

,, माता— जननी, आचार्यपत्नि, सास, राज-पत्नि, जन्म-भूमि।

,, प्राण— प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान।

,, तरु— मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्प-वृक्ष, हरि-चन्दन।

छः वेद के अंग (वेदाङ्ग)— शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त।

,, उपांग (दर्शन या शास्त्र)— सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त।

रस छ: प्रकार के होते हैं— कड़ुआ, कसैला, खट्टा, खारा, मीठा, चरपरा।

ऋतुएं छः प्रकार की होती हैं— वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।

पदार्थ छः प्रकार के होते हैं— द्रव्य, गुण, कर्म, समवाय सामान्य, विशेष।

घोर दुःख छः प्रकार के होते हैं— गर्भ-दुःख, जन्म-दुख, रोग-दुःख, जरा-दुःख, क्षुधा-दुःख, मरण-दुःख।

राग छः प्रकार की होती हैं— भैरव, मालकोस, हिण्डोल, दीपक, मेघ, श्री।

शरीर के विकार छः प्रकार के होते हैं— उत्पत्ति, वृद्धि, स्थिति, परिवर्तन, न्यूनता, नाश।

जीवन के छः गुण होते हैं— इच्छा, द्वेष, ज्ञान, प्रयत्न, सुख, दुःख
राजा व मन्त्री के गुण छः प्रकार के होते हैं— संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय।

खेती को हानि छः प्रकार से हो सकती है— अतिवृष्टि, अनावृष्टि, शलभ (टिड्डी पड़ने से), मूसक (खेत में चूहे ज्यादा होने से), राजाक्रमण (दूसरे राजा की चढ़ाइ करने से), खगवृन्द (पक्षियों की अधिकता से)

पृथ्वी पर स्थल के सात मुख्य बड़े भाग माने गये हैं—जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, पुष्कर, शाक।

महासागर सात प्रकार के माने गये हैं—क्षीर, क्षार, दधि, मधु, घृत, सुरा, इक्षु-रस।

हफ्ते में सात वार होते हैं— रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार।

वेदों के अनुसार महर्षि सात हैं— विश्वामित्र, गौतम, यमदग्नि, वशिष्ठ, अत्रि, भरद्वाज, कश्यप।

„ „ „ आकाश सात प्रकार के हैं— भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्य-लोक।

पृथ्वी के नीचे सात पाताल माने गये हैं— अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल पाताल।

विद्या के रिपु सात हैं— निद्रा, आलस, स्वाद, सुख, काम, चिन्ता, केलि।

गायन के स्वर सात हैं— षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद।

(संगीत में— सा, रे, ग, म, प, ध, नि।)

भारत के प्रसिद्ध सात पुरी हैं— अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, (माया), कांची, अवंतिका (उज्जैन नगरी), द्वारिका।

वेदों के मतानुसार माने गये चिरजीव सात पुरुष हैं—
अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभिषण, कृपाचार्य, परशुराम।

मनुष्य के लिये सुख सात प्रकार के माने गये हैं — खान, पान, परिधान, ज्ञान, गान, शोभा, संयोग।

राजा के मुख्य अंग सात माने गये हैं—
रानी, युवराज, मन्त्री, मित्र, देश, सेना, कोष, (खजाना)।

मुर्ख स्त्रियें आठ प्रकार की होती हैं—
साहस अनृत, चपलता, माया, भय, अविवेक, अशौच, निर्दयता।

आठ दिशाओं के दिग्गज (दिशाओं के बड़े हाथी) इस प्रकार हैं—
पुण्डरीक, वामन, कुमुद, एरावत, सुप्रतीक, सार्वभौम, अञ्जन, पुष्पदन्त।

आठ प्रकार के नाग इस प्रकार के हैं—
अनन्त, तक्षक, कार्कोटिक, महापद्म, वासुकि, शंख, कुलिक, पद्म।

अष्ट छाप के कवि इस प्रकार हैं—
सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविन्दास, नन्ददास।

अंग के आठ प्रणाम (अष्टाङ्ग-प्रणाम) हैं— उर, शिर, जानु, भुजा, हस्त चरण, मन, वचन।

धातु आठ प्रकार की हैं— लोहा, सोना, ताँबा, चाँदी, जस्ता, पारा, शीशा, रांगा।

श्री कृष्ण की आठ पटरानियाँ थीं— लक्ष्मणा, रुक्मिणी, सत्यभामा, भद्रा, सत्या, जामवन्ती, कालिन्दी मित्र वृन्दा।

विवाह के भेद आठ हैं— ब्राह्म, दैव, आर्ष प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व राक्षस, पैशाच। आज कल ब्राह्म विवाह प्रचालित है।

आठ देवताओं के समूह को वसु कहते हैं वे इस प्रकार हैं— सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश।

कसाई आठ प्रकार की होती है— अनुमन्ता, विशसिता, नियन्ता, क्रयी, विक्रयी, संस्कर्त्ता, उपहर्त्ता, खादक।

कर्म आठ प्रकार के हैं— खाना, पीना, सोना, जागना, सन्तानोत्पत्ति, शत्रु से रक्षण, जन्म, मरण।

दिग्पाल आठ हैं—इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान,

नव-द्रव्य—पञ्च-भूत+काल, दिशा, आत्मा, मन।

,, खनिज-रत्न—माणिक, मरकत, कुलिश, पन्ना नीलम, पुखराज, गुमेद, लहसुनियाँ, मूँगा।

,, विक्रम की सभा के रत्न—धन्वन्तरि, क्षपनक, अमरसिंह; बैताल, शंकु, वाराहमिहर, घटखर्पर, कालीदास।

,, निधि—कच्छप, कुन्द मुकुन्द नील, शंख, खर्व, पद्म; महापद्म, मकर।

,, खण्ड—भरत, इलावर्त्त, किंपुरुष, भद्राश्व, केतुमाल, हिरण्य, हरि, कुरु, रम्यक।

,, भक्ति—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, अर्चन, वन्दन, दास्य, आत्म-निवेदन, पाद-सेवन, बखान।

" दुर्गा—शैल-पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डक, स्कन्द-माता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदा।

" ग्रह—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु।

नव-रत्न (हिन्दी के) चन्द्र, सूर, तुलसी, केशव, बिहारी, भूषण, मतिराम, देव, हरिश्चन्द्र।

" गुण—(ब्राह्मणों के) धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, क्रोध-त्याग।

दस धर्म के लक्षण—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध।

" दिक्पाल—गरुड़ध्वज, गोविन्द, अग्नि, पवन, ईश, राक्षस, यम, सुरपति, धनद, वारुणि।

" धर्म न पालने वाले—नशेबाज़, लोभी, उनमत्त, जल्दबाज, क्रोधी कामी, मानी, डरा हुआ, अधीन, दुःखी।

" इन्द्रियाँ—आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा, हाथ, पाँव, मुँह, मल और मूत्र के स्थान।

" दिशा—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, वायव्य, ईशान, नैऋत्य, आकाश, पाताल।

" उपनिषद—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय तैत्तिरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक।

बारहराशि—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन।

" आभूषण—किंकिणी, नूपुर, हार, नथ, मुँदरी, चूड़ी, कङ्कन शीश-फूल, चीर, कण्ठा, बाजूबन्द, टीका।

" भुवन—सात आकाश + सात पाताल, (ऊपर कह आये हैं)

पन्द्रह-तिथि—प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी त्रयोदशी, अमावास्या या पूर्णिमा।

" शृंगार—अङ्ग-शुचि, मंजन, निर्मल-वस्त्र, महावर, बाल-सँवारना माँग में सिंदूर भरना, मस्तक पर खौर, गाल और चिबुक पर तिल, केशर मलना, मेंहदी लगाना, पुस्पभूषण, स्वर्ण-भूषण, मुख-बास, दाँतों में मिस्सी, ताम्बूल खाना, नेत्रों में काजल लगाना ।

" पूजा—स्वागत, चरण-वन्दना, अर्घ्य आसन, गृह्-प्रवेश, आचमन, मधुपर्क, मज्जन, चन्दन, वस्त्राभूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, व्यंजन ।

('हिन्दी कल्प लता' से)

अध्याय

१ दो या दो से अधिक पदों के मेल को समास कहते हैं । इनके अन्तिम पद में विभक्ति रहती है । जैसे:—

समस्त (पूरा) पद	विग्रह
राजपुत्र	राजा का पुत्र
शरणागत	शरण को आगत
चन्द्रमुख	चन्द्रमा के समान है मुख जिसका

२ समास छः प्रकार के होते हैं:— १ द्वन्द्व २ द्विगु ३ कर्मधारय ४ तत्पुरुष ५ अव्ययीभाव ६ बहुव्रीहि ।

१ द्वन्द्व समास:— जिस समास में और शब्द का लोप होता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं । जैसे:—

माता पिता	माता और पिता
कंद-मूल-फल	कंद और मूल और फल ।
मन-कर्म-वचन	मन और कर्म और वचन
राजा-रानी	राजा और रानी

भाई-बहिन	भाई और बहिन

गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र, पति-पत्नि, पाप-पुण्य, अन्न-जल, रात-दिन लेन-देन।

कर्मधारयः— जिस समास में पहिला पद विशेषण होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं जैसेः—

परमेश्वर	परम है जो ईश्वर
परमसुन्दर	" " " सुन्दर
दुष्टमति	दुष्ट है जो मति
अल्पबुद्धि	अल्प है जो बुद्धि
साधुकामना	साध्वी है जो कामना
कम्पितलता	कम्पित है जो लता

चन्द्रमुख, कुमति, कमल नेत्र, फुलौरी, नीलगाय, खञ्जन, महाराजा, मृदुबानी।

तत्पुरुष समासः— जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं जैसे.—

शरणागत	शरण को आगत
शोकाकुल	शोक से व्याकुल
मोहांध	मोह से अंध
शापमुक्त	शाप से मुक्त
आद्यान्त	आदि से अन्त
गंगाजल	गंगा का जल
गुरोपदेश	गुरु का उपदेश
रथारूढ़	रथ में आरूढ़
सेवानिरत	सेवा में निरत

चन्द्र प्रकाश, राजमाता, गंगातट, जलधारा, राजपुरुष, दईमारा, विद्यालय, प्रेमवश, समरसुभट, भूमिशयन, अमरस, दहेड़ी, बनमानुष राजपूत, रामसायकनिकर

निबन्ध रचना का अभ्यास

विषय की अभिज्ञता

विविध-विषयों की निबन्ध-रचना के लिये विविध-विषयों की अभिज्ञता आवश्यक है। विषय की शुद्ध जानकारी बिना, रचना का कैसा ही अभ्यासी हो, लिख नहीं लिख सकता। यह छोटी पुस्तक संसार-भर की बातें न बता-कर, रचना का आदर्श और विषय-अभिज्ञता का मार्ग दिखा सकती है। विषय-अभिज्ञता के लिये पुस्तकाध्ययन, सत्संग, देशाटन, व्यवहार-कुशलता और अनुभव-शक्ति, निरीक्षणशक्ति, विचारशक्ति, कल्पनाशक्ति, विवेचनशक्ति का ठीक २ उपयोग आदि अनेक व्यापार हैं। देखो-भालो, सुनो-समझो, पढ़ो-लिखो, सोचो-विचारो; अनेक विषयों की अभिज्ञता प्राप्त होती जायगी। जाने हुए विषय को या विषय जानकर निबन्ध-रचना की रीति के अनुसार रचना का अभ्यास करो।

प्रबंध भेद

यों तो विषय-भेद से प्रत्येक निबंध एक दूसरे से पृथक् ही होता है; परन्तु सामान्यतः वर्णनात्मक, कथात्मक, व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक, चार प्रकार के मोटे भेद हैं।

वर्णनात्मक

किसी वस्तु का सामान्यरूप में वर्णन करना—जिसे कि आँखों से देखा है, कानों से सुना है अथवा और किसी रीति से जाना है, जैसे:—'ताज महल' 'नीम का पेड़', 'लोहा' 'आगरे का किला' झाँसी का रेलवे स्टेशन', 'जनकपुर की शोभा', 'सीता जी की सुन्दरता' प्रयाग की प्रदर्शिनी', 'यमुना की छटा'।

किसी ऐतिहासिक-घटना को तर्क पर तोल कर उसके सत्यासत्य का निर्णय इसी भेद में आ जाता है। 'मनुष्य की खुराक क्या है' ? 'रामायण से क्या लाभ है' ? विवाह कब होना चाहिये ?' 'मरना ही जीना है' ! 'सृष्टि कैसे उत्पन्न होती है' ? 'गांव में रहना अच्छा है या शहर में । दो विरुद्ध विचारों तथा मिलते जुलते विचारों की तुलना भी इसी विभाग में होती हैं; जैसे—स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार या स्वतन्त्रता और परतन्त्रता आदि । यदि ये निबंध तर्क पर न तोले जाँय केवल व्याख्या ही रहे, तो वह विख्यात्मक ही कहलाएँगे।

यह पृथक् २ भेद बतलाए गए हैं, किन्तु आप बड़े लेखकों के लेखों में दो, तीन या सम्पूर्ण भेदों का मिश्रण देखेंगे।

प्रबन्ध का ढाँचा

किसी प्रकार का प्रबन्ध लिखना हो, तो लिखने से पहिले उसे उचित भागों में बाँट लेना चाहिये । इस प्रकार विषय को बाँटने से बड़े २ लेखकों को भी बड़ी सुविधा हो जाती है, पर नौसिखिया लेखक तो इसके बिना ठीक लिख ही नहीं सकते । ऐसा करने से लेखक सीमा के भीतर रहेगा और विषय के अङ्गप्रत्यङ्ग पर प्रकाश डाल सकेगा। ठीक समय के भीतर उचित पंक्ति और पृष्ठों में निबन्ध को पूरा कर देगा और क्रम भी ठीक बैठ जायगा। लिखने से प्रथम लेख के विषय पर गहरी दृष्टि डाल कर उसके सम्बन्ध में जितनी बातें ध्यान में आवें, एक कागज़ पर नोट करलो और ठीक २ सिलसिले से जमा कर क्रम बाँधलो। किसी वस्तु के सम्बन्ध में मोटे मोटे तीन शीर्षक हो सकते हैं, दिखावट, गुण और उपयोग । जीव पर लिखना हो तो किस प्रकार का जीव है, उसका आकार और गठन, स्वभाव और भोजन, कहाँ पाया जाता है और उसका उपयोग। धीरज पर लिखना है तो, धीरज क्या है ? किसमें होता है ? धीरज का महत्व; यह गुण अभ्यास से चढ़ सकता है । किसी के चरित्र के विभाग उसकी चरित्र की विशेषता के अनुसार पृथक् पृथक् हो सकते हैं, पर

मोटी रीति से, जन्मकाल और माता पिता, बाल्यावस्था (पालन, पोषण और शिक्षा), जीवन की मुख्य २ घटनाएँ और मृत्यु।

विषय का आरम्भ

जब तुम्हारे प्रबन्ध की सूची बन जाय तो देखो कि कितने समय और कितने स्थान में प्रबन्ध लिखना है। मान लिया एक घण्टे में लेख समाप्त करना है। उसमें से १५ मिनट तो सोचने और ढाँचे को लिये गये। रहे ४५ मिनट, उसको तुम्हारे प्रबन्ध के ५ उपशीर्षक है-उन पर बाँटा तो प्रत्येक शीर्षक को ९ मिनट मिले। अतः सामान्यतः एक शीर्षक ९ मिनट में समाप्त होना चाहिये। उपशीर्षक के छोटे बड़े होने के अनुसार समय भी कम बढ़ हो सकता है। रहा स्थान की बात, मान लिया कि ५० पंक्ति में लेख पूरा करना है, एक शीर्षक में सामान्यतः १० पंक्ति होनी चाहिये। उपशीर्षक के छोटे बड़े होने के अनुसार एक उपशीर्षक न्यूनाधिक पंक्तियों में लिखा जा सकता है। इन सब बातों पर विचार करके लिखना आरम्भ करो। आरम्भ करने का कोई मुख्य नियम नहीं है। विभिन्न-लेखक एकही लेख को विभिन्न प्रकार से आरम्भ करते हैं। कोई विषय की भूमिका बाँधकर, कोई परिभाषा कह कर, कोई किसी कहावत या कवियाक्य को कह कर, कोई विषय का सार कह कर और कोई घटना का मध्य पकड़ कर लेख आरम्भ कर देते हैं।

विस्तार

आरम्भ करने के पीछे सूची के प्रत्येक उपशीर्षक को लक्ष करके वाक्य-समूह या अनुच्छेद (पैराग्राफ) की रचना होनी चाहिये। एक वाक्य-समूह के वाक्यों में पारस्परिक और आनुपूर्व सम्बन्ध होना चाहिये। एक वाक्य-समूह में वर्णित भावों के लघुत्त्व गुरुत्त्व अनुसार अनुच्छेद छोटा और बड़ा होता है। भाव गुरुत्त्व के कारण कभी २ एक भाव, एक से अधिक अनुच्छेदों में लिखा जाता है। इसी प्रकार सूची

के हर एक उपशीर्षक पर अनुच्छेद-रचना करो और जिस प्रकार एक अनुच्छेद के सब वाक्यों में पारस्परिक-आनुपूर्व्य-सम्बन्ध होता है, उसी भाँति एक विषय के सब अनुच्छेदों में पारस्परिक-आनुपूर्व्य सम्बन्ध होता है। किसी भाव की पुष्टि में कोई कहावत, किसी कवि का वचन अथवा कोई उदाहरण लिखना उचित हो, लिख देना चाहिये। परन्तु उदाहरण संक्षिप्त हो और विषय से पूरा संबंध रखता हो।

समाप्ति

समाप्ति होने पर उसे यों ही एक दम मत छोड़ दो। संक्षेप में या तो अपने निबंध का सार कह दो; या कोई शिक्षा मिलती हो, वह दिखा दो; या कोई उससे अप्रत्यक्ष-परिणाम झलकता हो, स्पष्ट कर दो और एक बार फिर पढ़ जाओ। जहाँ २ पर विरामादि चिह्न छूट गये हों अथवा कोई व्याकरण और मुहाविरे की भूल हो गई हो, ठीक करलो।

खेती।

खेती सब धन्धों में उत्तम है। इसी के द्वारा हम लोगों को खाने को अन्न, तरकारी आदि अनेक चीजें मिलती हैं। यदि खेती न होती, तो हम लोगों को खाने को अन्न कहां से आता। खेती हिन्दुस्तान में प्राचीन काल से होती आई है।

अनाज पैदा करने के लिये खेत में खाद डालकर पहिले खूब हल जोतते हैं। खाद के डालने से जमीन ताकतवर हो जाती है और इस से अच्छी पैदावार होती है। हल चलाने वाले को हलवाहा या हलहारा कहते हैं। वह हल को जिधर चाहता है ले जाता है। एक हाथ से हल की मुठिया को पकड़ता है और दूसरे हाथ से बैलों को हांकता है। हल लकड़ी का बनता है और दो बैलों से चलाया जाता है। हल का वह हिस्सा जो

बैलों के कन्धों पर रक्खा जाता है उसे जूआ कहते हैं और जो हिस्सा हलवाहे के हाथ में रहता है उसे मूंठ, और मूंठ के नीचे जो भारी लकड़ी में एक तेज लोहा लगा रहता है उसे फारा कहते हैं। इस देश में हल बैलों से चलाया जाता है, पर इंग्लिस्तान में घोड़ों से चलाते हैं।

जब जमीन हल से खूब जोत लेते हैं, तो उसे पटेला से बराबर करते हैं और फिर हल चलाकर अनाज के बीज बोते हैं और खेत की जमीन को बराबर कर देते हैं। जब पौधे उगकर बड़े होते हैं, तब उन्हें पानी से सींचते हैं और जब अनाज पक जाता है, तब उसे काटकर खलियान में रखते हैं। फिर बैलों से खुदवाकर भूसा अलग करके, अनाज निकाल लेते हैं।

जब खेत की जमीन कमजोर हो जाती है, तब उस में खाद डालने की जरूरत पड़ती है। खाद कई तरह से बनाते हैं, परन्तु हिन्दुस्तान में गोबर और घास से खेत मजबूत हो जाता है। खाद डालने से पहिली बार अनाज खूब पैदा होता है, क्योंकि खाद से जमीन ताकत वर हो जाती है, परन्तु फिर खेत को कई बार जोतने और बोने से जमीन कमजोर हो जाती है। इस देश में बहुत कर, वे पढ़े किसान खेती करते हैं, इस कारण अधिक लाभ नहीं होता। अब हमारे परम दयालु श्रीमन्त सरकार का ध्यान इस ओर अधिक हुआ है और खेतों की उन्नति के लिये लाखों रुपये हर साल खर्च कर रहे हैं। यदि किसान लोग शिक्षा पाकर इस काम को करें तो बहुत लाभ हो सकता है।

ऊख (गन्ना)

ऊख गर्म देशों में उत्पन्न होती है, इसके पेड़ को गन्ना कहते हैं, जो कहीं दो तीन गज और कहीं इससे भी अधिक ऊंचा होता है।

मुटाई भी इसकी एक गिरह तक होती है। इसके ऊपर लम्बे २ हरे पत्ते दुधारे नोकदार होते हैं। गन्ने के ऊपरी भाग को अकोला कहते हैं। गन्ना आप ही वृक्ष है और अपने आप ही फल है और वृक्षों की भांति इसमें फल नहीं लगता, न फल में उसका बीज होता है।

वह इस प्रकार बोया जाता है कि, पहिले भूमि को खूब जोतते हैं। किसान कहा करते हैं कि, ऊख के लिये भूमि को जब जुती जानिये, कि जो उस पर पानी भरा घड़ा गिरे तो वह टूटै नहीं, यदि उसकी मिट्टी का पिन्डा बनाकर रक्खें, तो वह जेठ मास में भी सूखै नहीं। जब भूमि जुतकर, तैयार हो जाती है, तो बोने से कुछ दिन पहिले गड्ढा खोदकर, गन्नों की फांद की फांद बिछा देते हैं और उस पर मिट्टी डाल देते हैं। थोड़े दिनों में गांठों पर वहां से शाखायें निकल आती हैं, जहां उनकी आंख होती है। फिर उन गन्नों को निकाल कर एक एक बिलांद के टुकड़े करके फागुन चैत्र मास में लेटवां दबा देते हैं। वे टहनियाँ बढ़ती हैं जब उनके पत्तों का हरा रंग बदलता है, तो गन्ने पक जाते हैं तब उनको उखेड़ लेते हैं।

फिर गन्नों के टुकड़े करके कोल्हू या बेलन में रखकर, रस निकालते हैं। कोई गन्ने ऐसे रसीले होते हैं कि, मन भर में तीस सेर तक रस निकलता है। वह रस गदला पानी सा होता है। उसमें किसी तरह से चूना डाल देते हैं, कि वह उफन न जावे।

रस को छान २ कर लोहे या तांबे के कड़ाहों में डालकर, पकाते हैं। ऊपर से मैल कुचैल उतारते जाते हैं। जब रस पक कर गाढ़ा हो जाता है और उस में तार उठने लगता है, तो आंच को धीमी कर देते हैं, फिर चाक पर उसको उंडेल लेते हैं और लोहे या लकड़ी के चंडवे से चांडते हैं अर्थात् चारों ओर से खींच कर इकट्ठा करते हैं।

: यिस जाने के डर से उन में लोहे के नाल बंधवा देते हैं। अरब
से अच्छे घोड़े कहीं नहीं होते और बड़े ढीठ, साहसी और आज्ञाकारी
ते हैं, क्योंकि जब स्वामी सोता है, तब यह पहिरा देता है। यदि
ोई मनुष्य या जीव पास आवे, तो शीघ्र स्वामी को जगा देगा। अरब
: लोग भी अपने घोड़ों को पुत्र की भांति पालते और मानते हैं और
भी घोड़ों को नहीं बेचते, चाहे भूखों क्यों न मरजायं! घोड़ा मनुष्य
े बहुत काम में आता है, सवार होने, गाड़ी या बग्घी जोतने तथा
ोझ लादने में इसके समान कोई चौपाया नहीं है।

एक बार एक अरबी को उसके दुश्मनों ने उसके घोड़े समेत पकड़
लिया और उसके हाथ पांव बांधकर, उसे जमीन पर डाल दिया। उस
अरबी को दुःख और चिन्ता के कारण रात में नींद न आई। बुरी तरह
कराह रहा था। उसकी आवाज सुन, उस का घोड़ हिनहिनाया। अरबी
ने सोचा, कि किसी तरह अपने घोड़े को छुड़ाना चाहिये। यह विचार,
सरकता २ घोड़े के पास पहुँचा और घोड़े के रस्से को दांतों से खोलकर
उससे कहा, कि घर को भागजा, परन्तु वह घोड़ा अपने मालिक को
छोड़कर वहां से न हटा और यह सोचने लगा, किसी तरह से अपने
स्वामी को वहां से लेचलूं। अरबी की कमर पर एक पेटी बंधी थी,
उसी को दांतों से पकड़ कर, घोड़े ने उठा लिया और अपने डेरे की
ओर ले भागा और भागता २ अपने मालिक को डेरे तक ले गया और
वहां जाकर रख दिया। घोड़ा बहुत थक जाने के कारण डेरे तक
पहुंचकर गिरपड़ा और वहीं पर मर गया। घोड़े ने अपनी जान देदी,
परन्तु अपने मालिक की जान बचाली।

विद्यार्थियों देखो! जब जानवर तक अपने पालने वाले का इतना
ख़याल रखते हैं, फिर तुम तो मनुष्य हो तुमको चाहिये, कि अपने
माता पिता की शिक्षाओं को खूब याद रक्खो और उन की वृद्ध अवस्था
होने पर उन को सुख दो।

दूध।

दूध बहुत बलदायक वस्तु है। केवल पानी पीने से मनुष्य नहीं जी सकता, परन्तु केवल दूध पीकर मनुष्य जी सकता है, जब बच्चा पैदा होता है, तब वह केवल दूध पी सकता है। दूध के सिवाय और कोई कड़ी चीज़ नहीं खा सकता। मनुष्यों में कोई ऐसा नहीं, जिसने बचपन में माता, दाई या गाय, बकरी आदि का दूध न पीया हो।

दूध केवल पीने ही के काम में नहीं आता, किन्तु उस की और भी बहुत सी चीजें बनती हैं। दूध में कुछ खट्टा मिलाकर रख देने से धीरे धीरे वह जम कर दही बन जाता है, दही को रई से मथने से वह पतला पड़ जाता है और उसके ऊपर एक चीज तैरने लगती है, जिसको मक्खन कहते हैं। मक्खन निकालने के पीछे जो चीज रह जाती है, उसे छाछ या मठा कहते हैं। मक्खन को आग पर तपाने से घी बन जाता है। इसी तरह दूध को धीरे धीरे आग के द्वारा गर्म करने से उस पर जो नरम नरम चीज जम जाती है, उसे मलाई कहते हैं। दूध को लगातार अधिक औटाने से वह गाढ़ा हो जाता है, तब उसकी रबड़ी बन जाती है। इसी रबड़ी को कुछ और गाढ़ा करने से खोया बन जाता है।

दूध और इस की प्रत्येक वस्तु बहुत उपकारी है। दूध पीने के काम में आता है। दूध में चावल या साबूदाना या मखाने डाल कर, उस की खीर बनाते हैं। दूध से बच्चे पलते हैं और बहुत से रोगी भी बचते हैं। दही यों भी खाते हैं और उसका श्रीखंड और कई प्रकार के रायते आदि अनेक चीजें बनती हैं। छाछ भी पीने के काम में आती है। मक्खन को रोटी के साथ खाते हैं, और वह कई औषधियों में भी पड़ता है। घी से रोटी चुपड़ कर खाते हैं और पूड़ी कचौड़ी आदि

अनेक चीजें उस में तली जाती हैं। मोहनभोग घी ही से बनता है। रबड़ी, और मलाई भी खाने के काम में आती हैं। खोये के लड्डू, पेड़े आदि अनेक तरह की मिठाइयां बनती हैं। दूध से बहुत उपकारी चीजें बनती हैं, जैसे रसगुल्ले, राधा मोहन, खीर मोहन, चम चम, राजा भोग, रानी भोग इत्यादि।

यदि संसार में दूध जैसा पौष्टिक पदार्थ न होता तो सायद संसारमें मनुष्य का जीना ही दुर्लभ हो जाता। जन्मा हुआ बच्चा बगैर माता के दूध के जिन्दा रही नहीं सकता। दूध कई प्रकार का होता है-जैसे-माता का, गाय का, भैंस का, ऊँटनी का, भेड़ का, सिंहनी का, परन्तु बच्चे के लिये उसकी माता का दूध ही सबसे पौष्टिक माना गया है।

चाय।

चाय पहिले पहिल चीन में बोई गई थी। वहीं से इसका प्रचार यूरुप में हुआ। चीन में घर २ में चाय बोई जाती है और हर एक आदमी चाय पीता है। हमारे देश में भी आसाम, नीलगिरी, काँगड़ा, और कुमाऊँ में चाय की खेती होती है और वहाँ से हर साल लाखों रुपये की चाय और देशों को जाती है। कुमाऊँ में सब से बड़ा चाय का कारखाना कौसानी में है। चाय हरी और काली दो तरह की होती है।

चाय की खेती की यह रीति है कि पहिले इसकी बीड़ लगाई जाती है; फिर पहाड़ के किनारे बड़े २ खेतों में पौधों को लगा देते हैं। इन्हीं खेतों को चाय-बगीचा कहते हैं। जब पेड़ तीन बरस का हो जाता है तब तब उसकी पत्तियाँ चुनी जाती हैं। सैकड़ों मनुष्य इस काम में लगाये जाते हैं। पत्तियाँ साल में तीन बार चुनी जाती हैं। हरी पत्तियों को कड़ाह में डाल कर भूनते हैं और एक आँच देकर बड़े

२ तख्तों पर फैला देते हैं। इसके पीछे पानी निचोड़ कर हवा दिखा उन्हें फिर कड़ाह में डाल देते हैं। सूख जाने पर उन्हें बड़े २ संदूकों में भर कर रख देते हैं। जिस मकान में यह संदूक रक्खे जाते हैं उस में अंगीठियाँ जला कर रख दी जाती हैं कि चाय में सील न पहुँचे। जब चाय को बाहर भेजना होता है तब उसे चलनी में छान कर उसके पाकेट बना लेते हैं और इनको संदूक में बन्द करके भेज देते हैं। सब से महीन पत्ती की चाय बहुत बढ़िया गिनी जाती है और मोटी पत्ती वाली घटिया समझी जाती है। चाय के बनाने की यह रीति है कि पहिले ताजा पानी गरम करें। जब पानी खौलने लगे तब उसे उतार कर उसमें चाय डाल दें और दस मिनट तक उसमें भीगने दें और भाफ न निकलने पावे। इसके पीछे छान कर उसमें दूध और मीठा डाल कर पिये। चाय गरम पी जाती है; चाय पीने से पेट साफ रहता है, नींद कम आती है और बदन में फुर्ती रहती है। चाय का चलन इस देश में नित नित बढ़ता जाता है। अंग्रेजी पढ़े हुये तो इसका सेवन करते ही हैं, पर पहाड़ में मजदूर तक इसको पीते हैं।

स्त्रियों का आदर।

हमारे यहाँ की स्त्रियों की दशा देखकर परदेशी हँसते हैं और विचार किया जाय तो किसी विषय में उनका हँसना ठीक भी है। ईश्वर ने स्त्रियों को केवल इसी लिये नहीं बनाया है कि वह मूर्ख बनी रहें, अपने घर का हिसाब किताब तक न लिख सकें, अपने बाप भाई और पति को परदेश में चिट्ठी न भेज सकें और दिन भर पीसने, कूटने, चौका बर्तन, रोटी पानी ही में लगी रहें। हम यह नहीं कहते कि घर के काम काज करने में कोई दोष है, पर यह हमने देखा है कि बड़े बड़े परिवारों में जहाँ दस पांच स्त्रियाँ होती हैं, कुछ तो गृहस्थी का काम काज करती हैं और कुछ सोने और लड़ने ही में दिन काटती हैं।

पुरुषों ने यह समझ रक्खा है कि स्त्री भी घर की एक टहलनी है। काम काज करे तो अच्छी और नहीं तो उसे रोटी कपड़ा देना भी भार है। गृहस्थी एक गाड़ी है जो दो पहियों पर चलती है—एक स्त्री और दूसरा पुरुष। समबुद्धि होने से गृहस्थी की गाड़ी बड़ी सुगमता से चलती है। लोग यह समझते हैं कि स्त्रियों को थोड़ा सा भी पढ़ा देंगे तो वह हमारी बराबरी करने लगेंगी; इसी से उन को दबाये रखते हैं। यह धर्मशास्त्र के विरुद्ध है। देखो मनुजी क्या कह गये हैं।

(१) बाप, भाई, पति जो अपना भला चाहें, उनको चाहिये कि स्त्रियों का आदर किया करें और गहने कपड़े से उनको सन्तुष्ट रक्खें।

(२) जिस घर में स्त्रियों का आदर होता है, उसमें देवताओं का वास होता है और जहाँ उनका निरादर होता है, वहाँ सब धर्म कर्म नष्ट हो जाते हैं।

(३) जिस कुल की स्त्रियाँ दुखी रहती हैं वह कुल शीघ्र ही मिट जाता है और जिस कुल में वे प्रसन्न रहती हैं, उसकी दिन दिन बढ़ती होती है।

(४) जिस कुल की स्त्रियाँ दुखी हो कर कोसती हैं, उसकी कुशल नहीं रहती।

(५) इसलिये जो पुरुष अपनी भलाई चाहे उसको उचित है कि नित भोजन वस्त्र और आभूषणों से स्त्रियों का सम्मान करे।

(६) जिस कुल में पति स्त्री से और स्त्री पति से प्रसन्न रहती है उसका सदा कल्याण होता है।

(७) स्त्रियों के प्रसन्न रहने से घर भर प्रसन्न रहता है और उनके अप्रसन्न रहने से उदासी छाई रहती है।

हाथी

हाथी सब से बड़ा और बहुत ही समझदार जानवर है। इतना बड़ा होने पर भी सहज में पाल लिया जाता है। पालतू हाथी बहुत सीधा होता है और लड़कों की तरह अपने महावत का कहना मानता है। हाथी की आंखें छोटी और कान बड़े होते हैं। वह गाना सुनने से बहुत प्रसन्न होता है और फूलों को बड़ी चाह से सूँघता है। वह सूँड़ से हाथों का काम लेता है, सूँड़ से महावत को प्यार करता है, सूँड़ से खाना उठाकर मुँह में रखता है, सूँड़ से पानी सुड़क कर मुँह में उड़ेल लेता है और सूँड़ ही से बड़े वृक्षों को जड़ से उखाड़ कर फेंक देता है। सूँड़ मुड़ सकती है, सिकुड़ सकती है, बढ़ सकती है और चारों ओर घूम सकती है। सूँड़ के सिरे पर एक अँगुली सी होती है उसी से छोटी से छोटी चीज़ उठा सकता है। उसी से हाथी सुई उठा सकता है, फूल चुन सकता है, गाँठ खोल सकता है और किवाड़ बन्द कर सकता है। सूँड़ के दोनों ओर दो बड़े बड़े दाँत निकले रहते हैं। यह खाने का काम नहीं देते इसी लिये कहावत भी है कि हाथी के दाँत देखने के और खाने के और। यह दाँत पाँच हाथ तक लंबे होते और तोल में पचीस सेर तक बैठते हैं। हाथी के दाँत बहुत महँगे बिकते हैं। अफ्रीका में जंगली हाथी इन्हीं दाँतों के लिये मारा जाता है। हाथी-दाँत की चीज़ें बहुत महँगी बिकती हैं।

हाथी सवारी के काम में आता है। पहिले इसे लड़ाई में भी लेजाते थे। तोपों के सबब से अब हाथी लड़ाई के काम का न रहा। हाथी एशिया, अफ्रीका और लंका और ब्रह्मा के जंगलों में बहुत पाये जाते हैं। जहाँ चारों ओर पानी की सुभीता होती है वहाँ हाथियों के झुण्ड के झुण्ड रहते हैं। हाथी धूप से बहुत घबड़ाता है, इस लिये घनी कुञ्जों में रहना पसन्द करता है। इसीसे हमारे देश में यह कहावत है कि हाथी कदली बन में रहता है। हाथी को नहाना बहुत पसन्द है।

हाथियों के पकड़ने की पहिले यह रीति थी कि जङ्गलों में बड़ा लम्बा चौड़ा बाड़ा बनाते थे और उसके भीतर गहरे गड्ढे खोद कर घास फूस से ढक देते थे। उस बाड़े में हाथियों को हल्ला गुल्ला करके खेद लाते थे। इसी लीये हाथी पकड़ने की जगह को खेदा कहने लगे। बाड़े में आने पर हाथी खड्ढों में गिर पड़ते थे, तब उनको धीरे धीरे चारा देकर सधाते थे। आज कल हाथी फंदे से पकड़े जाते हैं। इस काम के लिये पहिले पालतू हाथी सिखलाये जाते हैं और इन्ही हाथियों की सहायता से जिस हाथी को पकड़ना चाहते हैं उसे फँसा लेते हैं। स्याम के देश में कहीं कहीं सफेद रंग का हथी होता है। वहाँ उसकी पूजा होती है। हर एक झुण्ड में सब से बड़ा हाथी मुखिया होता है। उस को सब मानते हैं और विपत्ति में उसे सब घेर कर बचाते हैं। हथिनी अपने बच्चे को बहुत कम प्यार करती है। यह देखा गया है कि जो दो चार दिन भी बच्चा अलग रहे तो वह उसको भूल जाती है।

होली।

हिन्दुओं के चार प्रधान त्यौहार हैं। जैसे ब्रह्मणों के लिये रक्षा बंधन, क्षत्रियों के लिये दशहरा, वैश्यों के लिये दिवाली वैसे ही शूद्रों के लिये होली का त्यौहार है। यह हर वर्ष फागुन की पूर्णिमा को बड़े चाव से मनाया जाता है। यह कब से शुरु हुआ और इसका महत्त्व क्या है इस बात का ठीक २ पता अभी तक कोई भी न लगा सका। इसके विषय में भिन्न २ मत हैं।

एक लोगों का मत है कि यह त्यौहार परम पवित्र आत्मा प्रह्लाद, जो कि ईश्वर का बड़ा भक्त था उसकी यादगार को स्थाई करने के लिये मनाया जाता है। प्रहाद का पिता 'हिरण्यकश्यप' जो कि राक्षस था और हरी-भक्तों को दुख देता था अपने पुत्र प्रह्लाद को भी राम

मात्र कारण अविद्या है। जब तक इस विद्यारुपी दिपक का प्रकाश न होगा अविद्या रुपी अंधकार का नाश होना असंभव है।

होली जैसे पवित्र त्यौहार पर तो बड़े २ सुन्दर कार्य करना चाहिये और आगामी वर्ष के लिये पवित्र कार्य करने की शपथ ग्रहण करनी चाहिये। अब भारत स्वतन्त्र है विदेशी राज दूतों का भी आवागमन हमारे देश में हो गया है। भारत का गौरव तभी बना रह सकता है जब कि बुरे भावों तथा विचारों के स्थान पर सद् भावों का समावेश हो।

महात्मा गांधी

संसार के लिए आदर्श रखने का गौरव यदि किसी को प्राप्त है तो वह भारत जननी है। भारत जननी ने ही ऐसे २ पुत्रों को जन्म दिया है जिन्होंने संसार को दयालुता, उदारता, सज्जनता और विद्वता का पाठ पढ़ाया है जिनकी महत्ता को अन्यान्य देश मान गये हैं और उनके सामने अपने को झुका दिया है। ऐसे महान् पुरुषों में महात्मा गांधी को भी उच्च स्थान प्राप्त हुआ है। भारत के लोगों ने ही नहीं योरुप के बड़े २ पुरुषों ने भी इस बात को स्वीकार कर लिया है और स्पष्ट घोषित कर दिया है कि वर्तमान युग का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष एक केवल गांधी है।

आप का जन्म सन् १८६९ के अक्टूबर मास में बम्बई के पास पोर बन्दर नामक स्थान में हुआ था। आपके पिता का नाम कर्म चन्द गांधी था। आप के जीवन को बनाने वाले सुयोग्य पिता तथा धर्म परायण माता जी थीं। गांधीजी के वर्तमान गुणों का बीजारोपण उनके माता-पिता के द्वारा हुआ।

सोजती द्वार, मेड़ता द्वार, सीवानची द्वार इत्यादि । अन्दर का नगर पुराने ढंग पर बसने के कारण बाजार के रास्ते वो सड़कें कम चौड़ी है जिससे साथ में एक या दो मोटरें एक साथ आसानी से नहीं निकल पाती। इसलिये शहर के अन्दर भीड़ भाड़ अधिक लगी रहती है। शहर में दुकाने एक ढंग की नहीं है।

आधुनिक समय में जोधपुर भी कला दृष्टि से उन्नति कर रहा है। यहां पर तांबे व पीतल के बरतन बनाने की फेक्ट्रियां खोलदी गई है। रंगाई, छपाई, हाथी दांत के चुड़े वो चुड़ियें का काम भी अच्छा होता है। यहां पर शिक्षा के लिये स्कूलें तथा कॉलेज बने है। इसके अलावा इञ्जीनियरींग कॉलेज हाल ही में बना है। होजरी हाउस वो भारत सेवाश्रम की बड़ी २ फेक्ट्रियें हैं जिन में कपड़े, साबुन तथा नाना प्रकार के तेल भी बनाये जाते हैं और दूसरे गांवों तथा शहरों में बाहर भेजे जाते हैं। सोडा लेमन तथा बर्फ की भी फेक्ट्रियें स्थान २ पर खुल गई हैं। प्राचीन काल से यहां वर्षा का अभाव रहा है। इसको दूर करने के लिये भूत पूर्व माहाराजा उम्मेद सिंहजी ने पाली से नहर द्वारा पानी लाकर पानी के अकाल को सदा के लिये दूर कर दिया है जिससे अब स्थान स्थान पर नल लग गये हैं।

जोधपुर में कई स्थान देखने योग्य हैं। शहर लग भग ८-६ मील के बीच में बसा है। शहर में घंटाघर बना है जिसके द्वारा लोगों को ठीक समय ज्ञात होता है। महात्मा गांधी अस्पताल वो उम्मेद अस्पताल जहां रोगियों का मुफ्त इलाज होता है। राजस्थान में क्या भारत वर्ष में इने गिने अस्पतालों में से है। इसके अलावा किला बड़ा मजबूत है। वह लग भग ६०० फीट की ऊंचाई पर बना हुआ है। किले के पास जसवंत-स्मृति भवन या थड़ा भी देखने योग्य है। यह इमारत संगमरमर की बनी है। यहाँ पर हवाई जहाजों का बड़ा भारी

स्टेशन है। मंडोर, बालसमन्द, पब्लिक पार्क, कचहरी, हाई कोर्ट, रेलवे स्टेशन, कुञ्जविहारी जी का मंदर, घनश्याम जी का मंदर, छीतर पेलेस का सौंदर्य अवर्णनीय है। रेलवे का कारखाना और बिजली घर भी देखने योग्य है। आदि अनेक स्थान हैं जिससे यहां के कला कौशल का पता चलता है।

वर्तमान समय में शहर उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। शहर के बाहर सड़कें चौड़ी तथा सरदारपुरा नवीन ढंग से बसा हुआ है और जालोरी दरवाजे के पास, जहां पर पुलिस चौकी है, बिस्सा स्मार्क भवन बनने का आदेश सरकार द्वारा आयोजित किया गया है जिसने अपनी मात्र भूमि के लिये अपने प्राणों तक को बाजी लगादी। श्री बिस्साजी का नाम केवल राजस्थान के इतिहास में ही नहीं अपितु भारत के शहीदों के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

बाल विवाह

१ बाल-विवाह किसे कहते हैं ?
२ विवाह का उचित समय।
३ बाल-विवाह के दोष।
४ इसके रोकने के उपाय।

साधारण बोल चाल की भाषा में छोटी आयु में ही जिस समय बालक में अज्ञान की मात्रा अधिक हो और ज्ञान का अभाव हो और वह लाभ हानि, सुख दुख,का अपने आप निर्णय न कर सके उस समय अगर विवाह किया जाय तो हम उसे बाल विवाह कहते हैं। जब तक लड़का कम से कम १८ वर्ष और लड़की १४ वर्ष की अवस्था को प्राप्त न करले और इसके पहिले उनका विवाह किया जाय तो उसे बाल-विवाह ही कहेंगे। विवाह करते समय इस बात का भी ध्यान रखना आवश्यक है कि लड़के और लड़की की आयु में कितना अन्तर है

अगर लड़का १० साल का और लड़की १४ साल की है तो ऐसा विवाह करना अनुचित होगा और यह अनमेल विवाह कहा जावेगा।

बाल्यावस्था में विवाह होने में कई दोष हैं। छोटी अवस्था में लड़की गृहस्थ के नियमों को भली प्रकार नहीं जान सकती। जिससे वह अपने पति की आज्ञा न पालन करने पर दुख उठाती है। यदि सन्तान हो भी जाय तो रोगी व थोड़ी उम्र में ही मृत्यु का होना संभव होता है और दैव योग से कहीं लड़के की मृत्यु हो जाय तो इस अनाथ बालिका के लिये यह संसार एक भार रुप हो जाता है और समाज में भी दुराचारिणी हो जाने पर लोक परलोक दोनों को बिगाड़ती है। यह प्रथा हिन्दुओं में विशेष रुप से पाई जाती है जिससे हिन्दु जाति उन्नति को न प्राप्त कर अवनति की ओर अग्रसर हो रही है।

सरकार ने भी इस प्रथा को रोकने के लिये कानून बनाये हैं जिसको "शारदा एक्ट" के नाम से पुकारते हैं। अगर इसके विरुद्ध कोई काम करता है तो उसे दंड मिलता है। यदि कोई गुप्त रुप से इस प्रकार का विवाह करता है तो रिपोर्ट करने पर सरकार उसे सजा देती है।

इस प्रथा को सर्वदा नष्ट करने के लिये विद्या का प्रचार अधिकता से होना अति आवश्यक है। जब तक विद्या द्वारा अज्ञान का हरण न किया जावेगा सांसारिक प्राणी इसके चुंगल से निकलने में समर्थ न हो सकेंगे। इस प्रथा ने केवल अपने समाज की ही हानि न की है परन्तु अपने देश को भी अवनति के रास्ते पर लेजाने में सहायक हुई है। विशेषकर स्त्रियों में विद्या का प्रचार करने से ही यह प्रथा नष्ट हो सकती है।

मेला

(१) व्याख्या
(२) प्रकार
(३) एक मेले का वर्णन
(४) लाभ

राजस्थान भारत वर्ष में सब से बड़ा प्रान्त है। परन्तु आबादी के हिसाब से यह प्रान्त पिछड़ा हुआ है। इस प्रान्त में भी नाना प्रकार के मेले लगते हैं जिसमें से कुछ तो व्यापारिक दृष्टिकोण से अच्छे लगते हैं, कुछ शहीदों की यादगार में लगते हैं, जैसे वीर तेजाजी का मेला, कुछ मानव हृदय को प्रफुल्लित करने के लिये भी लगते हैं। मगर हृदय में एक विचार तरंग पैदा होती है कि यह मेले क्यों तथा किस लिये लगते हैं? जहाँ नर नारी अपने हृदयगत उद्गारों को एक दूसरे से बदल ने के लिये सम्मलित होते हैं उसे मेला कह सकते हैं। मेला का वास्तविक अर्थ मेल से है जहां आपस में एक दूसरे से मेल हो जाय,—व्यापारिक दृष्टि कोण से, सामाजिक विचार से, या मन बहलाव के भावों को लेकर हो, वह मेला ही है।

राजस्थान में जोधपुर भी एक प्रमुख नगर है। यहाँ पर भी नाना प्रकार के मेले होते हैं। पशु मेले नागौर तथा तीलवाड़े में, मानव हृदय को प्रसन्न करने लिये मन्डोर में – नाग पंचमी तथा वीरपुरी कागे में, शितला अष्टमी का, जोधपुर शहर में गणगौर वो गनेश चतुर्दशी का भी मेला लगता है।

आज नाग पंचमी के मेले का दृश्य आप के समक्ष रखा जाता है। यह मेला मंडोर में जो कि जोधपुर की प्राचीन राजधानी है वहां भरता है। मंडोर जोधपुर से ६ मील की दूरी पर है, उस दिन स्त्री पुरुष स्वच्छ वस्त्रों को पहिन कर, पकवान लेकर कोई तो तांगे से, कोई मोटर

या बस से, कोई पैदल तथा अनेको स्त्री-पुरुष रेल गाड़ी द्वारा यात्रा करते हैं।

नाग पंचमी के शुभवसर पर जोधपुर स्टेशन से करीब २० दफे रेल गाड़ी छूटती है। जिसमें बड़ी भीड़ भाड़ लगती है, पुलिस व स्वयम् सेवकों का प्रबन्ध होता है और रेलवे को बड़ी आमद होती है। गाड़ी जोधपुर स्टेशन से रवाना होकर राईका बाग पेलेस, महामन्दिर, होती हुई मंडोर पहुँचती है। वहां पर नाना प्रकार की दुकानें लगती है मिठाई, खिलोने, पुरी, दई, नमकीन वालों की तथा चकर वो झोलए भूले लगते हैं जिस में बालक अपने मन बहलाते हैं। वहां का दृश्य तो देखते ही बनता है। इस के अलावा सुन्दरियों के मधुर गान तथा रिम झिम २ पानी का बरसना चित्त को प्रसन्न करता है। इसके उपरान्त नागादेरी का दृश्य जहां पर मनुष्य स्नान करते हैं बड़ा ही रमणीय है। प्राकृतिक दृश्यों को देख कर चित्त मोहित हुए बिना रह ही नहीं सकता। इस के अलावा नाना प्रकार के चित्र-रामदेवजी, पाबूजी, हडबूजी, वो काला गोरा भेरुंजी को देख कर मन में प्राचीन काल की कारीगरी का अवश्य स्मरण आता है वहां पर नाना प्रकार के फलवाले वृक्ष तथा हरी २ तृण भूमि हमारे श्रम को सदा के लिये हरण कर लेती है।

मेले में हम अपनी चिन्ता को भूल जाते हैं और नये २ भावों का आविर्भाव होता है। अपने सहपाठियों, मित्रों, सम्बन्धियों से मिल कर हृदय में उल्लास की झलक आती है क्योंकि मेला ही एक ऐसा स्थान है जहां पर हम आपस में एक दूसरे से मिल सकते हैं। चित बहलाव का स्थान मेला ही है जहां मानव स्वच्छन्दता से विहार कर सकता है।

सभी स्थानों को देखने के पश्चात हम फिर शाम के समय बालसमन्द की यात्रा करते हुवे रायटी, खरबूजा बावड़ी वो चाँद पौल होते हुए रात्री के ८॥ बजे अपने घर पहुँचते हैं। यह मेला बड़ी धूम धाम से भरता है। यह मंडोर के एक प्रसिद्ध मेले में से है।

रक्षा-बन्धन

श्रावण मास की अन्तिम तिथी, श्रावणी कहलाती है, उस दिन प्रायः श्रावण-नक्षत्र होता है।

प्रायः समस्त हिन्दुओं के लिये चार बड़े २ त्यौहार हैं:— रक्षाबन्धन ब्राह्मणों का, विजयादशमी क्षत्रियों की, दिवाली वैश्यों की और होली शूद्रों की कही जाती है।

रक्षा-बन्धन का प्रारंभ प्रचीन काल से है उस समय ऋषि गण एक विशाल यज्ञ करते थे। उस में राजा तथा अन्य लोग भी सम्मिलित होते थे। वेद के मन्त्रों द्वारा इस यज्ञ में द्विजाति मात्र यज्ञोपवीत धारण करते थे। जब यज्ञ प्रारम्भ होता था उस समय आशीर्वादात्मक मंत्र पढ़कर हाथ में एक रंगीन धागा बाँधते थे।

इस के अलावा भी रक्षा बन्धन के विषय में एक और कथा है:—

एक समय असुरों ने समस्त पृथ्वी को जीत कर देवलोक पर भी अधिकार जमा लिया। देवता दुखी होकर मारे २ फिरने लगे। इन्द्र भी दुखी हुआ। उस समय इन्द्राणी ने ब्राह्मणों द्वारा मंत्र पढ़वा कर इन्द्राणी ने राखी इन्द्र के हाथ में बाँधी थी। जिससे इन्द्र ने दैत्यों पर आक्रमण किया। घोर युद्ध हुआ। अन्त में राक्षसों की पराजय हुई। यह सब रक्षा बंधन का प्रभाव था। उसी समय से रक्षा बंधन का प्रारंभ हुआ।"

धीरे २ ब्राह्मणों की अवनति हुई। आधुनिक युग में ब्रह्मणों ने न कमाना अपना पेशा समझ रक्खा है। वे पैसे २ के मोहताज होकर द्वार २ पर रंगीन-सूत्र को हाथ में लेकर रक्षा बन्धन के दिवस र लोगों के हाथ में पैसे के लोभ से रक्षा बाँधते हैं।

— विद्या —

जिस के द्वारा हमें कुछ ज्ञान प्राप्त हो उसे विद्या कहते हैं। "विद्या नाम नरस्य रूपम् अधिकम्" – विद्या ही मनुष्य का सब से अधिक रूप है। किसी भी वस्तु का अन्तर जानने के लिये हमें ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। ज्ञान विद्या के द्वारा जाना जाता है। अन्धा जिस प्रकार दिन रात के भेद को नहीं जान सकता उसी प्रकार विद्या हीन मनुष्य किसी प्रकार की नीति और कर्तव्य को नहीं जान सकता। ज्ञान का अभाव ही इसका कारण है। ज्ञान का जन्म किसी भी प्राणी के साथ नहीं होता, विद्या और शिक्षा के द्वारा ज्ञान की प्राप्ति होती है। "करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान" अभ्यास के द्वारा मूर्ख भी पंडित बन जाता है। अभ्यास से शिक्षा की उन्नति होती है। उन्नति से ज्ञान के क्रम का विकास होता है। विद्या के विकास से मनुष्य विद्वान बनता है। विद्वान का आदर राजा से भी अधिक होता है। "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते" राजा तो अपने देश में ही पूजा जाता है परन्तु विद्वान सभी स्थानों में पूजा जाता है। राजा भी विद्वान का आदर करता है।

विषयों के अनुसार विद्या के कई भेद हैं:— कृषि, शिल्प, नीति, आचार, विज्ञान आदि २। मनुष्यों का कथन है कि "पुस्तक पढ़े बिना विद्या नहीं आती" — यह बात असत्य प्रतीत होती है। बिना पुस्तक पढ़े भी मनुष्य विद्वान हो सकता है - विद्या भाषा से युक्त है। भाषा के द्वारा ही हम अपने भावों को प्रगट कर सकते हैं जिससे दूसरे मानव हमारे भावों को समझ सकें। अच्छी भाषा सीखने के लिये प्रारम्भ में ही पुस्तक पढ़ने का नियम है। धैर्य क्षमा, संयम, अहिंसा, शान्ति, पवित्रता आदि गुण मनुष्य विद्या के द्वारा ही प्राप्त कर सकता है।

विद्या के द्वारा चित्त की शुद्धि होती है। जिससे कर्तव्य-अकर्तव्य, सत्-असत्, झूठ-सच का ज्ञान होता है मन की शुद्धि के बिना

मानव भगवान् का दर्शन नहीं कर सकता। भगवत प्राप्ति में सब से पहिले मन का शुद्ध करना परमावश्यक है। जिस प्रकार धान बोने से पहिले खेत का साफ करना अति आवश्यक है इसी प्रकार भगवत् प्राप्ति में मन का शुद्ध करना आवश्यक है। भूगर्भ क्या है इसके अन्तरगत क्या छुपा है ? आकाश में चमकते हुए तारे क्या हैं ? ये बातें तो बड़ी दूर की हैं, पर बिना विद्या के हम यह भी नहीं जान सकते कि "शरीर को स्वास्थ किस तरह रक्खें ? अपनी संतान का पालन पोषण कैसे करें ? किसके साथ कैसा बर्ताव करें ? आदि।

विद्या ही सच्चा बल है, विद्या ही सच्चा धन है। विद्या ही से आज अमेरिका व यूरोप के लोगों ने ऐसी उन्नति की है। विद्या ही से जापान इतना ऊंचा उठ गया है। नाना प्रकार के आविष्कार जिन को देख कर मानव दांतों तले उंगली दबाता है यह सब विद्या की ही देन है। रेल, तार, हवाई जहाज, जहाज, बिना तार का तार, भांति २ की कलें, विद्या ही से बनाई गई है। हमारी भारत-भूमि विद्या की खानि और विद्वानों की जननी है। व्यास, वाल्मीकि, पातंजलि, शंकर, दयानन्द, विवेकानन्द, गोखले, आदि का जन्म स्थान भी भारत में है।

समय के फेर से यहां का विद्या-रुपी सूर्य अस्ताचल को प्राप्त हो गया है। चारों ओर अज्ञान का अंधेरा छाया हुआ है। अब समय के परिवर्तन से फिर पौ-फटने लगी है, भाग्याकाश में लालिमा दिखाई देने लगी है। आशा है कि विद्या-सूर्य उदय होगा और उसके प्रकाश में उन्नति प्राप्त करेंगे। जिस प्रकार कारीगर पत्थर को छील छालकर साफ सुथरा बनाते हैं और अपने मन के अनुसार लहरियें तथा धारियें डालता है उसी प्रकार विद्यारुपी सूर्य के प्रकाश के द्वारा मानव अपने हृदयगत भावों को प्रगट करता है जिससे ज्ञान की वृद्धि होती है। विद्या से बढ़कर संसार में कोई धन नहीं जिसको न तो चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है। इसलिये प्रत्येक छात्र को विद्याभ्यास में पूर्ण

मन लगाना परमावश्यक है। समय के निकल जाने पर विद्या-रूपी धन प्राप्त होना असंभव है। कच्चे घट को कुम्हार ठीक बना सकता है परन्तु पक्के हुये घट को ठीक बनाना उसकी ताकत के बाहर है इसलिये विद्या ग्रहण करने के समय को व्यर्थ में न खोना चाहिये। समय का सदुपयोग करें तथा अविद्या का नाश करें और इसके द्वारा ... उन्नति हो सकती है।

समाचार पत्र

(१) आधुनिक युग में समाचार पत्रों की महत्ता

(२) व्याख्या व प्रकार।

(३) लाभ अथवा हानि।

आधुनिक युग अग्रचारी दुनिया का युग है। जिस देश में स... पत्रों का अभाव तथा विद्वानों की न्यूनता है वह देश आज सभी में पिछड़ा हुआ है। अगर हमें अपने देश को दूसरे देशों के मुकाबि... में स्थाई रखना है तो समाचार पत्रों की बाहुल्यता तथा उससे लाभ उठाना अति आवश्यक है। सभी देशों में भाषा का एक होना संभवत नहीं इसलिये नाना प्रकार की भाषा में समाचार पत्रों का निकलना संभव है। प्रत्येक देश में अनेकों समाचार पत्र निकलते हैं।

जिस पत्र के द्वारा हम एक देश से दूसरे देश के संबंध में कुछ ज्ञान कारी प्राप्त कर सकें ऐसे पत्र को समाचार पत्र कहते हैं। समाचार पत्र प्रति दिन प्रकाशित होते हैं। इनको पढ़कर हम संसार के कोने २ की खबर जान सकते हैं। समाचार पत्रों के द्वारा खबर तो मिलती है परन्तु साथ ही साथ वहां के कला कौशल, व्यापार आदि का हाल भी मालूम हो जाता है जिससे हम जान सकते हैं कि कौनसा देश उन्नति कर रहा है और उससे हम किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं।

समाचार पत्र नाना प्रकार के होते हैं। दैनिक, सप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक इत्यादि। प्रति दिन निकलने वाले समाचार पत्र को "दैनिक," सात दिन से निकलने वाले को सप्ताहिक, १५ दिन से निकलने वाले को पाक्षिक, एक मास से निकलने वाले को मासिक व एक वर्ष से जो अखबार निकलते हैं उनको वार्षिक कहते हैं। समाचार पत्रों के अनेक नाम हैं। 'लोक वाणी' 'अमर' 'नव भारत' 'अर्जुन' विश्वामित्र इत्यादि (दैनिक) समाचार पत्र हैं। प्रजा सेवक, नवयुग, देशदूत, साप्ताहिक पत्र है। मासिक पत्र में समाचार कम और साहित्यक संबंधी बातें अधिक होती हैं जैसे 'बाल सखा' 'सरस्वती' आदि।

प्राचीन काल में समाचार पत्रों का अभाव था परन्तु आधुनिक युग में राष्ट्रीय उलट फेर ने पाठकों की संख्या बढ़ादी है। जनता की आवाज को सरकार तक पहुँचाने का आधुनिक युग में सब से सरल रास्ता समाचार पत्र है और समाचार पत्रों के द्वारा ही सरकार अपने मत को जनता तक पहुँचा सकती है। व्यापार में भी समाचार पत्र सहायता पहुँचाते हैं।

कभी समाचार पत्रों में असत्य बातें छपने पर प्रजा में बड़ी गड़बड़ी मच जाती है जिससे जनता को लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ती है। समाचर पत्रों के सम्पादकों को चाहिये कि वे प्रजा तथा सरकार के हित को देखकर समाचार अपने पत्रों में छपाने की आज्ञा दें अन्यथा नुकसान पहुँचता है। यदि कोई समाचार पत्र व्यक्ति विशेष या दल विशेष का ही प्रचार करता है तो भी प्रजा को बड़ा धोखा होता है और देश को बड़ी हानि पहुंचती है। हमें इस प्रकार के पत्रों से सावधान रहना आवश्यक है।

समाचार पत्र देश की आवाज को बुलन्द करने का साधन है जिस के द्वारा प्रजा अपने हित व अनहित को जान सके और अन्य देश की क्या स्थिति है यह भी समाचर पत्रों द्वारा ज्ञात हो सकती है। समाचार पत्र के द्वारा खबर जल्दी व सरलता से प्रत्येक प्राणी के पास आसानी से कम समय में पहुंच सकती है।

दिवाली

(१) उत्पत्ति
(२) किस प्रकार मनाते हैं ?
(३) लाभ-हानि।
(४) विशेष विवरण।

दिवाली जो कि हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौंहार हैं उन में से एक त्यौंहार है। इसकी उत्पत्ति के विषय में बड़ा मत भेद है। यह त्यौंहार कार्तिक के महीने में या तो अमावस्या को या इस के एक दिन पहिले मनाया जाता है। कुछ ग्रन्थकार कहते हैं कि इस दिन आर्यसमाज के चलाने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती और जैनमत के प्रवर्तक महावीर ने निर्वाण पद प्राप्त किया था। इसके अलावा वेदों के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि जब रामचन्द्र जी रावण को मार कर अयोध्या लौटे उसके उपलक्ष में वहां के पुरजनों ने इनका स्वागत करने के लिये घर घर में दीपक जलाये व घरों को सजाया। इस लिये दिवाली मनाई जाती है। इसके अलवा जब इन्द्र ने ब्रज पर कोप किया था उस समय भगवान कृष्ण ने ब्रज वासियों को अंगुली पर पहाड़ को धारण करके उनके प्राणों की रक्षा की थी इसलिये इस को मनाते हैं।

दिवाली का शुद्ध नाम दिपावली है। जिस का अर्थ है कि 'दीपकों की कतार या श्रेणी'' यह त्यौंहार वर्षा के खतम होने पर वो शरदी के प्रारंभ में आता है जिससे स्त्री पुरुष अपने घरों को साफ-सुथरा बनाते हैं। बरसात में वायु मंडल में जो कीटाणु उत्पन्न होते हैं उनका नाश हो जाय। इसके अलावा आतिशबाजी (सोर छोड़ने) भी छोड़ते हैं जिसके धूएं से रोग पैदा करने वाले कूटाणुओं का नाश हो जाता है जिससे स्वास्थ्य ठीक रहे। नाना प्रकार के पकवान भी इस समय बनाते हैं। रात्री के समय लक्ष्मी का पूजन करते हैं। बाजारों

की सजावट की जाती है व प्रत्येक प्राणी के हृदय में आनन्द की लहर दौड़ती है। इसके प्रथम दिवस यानि धन तेरस को लोग यम का पूजन करते हैं। उस दिन खरीदा हुआ नया बर्तन शुभ माना जाता है दूसरे दिन छोटी दिवाली मनाई जाती है। तीसरे दिन त्यौहार का मुख्य दिन दिपावली होता है। दिवाली के दूसरे दिन गोवर्द्धन पूजा और तीसरे दिन भया दूज या दवात कलम या सरस्वती का पूजन होता है।

इस त्यौहार से हमें बहुत लाभ है। जो कीटाणु वर्षा के आवागमन से अपने घरों में फैल जाते हैं सफाई के द्वारा उनको नष्ट किया जाता है जिससे स्वास्थ्य ठीक रहे। उन दिनों आकाश स्वच्छ दिखाई देता है रास्ते भी साफ हो जाते हैं। तालाबों में कमलों के खिल जाने पर पानी की शोभा अधिक बढ़ जाती है। प्रत्येक प्राणी के हृदय में आनन्द ही आनन्द दिखाई देता है। आधुनिक समय में इस त्यौहार के दिन कुछ मनुष्य जुआ खेलते हैं। जो हार जाते हैं नाना प्रकार का कुकर्म करते हैं – कोई विष खा बैठता है तो कोई चोरी करता है। बारुद के खिलौने छुटने पर घरों में आग भी लग जाती है जिससे मनुष्य यो बालक जल कर कभी २ मर जाते हैं।

हमें इस त्यौहार को राष्ट्रीय जीवन का बड़ा दिन समझ कर मनाना चाहिये और इस त्यौहार के मनाने में जो दोष उत्पन्न हो गये हैं उन्हें मिटाने का प्रयत्न करना चाहिये जिससे हम अपने देश का सिर ऊपर उठा सकें।

दुख का होना जरुरी है। इसी प्रकार यदि हमें गन्ने के मिठास का पता लगाना है तो उससे पहिले नीम को चबा कर देखो। तभी कड़वी व मीठी वस्तु का ठीक २ अनुभव हो सकता है।

जब गरमी अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाती है तो आकाश में काले २ बादल दृष्टिगत होते हैं, मोर मेघों को देख कर कलकल ध्वनि से बोलता है। मानव व पशु-पक्षी सभी प्राणधारी आशा-मग्न हो जाते हैं।

जलधरों की गड़ गड़ाहट, बिजली की चमक, चातक का "पिउ पिउ" रटना, दादुर का टर टर शब्द हमारे चित्त को प्रसन्न किये बिना नहीं रह सकता। प्रकृति की माया अनोखी है। वर्षा का प्रथम दिवस बड़ा ही मनोरंजक होता है। वर्षा की बूंदों के गिरने से धरती पर से सुगन्ध निकलती है, वृक्षों के पत्ते स्वच्छ हो जाते हैं। छोटे २ गड्ढे जल से भर जाते हैं नदियें व सरोवरों में एक नव जीवन प्रतीत होने लगता है। गरमी की तीव्रता न्यून हो जाती है। शीतल, मंद व सुगंधित वायु के झोंके बहने लगते है।

वर्षा ऋतु की रात्री बड़ी भयावनी होती है। चारों ओर अन्धकार प्रतीत होता है। मेघों की गरजना, बिजली की कड़कड़ाहट, वर्षा का मूसलाधार होना डरावना मालूम होता है। जहरीले जीव-जन्तुओं का भय रहता है। नदियों का प्रखर, और गंभीर नाद भयावना सा होता है।

वर्षा से अनेक लाभ हैं। भारतवर्ष कृषिप्रधान देश है। यहाँ की सभी नदियों में वर्ष भर पानी नहीं रहता जिससे खेती में असुविधा होती है। किसानों की खेती वर्षा पर निर्भर है। वर्षा के अभाव से देश में अकाल पड़ जाता है। वर्षा से मनुष्यों को अनाज, और पशुओं को घास मिलती है। सभी जलाशय पानी से भर जाते हैं। पेड़ पौधों में नव जीवन का संचार होता है। वर्षा के आगमन से सभी प्राणी प्रफुल्लित होते हैं। यदि वर्षा न होतो प्राणी गरमी में झूलस कर अपने प्राण त्याग दें। वर्षा सभी का प्राण है ये वे जानो में जान डालती है।

इस संसार को बनाने वाले प्रभु हैं। विधाता ने कोई भी वस्तु निर्दोष नहीं रची है। प्रत्येक वस्तु में गुण और अवगुण दोनों विद्यमान होते हैं और न हो तो वह घमंड के मारे चूर हो जाय और अपने को सब से अधिक समझ ने लगता है। परन्तु भगवान का खास भोजना घमंड है जिस २ ने धरा पर घमंड किया उस का शिर सदा के लिये नीचा कर दिया गया। लंका पति रावण को भी शिव भक्त के नाते बड़ा घमंड था उसके घमंड को भी भगवान ने चूर्ण कर दिया। दुशासन, राजा बली, आदि के दृष्टान्त आप के समक्ष है। कोमल और सुगंधित पुष्पों के कीट लगते हैं। चन्द्रमा में भी काले २ धब्बे दृष्टि गत होते हैं। वर्षा की अधिकता से डाँस, मच्छर इत्यादि अनेकों विषैले जीव पैदा होते हैं जठराग्नि मन्द पड़जाती है। भोजन कम

आधुनिक शिक्षा के ढंग ने हमारे विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को भी
नाश कर डाला है। आप किसी भी स्कूल या कॉलिज में चले जाइए,
आप विद्यार्थियों को रोगी या कमजोर पायेंगे। पाठशालों में स्वास्थ्य
पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। वास्तव में हम उसे शिक्षा नहीं
कह सकते जिसके द्वारा विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक और
आत्मिक विकास न हुआ हो। व्यायाम के लिये कोई समुचित प्रबन्ध
कालिजों में नहीं रहता। कभी २ विद्यार्थी फुटबॉल, हॉकी, टेनिस,
वॉलीबॉल आदि खेल खेल लेते हैं। छात्रालय में रहने वाले विद्यार्थी
कुछ लाभ उठा लेते हैं परन्तु नगर में रहने वाले विद्यार्थी तो उससे
पूर्णतया वंचित ही रहते हैं। व्यायाम के अभाव से अध्यापकों का
स्वास्थ्य भी बहुधा बुरा देखा जाता है।

शारीरिक विकास अथवा स्वास्थ्य से भी बुरी दशा है विद्यार्थियों
के चरित्र की। वर्तमान शिक्षा के ढंग ने आत्मा को व ईश्वर क्या
है इस को सदा के लिये भुला दिया है। न तो कोई उपदेशक
बुलाया जाता है न ईश्वर-वन्दना कराई जाती है न सदाचार सम्बन्धी
भाषण कराए जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका चरित्र
दूषित हो जाता है। उनमें संयम, नियन्त्रण, नम्रता, बड़ों का आदर,
आदि श्रेष्ठ गुणों का अभाव पाया जाता है जिससे वे भविष्य में अच्छे
नागरिक नहीं बन पाते। चरित्र जीवन का सिरमौर है। किसी ने ठीक
कहा है कि—"When character is lost everything is
lost," अर्थात् आचरण के नष्ट हो जाने पर सब कुछ नष्ट हो जाता है।
निस्सन्देह आचरण जीवन का सार है। वर्तमान शिक्षा का माध्यम
अंग्रेजी भाषा है।

इस शिक्षा से देश की उन्नति में रुकावट के साथ ही साथ सभ्यता
तथा संस्कृत को भी खो बैठे हैं। विदेशी शिक्षा द्वारा शिक्षा प्रचार शायद
भारत को छोड़कर और किसी अन्य देश में न होगा। विदेशी भाषा

२. अछूतोद्धार।

(१) प्रस्तावना – हिन्दू-समाज की उन्नति के लिये अछूतों की आवश्यकता।

(२) हिन्दू-समाज में अछूत कौन है ?

(३) अछूतों के प्रति उच्च जातियों के हिन्दुओं के अत्याचार।

(४) अछूतों के प्रति अत्याचारों से दुष्परिणाम।

(५) अछूतोद्धार के साधन।

(i) सहानुभूति।

(ii) समानता का बर्ताव।

(iii) दरिद्रवस्था में सुधार।

(iv) राज काज में हाथ।

(६) उपसंहार-आज कल अछूतोधार के कार्य की ः

३. प्रातः काल का पर्यटन (भ्रमण)

(१) प्रस्तावना-प्रातः कालीन प्राकृतिक छटा।

(२) भ्रमण का आनन्द।

(३) भ्रमण से लाभ।

(i) शरीर में स्फूर्ति आती है।

(ii) वायु से रक्त शुद्धि।

(iii) शरीर का व्यायाम होता है।

(iv) शारीरिक रोगों का नाश।

(v) मस्तिष्क की शक्ति बढ़ना।

(vi) आलस्य पर विजय प्राप्त करना।

(vii) सदाचार और धार्मिक भावों की वृद्धि होती है।

(४) भ्रमण का उपयुक्त समय।

(५) उपसंहार।

४. सिनेमा या चित्रपट।

(१) प्रस्तावना-विज्ञान का प्रसार।
(२) आविष्कार और रूप।
(३) प्रचार और सर्वप्रियता।
(४) लाभ—मनोरंजन, शिक्षा, सुधार, विज्ञपन और प्रचार कार्य
(५) हानियें—
(i) नेत्रों की दृष्टि का कम होना।
(ii) गन्दे चित्रों का कुप्रभाव।
(iii) समय का और धन का नाश।
(६) उपसंहार—सिनेमा का भविष्य।

५. स्त्री शिक्षा की आवश्यकता और उसका रूप।

(१) प्रस्तावना—स्त्री शिक्षा की आवश्यकता।
(२) स्त्री शिक्षा से लाभ।
(३) स्त्री शिक्षा का रूप।
(४) उपसंहार—भारत में स्त्री-शिक्षा की कमी और उसके दुष्परिणाम।

६. विज्ञान के चमत्कार।

(१) प्रस्तावना—विज्ञान का विस्तार
(२) स्थान संबंधी चमत्कार—रेल, मोटर, जलयान, वायुयान, बुलेट, दूर-दर्शक यन्त्र, टेलीविजन।
(३) समाचार सम्बंधी चमत्कार—
तार, टेलीफोन, बेतार का तार।
(४) केमरा
(५) मुद्रण-यन्त्र

(६) एकमरे
(७) आमोद-प्रमोद-सम्बन्धी-सिनेमा - ग्रामोफोन, रेडियो आदि
(८) बिजली पंखा और बिजली का प्रकाश।
(९) विज्ञान का महत्त्व।

कहानी—लेखन

कहानी प्रायः पांच प्रकार की होती हैं :—

(१) दिये हुए शीर्षक के आधार पर कहानी लिखना।
(२) अधूरी कहानी को पूरा करना।
(३) दी हुई कहानी को पढ़कर संकेत बनाना।
(४) संकेतों के आधार पर कहानी लिखना।
(५) शब्द या वाक्यांशों के आधार पर कहानी बनाना।

शीर्षक के आधार पर—

१. (अ) "लालच बुरी बला है"

एक कुत्ता मुंह में रोटी लिये हुवे नदी में तैरता जाता था। अपनी परछांई को देख कर समझा कि दूसरा कुत्ता भी रोटी लिये हुए आ रहा है। जैसे ही उसने रोटी छीनने के लिये मुंह खोला, उसके मुंह का टुकड़ा भी पानी में चला गया - सच है लालच बुरी बला है।

(ब) कौए की बुद्धिमानी।

एक कौआ प्यास के मारे मरा जाता था। उसने बाग में एक पानी का घड़ा देखा। उसमें पानी थोड़ा था। उसने एक उपाय सोचा। पास ही के ढेर में से छोटे २ कंकड़ों को डालना शुरू किया। जब पानी ऊपर आ गया उसने पानी को पेट भर पी लिया। यदि वह बुद्धिमानी से काम न लेता तो प्यास से मर जाता।

२. अधूरी कहानी को पूरा करना ।

एक लड़का भेड़ चराया करता था । वह कभी २ खेल ही खेल में "भेड़िया आ गया २" चिल्लाया करता था । उसने कई बार धोका दिया

कई दफे मनुष्यों को सहायता के लिये आना पड़ा परन्तु भेड़िये को न पाकर वे वापिस चले गये और उन्होंने विचारा की अब कभी भी न चलना चाहिये । आखिर एक भेड़िया आया, उसने बहुत चिल्लाया परन्तु कोई भी न आया । क्योंकि वह सदा झूठ बोलता था । लड़का मारा गया । झूठ का फल बुरा है ।

३. दी हुई कहानी को पढ़ कर संकेत तैयार करना ।

किसी वन में चार बैल रहते थे । उनमें बड़ी मित्रता थी । वे जहाँ जाते सब साथ २ जाया करते थे । उनके मेल को देख कर सिंह भी डरता था । वह उन्हें मार न सकता था । उसने उनमें फूट डाल दी । वे अलग २ रहने लगे । सिंह ने उनको एक २ कर के खा डाला । फूट का फल बुरा होता है ।

संकेत ।

(१) किसी वन में चार बैल रहते थे
(२) उनकी मित्रता को देख कर सिंह का डरना ।
(३) बैलों में फूट डालना ।
(४) बैलों की मृत्यु
(५) शिक्षा ।

४. संकेतों के आधार पर कहानी लिखना ।

(१) एक हाथी रोज तालाब में पानी पीने जाता था ।
(२) दर्जी जिसकी कि रास्ते में दुकान थी रोटी देता था ।

(३) एक दिन सुई का चुभना।
(४) हाथी का कीचड़ फेंकना।

एक हाथी रोज तालाब में पानी पीने जाता था। रास्ते में एक दर्जी की दुकान थी। दर्जी हाथी को अपनी दुकान पर रोज रोटी देता था। वह उसे खा लेता था। एक दिन रोटी के बदले उसने सूंड़ में सुई चुभो दी। जब वह तालाब से स्नान कर के वापिस आया तो अपनी सूंड में गदला पानी और कीचड़ भरलाया और उसने दर्जी की दुकान में डाल दिया जिससे उसके सब कपड़े खराब होगये।

५. शब्दों के आधार पर कहानी लिखना।

कौवा, रोटी, लोमड़ी, बड़ाई, मीठा गाना, रोटी का गिरना, चम्पत होना।

एक कौवे को कहीं एक रोटी का टुकड़ा मिला। वह उसको लेकर वृक्ष पर जा बैठा। उधर से एक लोमड़ी निकली जो भूखी थी। उसने कौए की बड़ाई की। वह प्रसन्न हुआ। उसने कहा आप बड़ा मीठा गाना गाते हैं, जरा सुनाइये। ज्योंही उसने मुंह खोला रोटी नीचे गिर पड़ी। वह रोटी को लेकर चम्पत हो गई।

अध्याय १२

अन्तर्कथाएँ

अगस्त्य मुनि—(ऋषि)-एक टिटिहरी के अण्डे समुद्र ने बहा लिए। टिटिहरी के जोड़े ने दुःखित होकर समुद्र को सुखा डालने की ठान ली। अगस्त्यजी को इनके दुःख पर दया आई। समुद्र उनकी भी पूजा की सामग्री बहा लेगया। ऋषि ने क्रुद्ध हो तीन आचमनों में उसे पी लिया। पीछे देवताओं की प्रार्थना पर मूत्र द्वारा उसे निकाल दिया। कहते हैं तभी से समुद्र का जल खारा है।

अजामिल—यह बड़ा ही दुराचारी और पापी ब्राह्मण था। कभी भगवान का नाम नहीं लेता था। इसके छोटे पुत्र का नाम 'नारायण' था। मरते समय जब इस पापी ने 'नारायण' कह कर इसे पुकारा तो विष्णु के दूत इसे यम-दूतों से छीनकर स्वर्ग लेगए।

अनंग—देवताओं की प्रेरणा से एक दिन कामदेव ने शिवजी पर आक्रमण किया, तपस्या भंग होते ही शिवजी कामातुर हुए। ज्ञान होने पर तृतीय नेत्र खोलकर कामदेव को भस्म कर डाला। कामदेव की स्त्री 'रति' के बहुत प्रार्थना करने पर करुणा करके शिवजी ने वरदान दिया कि अब से तेरे पति का नाम 'अनंग' (बिना शरीर वाला) होगा और बिना ही शरीर के यह त्रैलोक्य के प्राणियों को स्व-वश किया करेगा। श्रीकृष्णजी के पुत्र के रूप में तुझे यह फिर प्राप्त होगा। तदनुसार रुक्मिणी के गर्भ से प्रद्युम्न रूप में इसने जन्म लिया।

पाण्डवों का एक कुत्ता उधर आ निकला और उसे देखकर भौंकने लगा। एकलव्य ने सात बाण,उसके मुख में ऐसे मारे कि जो चुभे तो नहीं, केवल भौंकना बन्द होगया।

कनक-कश्यपु—(हिरण्य-कश्यपु) की स्त्री दीति जब गर्भवती थी तब नारद ने इसे ज्ञानोपदेश किया था। इसलिये इसके उदर से प्रह्लाद ने जन्म लिया। प्रह्लाद का पिता इन्हें राम-नाम लेने से रोकता था और इन्हें 'राम-नाम' की रट थी। पिता ने इन्हें अपनी आज्ञा न मानने के अपराध में बड़े २ कष्ट दिये। पहाड़ से गिरवाया, अग्नि से जलवाया; पर इन्होंने अपनी टेक न छोड़ी। अन्त में वह इन्हें गर्म खम्भे में बाँधकर, तलवार से मारने को उद्यत हुआ। भगवान् ने 'नृसिंह' रूप में खम्भे से प्रकट हो, हिरण्य--कश्यपु का वध कर, इनकी रक्षा की।

कपिल-शाप—रघुवंशी राजा सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों की रक्षा में 'अश्वमेध' का घोड़ा छोड़ा। इन्द्र ने उसे चुराकर पाताल लोक-स्थित कपिल-मुनि के आश्रम में जा बाँधा। जब सगर-पुत्र खोजते २ वहाँ पहुँचे और ऋषि को अपशब्द कहने लगे तो ऋषि ने तपोबल से इन सब को भस्म कर दिया। इन्हीं के वंशज राजा भागीरथ की घोर तपस्या से गंगाजी भूमि पर आईं (तभी से गङ्गा का नाम भागीरथी पड़ा) और इन सब का उद्धार किया।

कंस-बध-जब श्रीकृष्णजी ने कंस के भेजे हुए सभी राक्षसों को मार डाला, तब उसने राज-सभा में मल्ल-युद्ध आदि का ढोंग रचकर सब गोकुल-वासियों को अक्रूर के द्वारा बुला भेजा। इधर राज-सभा की ड्योढ़ी पर कुवलिया नाम का मस्त हाथी श्रीकृष्णजी को चिरवा डालने और यदि किसी प्रकार उससे भी बचें तो 'चाणूर' आदि मल्लों द्वारा, मल्ल-युद्ध में मरवा डालने की योजना की। परन्तु श्रीकृष्णजी ने

आकर कुवलिया, चाणूर आदि को मार, कंस को भी भरी सभा में यम लोक भेज दिया।

गज-ग्राह-एक बड़ा मदोन्मत्त हाथी एक दिन किसी तालाब में हथिनियों के साथ जल-क्रीड़ा कर रहा था कि इतने में एक मगर उसका पैर पकड़ कर घसीटने लगा। हाथी ने बहुतेरा बल किया पर न छूट सका। तब उसने अभिमान त्याग भगवान का स्मरण किया। विष्णु भगवान् शीघ्रता वश गरुड़ को छोड़ पैदल ही दौड़े और चक्रसुदर्शन से ग्राह को काट हाथी का उद्धार किया।

गनिका (१)-पिंगला नाम की एक वेश्या एक दिन शृङ्गार किये आधी रात तक अपने एक प्रेमी की बाट देखती रही। जब वह न आया तो उसे बड़ी ग्लानि हुई और विचारा कि जितनी देर तक इसकी राह देखती रही उतनी देर यदि भगवद्भजन करती तो उद्धार हो जाता। उसी दिन से वेश्या-वृत्ति त्याग कर भगवद्भजन में लग गई और मोक्ष को पाया।

गनिका (२)-काशी की एक वेश्या अपने तोते को 'राम-राम' पढ़ाया करती थी, जब वह मरी तो यम-दूत और स्वर्ग-दूत दोनों ही उसे लेने आए, अन्त में 'राम नाम' के प्रभाव से स्वर्ग-दूत ही उसे ले गए।

जरासन्ध-वृहद्रथ का पुत्र, कंस का ससुर और मगध का राजा था। कंस के मारे जाने के समाचार सुन, मथुरा पर चढ़ आया इसी के भय से श्रीकृष्णजी मथुरा छोड़ कर द्वारिका चले गए थे। जब युधिष्ठिर ने 'राजसूय-यज्ञ के निमित्त चारों दिशा के राजाओं को वश में करने के लिए भाइयों को भेजा, तो श्रीकृष्ण सहित भीम और अर्जुन,

इसे परास्त करने गए। २७ दिन तक भीम से इसका मल्ल-युद्ध हुआ। तब श्रीकृष्ण ने तिनका चीर कर इसके शरीर (यह दो फाँकों में जन्मा था और 'जरा' नाम की राक्षसी ने इन फाँकोंको मिलाया था, इसी से इसका नाम जरासन्ध था) को बीच से चीर डालने का संकेत किया तब भीम ने इसे चीर डाला।

दधिचि-जब वृत्रासुर के कष्ट से इन्द्र तथा सब देवता परम दुखी होकर विष्णु के पास गये, तब उन्होंने बताया कि नैमिषारण्य में राजर्षि दधीचि तपस्या करते हैं। यदि इनकी पसली की हड्डी से वज्र बनाया जाय तो उससे यह दैत्य पराजित हो। तदनुसार इन्द्र-सहित सब देवताओं ने ऋषि से जाकर प्रार्थना की। ऋषि ने सहर्ष शरीर त्याग, हड्डी दे दी। उससे वज्र बनाकर इन्द्र ने वृत्तासुर को पराजित किया।

धनु-रेख—जब राम का बाण लगने से कपट-मृग (मारीच) ने बड़े ज़ोर से 'हा! लक्ष्मण' कह कर प्राण छोड़े, सीता ने भ्रमवश उसे राम की आवाज़ समझ, लक्ष्मण से भाई की सहायतार्थ जाने क हठ किया। जब विवश हो लक्ष्मण सीता को अकेली छोड़ कर जाने लगे तो कुटी के चारों ओर धनुष से एक रेखा खींच कर सीता से उससे बाहर निकलने का निषेध कर गए। पर जब रावण भिखारी का रूप धर कर के आया और सीता भिक्षा देने लगी तो उसने कहा "हम बँधी भीख नहीं लेते, लकीर से बाहर आकर दो"। उस लकीर के भीतर जाने का रावण को साहस न पड़ा। सीता छल में आकर बाहर निकल आई और हरी गई।

ध्रुव—राजा उत्तानपाद की दो स्त्रियें थीं। बड़ी रानी के ध्रुव थे। एक समय जब राजा छोटी रानी के महल में बैठे थे तब ध्रुव पिता की गोद में जा बैठे। छोटी रानी ने ध्रुव को यह कह कर धकेल दिया कि

"यदि मेरे पेट से जन्म लेते तो इस गोद के अधिकारी होते" ध्रुव रोते हुये अपनी माता के पास आये। माता ने कहा "पुत्र! इस पिता की गोद नहीं मिली तो कोई चिन्ता नहीं, उस पिता की, जो पिताओं का पिता है, गोद में बैठने का यत्न करो"। नारदजी के उपदेश से तप करके यह अचल (ध्रुव) लोक के अधिकारी हुये।

'बलि गुरू तज्यो'—जब राजा बलि १०० वाँ यज्ञ करने लगा तो इन्द्र ने इस भय से कि कहीं यह इन्द्र पद न पा जाय, विष्णु-भगवान् को उनके दान की परीक्षा लेने के लिए उकसाया। विष्णु-भगवान् ने बावन अंगुल का शरीर धारण कर, राजा को वचन-बद्ध करके उससे तीन पैर पृथ्वी माँगी। राजा को, गुरू-शुक्राने इस रहस्य को ताड़कर, दान देने से रोकना चाहा, किन्तु राजा ने सत्य के अनुरोध से गुरू की बात न मानी प्रत्युत उन्हें ही त्याग दिया। विष्णु जी ने विराट् रुप से दो पगों में पृथ्वी और स्वर्ग को नाप लिया। तीसरे पग के लिये विवश हो जब राजा ने अपना शरीर ही उपस्थित कर दिया तो विष्णु ने सन्तुष्ट हो उसे पाताल का राज्य दिया।

भील—'रत्नाकर' नामक एक ब्राह्मण-कुमार पहले भील-कार्य करता था। एक बार सनकादि ऋषि उधर आ निकले, इन्हें भी उसने लूटना चाहा, अन्त में इनके उपदेश से ऐसी तपस्या की कि शरीर पर मिट्टी चढ़ गई और (वाल्मीकि) लग गई। अतएव यही पीछे महर्षि-वाल्मीकि-नाम से विख्यात हुये।

भीलनी—इसका नाम 'शबरी' था। मतंग ऋषि की सेवा करते-करते इसे भगवद्भक्ति प्राप्त हो गई थी। जब रामचन्द्र जी सीता को ढूँढते-ढूँढते इसके आश्रम में पहुँचे, तब यह स्वयं चाख-चाख कर मीठे-मीठे बेर महाराज को भेंट करने लगी। भगवान् ने प्रसन्न हो इसे नवधा-भक्ति का उपदेश देकर मुक्त किया।

भृगु-लात—एक बार देवताओं ने इस बात के परीक्षण के लिये ब्रह्मा, विष्णु, महेष तीनों में कौन सब से बड़ा है, भृगुजी को नियुक्त किया। भृगु जी पहले ब्रह्मा के पास गये और उल्टी सीधी सुनाने लगे, ब्रह्माजी क्रुध हो, शाप देने को उद्यत हो गये। फिर शिवजी के पास गये और वैसी ही बातें करने लगे। शिवजी भी मारने को दौड़े। तब, विष्णु के पास पहुँचे, वे उस समय सो रहे थे, जाते ही भृगु जी ने उनकी छाती में एक लात मारी। विष्णु जी उठे और कहने लगे, "महाराज मेरे कठोर शरीर में लगने से आपके कोमल चरणों में पीड़ा होती होगी, लाइये दबा दूँ।" इस सहन शीलता के कारण विष्णु ही सर्व-श्रेष्ठ हुए।

रन्तिदेव—यह राजा बड़ा दानी था। सम्पूर्ण सम्पत्ति का दान कर डालने पर निर्धन हो, सपरिवार ४८ दिन निराहार और निर्जल रह कर एक दिन परम शिथिल हो रहा था, जैसे ही भोजन का ग्रास उठाया कि ब्रह्माजी भूखे ब्राह्मण के रूप में परीक्षार्थ आ उपस्थित हुए। उनके सत्कार के पश्चात बची हुई सामग्री परिवार को बाँट कर खाने को ही थे कि विष्णु ने शूद्र के रूप में आकर भोजन की याचना की। इनके चले जाने पर शिवजी एक भूखे मनुष्य के रूप में कई भूखे कुत्तों के सहित आ पहुँचे। राजा ने उन्हें और उनके कुत्तों को सेष भोजन भी दे दिया। केवल जल बचा था, उसे पीना ही चाहता था कि भैरव एक प्यासे चाण्डाल के रूप में आगये। उनकी प्रार्थना पर जल उन्हें पिला दिया। इतना होते हुए भी राजा परम प्रसन्न रहा, अतः भगवान् ने उसे परम-गति दी।

'राहु-केतु और भानु-चन्द्रमा'—जब देवताओं और दैत्यों के समुद्र मथने पर अमृत निकला और वह देवताओं में बाँटा गया, तब राहु नामक राक्षस भी देवता का रूप धारण करके उसे पी गया,

जब भगवान् को सूर्य-चन्द्रमा द्वारा यह रहस्य ज्ञात हुआ तो इन्होंने चक्र से राहु के दो टुकड़े कर डाले, जो राहु-केतु कहलाये । उसी शत्रुता के कारण अवसर पाने पर राहु, चन्द्रमा और सूर्य को ग्रस लेता है, वही ग्रहण कहलाता है ।

बकासुर—श्री कृष्णजी जब ५ वर्ष के थे, एक दिन ग्वालों के साथ वन में गो-चरण को गए, वहाँ कंस का भेजा हुआ यह राक्षस बगुले का रूप धर के पर्वताकार आ बैठा और निकट पहुँचने पर इसने श्रीकृष्ण को मुख में बन्द कर लिया । तब श्रीकृष्ण इतने गर्म हुये कि वह उन्हें मुँह में न रख सका । ज्योंही उसने इन्हें उगला, त्योंही इन्होंने इसे चीर डाला ।

शिशुपाल—यह ग्वालियर राज्यान्तर्गत चेदि (चंदेरी) का परम पराक्रमी राजा और श्रीकृष्ण का फुफेरा भाई था । कहते हैं पूर्व जन्म में यह रावण था । ज्योतिषियों के कहे अनुसार इसकी मृत्यु श्रीकृष्ण के हाथ जान इसकी माता ने श्रीकृष्णजी से यह वचन ले लिया था कि "इसके सौ अपराध तक तो मैं इसे क्षमा कर दूंगा" । युधिष्ठिर के यज्ञ में जब श्रीकृष्णजी सर्व-प्रथम पूज्य हुये, तब इसने क्रोध में भर, उन्हें ज्योंही १०० से अधिक गालियाँ दीं, त्योंही भगवान् ने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काट डाला । इसकी आत्मज्योति भगवान् के मुख में प्रवेश कर गई ।

सहस्त्रार्जुन—(कार्त्तवीर्य)—यह महिष्मती का परम प्रतापी राजा था । इसने तपस्या-द्वारा सहस्र भुजाएँ प्राप्त की थी । एक दिन इसने बहुत सी सुन्दर स्त्रियों के साथ जल-क्रीड़ा करते-करते अपनी सहस्र भुजाओं से नर्मदा का प्रवाह रोक दिया । नदी के निकास की ओर रावण शिवजी की पूजा कर रहा था । जल के रुक जाने से रावण की पूजा की सामग्री बह गई । रावण ने क्रुध हो, सहस्त्रार्जुन पर

ाक्रमण कर दिया। सहस्रार्जुन ने इसे पकड़ कर घुड़सात में बाँध
ाया तथा नर्त्तकियों ने इसे एक सुन्दर दीवट समझ इसके सिरों पर
ापक जलाये। कुछ दिन के अनन्तर सहस्रबाहु ने दया करके स्वयं
। इसे छोड़ दिया।

अध्याय-१२

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन रचना का मुख्य अङ्ग है। लेख, निबंध और पुस्तकादि लिखने वालों की संख्या तो परिमित होती है किन्तु प्रायः पत्र लिखने लिखाने का काम तो समाज के हर एक सदस्य को पड़ता ही है। गार्हस्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक ऐसी अनेक आवश्यकताएँ होती हैं जिनके लिए हमें दूरस्थमित्रों, सम्बन्धियों सम्पादकों, शासकों तथा आत्मीयजनों को पत्र लिखना पड़ता है अथवा उनके पत्रों का उत्तर देना पड़ता है। पत्रों में कामकाजी साधारण बातों से लेकर बड़े २ ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक और नैतिक विषयों का उल्लेख करना पड़ता है। उच्च श्रेणी के पत्र योग्य लेखक ही लिख सकते हैं, उन्हें निबंध-रचना के सम्पूर्ण नियमों की जानकारी आवश्यक है। किन्तु साधारण योग्यता तो हर एक अक्षराभ्यासी के लिये अपेक्षित है इसलिये मुख्य २ बातें नीचे लिखी जाती हैं।

पत्र लिखते समय दो प्रकार को बातों पर ध्यान देना चाहिये:—

१—पत्र-सम्बन्धी-सभ्यता अर्थात् शिष्टाचार।

२—मुख्य विषय।

शिष्टाचार

१—शिष्टाचार के लिये यह देखना चाहिये कि हम जिनको पत्र लिख रहे हैं वह पूज्य, मान्य, आत्मीय, सम्बन्धी वा परिचित हैं। प्रचलित-नियम के अनुसार उसके लिये वैसी ही प्रशस्ति (सरनाम) लिखना चाहिये।

२—हिन्दी में प्रचलित-प्रणाली के दो भेद हैं, प्राचीन और नवीन।

पुराने ढंग के व्योपारी, जमींदार, पंडित तथा अन्य लोग अब भी पुरानी प्रथा के अनुसार पत्र लिखते हैं और नये विचार के लोग-नये ढंग से शिक्षा पाये हुए अथवा उनसे सम्पर्क रखने वाले लोग-नवीन परिपाटी से पत्र लिखते हैं।

नवीन परिपाटी में व्यर्थ की बहुतसी बातें न लिख कर मुख्य २ बातों को संक्षेप में लिख देते हैं। आजकल इसी का अधिक प्रचार हो गया है और होता जा रहा है।

पुरानी प्रथा के सरनामें इस प्रकार के होते हैं:—

सब से प्रथम किसी देवता या ईश्वर को नमः लिखते हैं, जैसे— श्री कृष्णायनमः रामायनमः। बड़ों को-सिद्ध श्री सरवोपमा विराजमान सकलगुण निधान श्री..............शुभस्थान..........योग्य लिखी से.................................की नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत, (आदि प्रणाम वाची शब्द)।

नाम से पहले पदवी, अवस्था, योग्यता अथवा केवल सम्मान के लिये 'विद्यानिधि,' 'वयोवृद्ध,' 'विद्वद्वृन्द-शिरोमणि,' 'परमप्रतापा न्विति,' आदि एक वा कई विशेषण और जोड़ देते हैं।

पुरानी प्रथा में नाम के साथ श्री श्री श्री लिखने की भी प्रथा है। पृथक् २ न लिख कर एक बार 'श्री' लिखकर उसके आगे जितनी श्री लिखनी योग्य हों उतने का अंक बना देते हैं, जैसे— श्री ५।

श्री लिखने का नियम यह है गुरू को ६, बड़ों को ५, शत्रु को ४, और बराबर वालों को ३, सेवक को २, और स्त्री को १।

'अत्र कुशलम् तत्रास्तु' अथवा 'आप की कृपा से,' 'भगवान् श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द की कृपा से 'श्री गंगा जी की कृपा से, यहाँ

शल है'...... आपकी कुशल सदैव चाहते हैं'........लिखकर आगे समाचार यह है,' अथवा समाचार एक बंचना जी,' 'अन्त में उत्तर शीघ्र भेजिये,' 'उत्तर शीघ्र दीजिये' तथा शुभमभूयात्, शुभमस्तु, इति शुभम् और तिथि।

छोटों और बराबर वालों को सिद्ध श्री की जगह 'स्वस्ति श्री' तथा प्रणाम की जगह आशीर्वाद, आशीष, 'जै राम जी की' 'जै श्री कृष्ण जी की' 'जै गंगा जी की' तथा राम राम आदि लिखते हैं।

नवीन प्रथा में देवता अथवा ईश्वर के प्रणाम के पीछे पत्र लिखने के कागज पर दाईं ओर कोने पर वह स्थान लिखते हैं जहाँ से पत्र लिखते हैं, फिर उसके ठीक नीचे तिथि वा तारीख।

बड़ों को—'पूज्यपाद,' 'पूज्यचरणेषु,' महामहिम,' 'मान्यवर 'महा-मान्यवर,' 'श्रद्धास्पद,' 'श्रीचरणेषु' प्रशस्ति में लिखकर अन्त में 'कृपापात्र,' 'कृपैषी,' 'प्रणत, 'स्नेह-भाजन,' 'दास,' 'सेवक,' कृपा-भिलाषी,' आदि लिखकर अपना नाम लिख देते हैं।

बराबर वालों को—'प्रियवर,' 'प्रियमित्र,' 'प्रियबंधु,' 'प्रियवर स्नेही जी' प्रियवर विद्यार्थी जी' 'प्रियवर वर्मा जी' आदी उपनाम भी साथ में लिख देते हैं, कोई २ नाम भी 'प्रियवर सत्यव्रत जी' भी लिख देते हैं।

नीचे आपका 'स्नेही' 'मित्र' या केवल 'आपका' वा 'भवदीय' लिख कर अपना नाम लिख देते हैं।

छोटों—को 'चिरंजीव,' 'आयुष्मान्,' 'स्नेहास्पद' आदि और अन्त में 'हितैषी,' 'शुभचिंतक' आदि शब्द लिखते हैं।

स्त्री अपने पतिको—१ 'प्राणपति,' 'प्राणनाथ,' प्राणाधार,' आदि पद लिखकर नीचे केवल 'दासी,' 'सेविका' आदि लिखती है।

सरनामा के पीछे—यदि पत्र का उत्तर देना हो तो "आपका पत्र मिला। आनन्द हुआ" "आपका पत्र पढ़कर आनन्द हुआ"। पत्र

पढ़ते ही आँखों से आनन्दाश्रुओं की धारा बह निकली। यदि कोई आश्चर्य की बात हो तो 'पत्र पढ़ते ही दंग रह गया। 'आश्चर्य का पारावार न रहा।' और यदि कुछ चिन्ताजनक या दुःखद की बात हुई तो 'पत्र को पढ़ कर बड़ी चिन्ता हुई।' 'दुःख का पारावार न रहा।' 'बहुत दुःख हुआ' आदि लिख कर पत्र के विषय से वाक्य रचना को मिला देते हैं।

पत्र स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों में लिखना चाहिये।

पता लिखना

'पता-लिखना पत्र-लेखन-कला का मुख्य अंग है। यों तो कुल पत्र ही स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों में लिखना चाहिये। परन्तु पता लिखने में बड़ी सावधानी रखनी चाहिये। पत्र लिखकर लिफाफे में बन्द कर देते हैं और लिफाफे के ऊपर स्पष्ट अक्षरों में ठीक रीति से पता लिखते हैं। पुराने ढंग से लोग पत्र के ऊपर भी बहुत बड़ा सरनामा लिख देते हैं। नाम के साथ पदवी आदि के अतिरिक्त और कुछ न लिखना चाहिये। नाम के नीचे स्थान। यदि पत्र डाक से भेजना है तो जिला और डाकखाना भी होना आवश्यक है। यदि कार्ड पर खुला हुआ पत्र हो तो उसके पीछे पता लिखना चाहिये।

श्रीयुत पं० रामलालजी शर्मा हिन्दी-प्रेस, प्रयाग। प्रयाग U. P.	टिकट

श्रीयुत पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी c/o साहित्य-कार्यालय, दारागंज, प्रयाग।	टिकट

मुख्य विषय

१—पत्र लिखने से पूर्व सोचना चाहिये कि हमें क्यों पत्र लिखना है। पत्र में जितनी बातें लिखनी हैं उनका संकेत कागज पर लिख लो।

२—यदि दूसरे के पत्र का उत्तर देना है तो देखो वह क्या २ बातें आपसे जानना चाहता है अथवा उसकी बिना इच्छा के क्या २ बता देना चाहते हो। यह सब संकेत कागज पर लिख लो।

३—हरएक संकेत के भाव को सापेक्षवाक्यों में लिख कर पूरा करो।

४—हर बात को क्रमबद्ध लिखो, एक बात पूरी न करलो तब तक दूसरी प्रारंभ न करो। जो लोग बिना संकेतों के एकदम लिखना प्रारंभ कर देते हैं-कोई बात ज़रा सी कहली, झट दूसरी शुरू करदी। वह भी पूरी नहीं हो पाती कि पहिली बात का एक और अंश याद आया-लिखने लगे। ऐसा करने से अपने मन की बात ठीक २ दूसरे के पास नहीं पहुंचा सकते हैं और पत्र पढ़ने वाला बड़ी अड़चन में पड़ जाता है।

५—पत्र की भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिये। यथाशक्ति अपने भाव को सरल वाक्यों में क्रम-बद्ध प्रकाशित करते जाओ।

६—पत्र लिखते समय सोच लो कि जिसको तुम पत्र लिख रहे हो वह सामने उपस्थित है और तुम उससे बातें करते जा रहे हो। ऐसा करने से तुमम्हारी भाषा और क्रम में स्वाभाविकता रहेगी।

७—पत्र समाप्त करने से पहिले अपने संकेतों और पत्र को मिला लो। कोई आवश्यक बात छूट गई हो उसे पूरा कर लो। फिर उचित शब्दों के साथ उसे समाप्त करो।

८—पत्र में कोई उपदेश, कहानी यहाँ निबंध लिखना हो तो उसे इस तरह जोड़ो जिससे यह न पता चले कि यह व्यर्थ ही आडम्बर लाद दिया है।

९—कहानी या लेख के विभाग-निबंध रचना के नियमानुसार-करके उसे पूरा करो। कोई उपदेश, नीति या सार निकलता हो उसे फिर इन शब्दों के साथ -'सारांश यह है' 'भाव यह है' 'तात्पर्य यह है' लिख कर फिर उस पर उसका ध्यान ले जाओ जिसको पत्र लिख रहे हो।

१०—उचित रीति से पत्र को समाप्त करदो।

पुरानी-प्रथा के पत्र लिखने का नमूना

श्री हरिः

लिखि श्री सर्वोपमा विराजमान सकल गुणनिधान शुभस्थान बाड़ी विद्वद्वृन्दशिरोमणि पूज्य मामा जी को योग्य लिखी आगरे से रामरत्न, चन्द्रहंस, नारायणप्रसाद, श्यामाचरण, प्रभुदयाल तथा शिवशंकर का अनेक प्रणाम बंचना जी। अत्र कुशलम् तत्रास्तु। अपरंच हाल यह है कि पत्र आपका आया समाचार जाने। आपने लिखा कि आम पक रहे हैं। इन दिनों में कोई आओ, अचार के लिये भी आम ले जाओ। सो बात यह है आपकी आज्ञा तो माननी ही चाहिये परन्तु कार्य बहुत है। एक पल की भी फ़ुरसत नहीं। मौका लगने पर जरूर कोई न कोई आवेगा। आपके दर्शनों की बड़ी इच्छा है। आपने कहा था कि सावन में हम दाऊजी के दर्शन करने जाँयगे तभी आगरे आँयगे। आशा है अवश्य पधारेंगे। पत्र भेजते रहिये। पत्र न आने से चिन्ता बढ़ जाती है। अधिक क्या लिखूं। इति शुभ मिती आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा सं० १९८२ विक्रमी।

श्रीयुत पं० वासुदेव जी बाड़ी पो० बाड़ी, राज्य धौलपुर।	टिकट

पिता, गुरु, मामा आदि पूज्य लोगों का पत्र के भीतर नाम नहीं देते हैं।

नवीन प्रथा के पत्र का नमूना ।

ओ३म्　　　　रत्नाश्रम, आगरा ।

तिथि……

श्रीयुत वर्मा जी,

बहुत दिन से आपका कोई पत्र नहीं मिला । न मैंने ही कोई पत्र लिखा । नहीं मालूम था सांसारिक पचड़ों में फँसकर हम लोग एक दूसरे से इतने विलग हो जाँयगे । वह दिन क्या हुए । उस समय आज की दशा की कल्पना भी नहीं की जाती थी । आपसे मिलने की बड़ी प्रबल इच्छा है । सांसारिक झगड़ों से अवकाश मिलते ही कभी २ दिन में एक दो बार अवश्य आपका स्मरण हो आता है । घन्टों तक अनुताप की वेदना बनी रहती है । समुद्र की उत्ताल तरंगों में पड़े हुए तिनके की भाँति, वायु के थपेड़ों से अनिच्छित दिशाओं में बहता-फिरता हूं । बहुतेरा सोचा कि इन्हीं लहरों में किसी समय उस तट पर भी पहुँच जाऊँ "दरिद्राणां मनोरथाः" वाली कहावत चरितार्थ हुई । स्थिरता आते ही सवा में उपस्थित हूंगा, अधिक क्या लिखूँ ।

आपका—

रामरत्न

श्रीयुत बा० वृन्दावनलाल वर्मा बी. ए. एल एल. बी. वकील हाईकोर्ट झाँसी (यू० पी०)	टिकट

अध्याय

—मुहावरे मय अर्थ

आँख चढ़ाना— क्रोध करना ।
आँख चुराना— लज्जित होना, छिपना ।
आँख मूँदना— मृत्यु होना ।
उथल-पुथल— उलट-पुलट ।
ऊँचा बोलने वाला— घमण्डी ।
औने-पौने करना—घटा बढी करना ।
कान पकड़ना— भूल स्वीकार करना ।
कान धरना— सावधानी से सुनना ।
कान काटना— हराना
काम तमाम करना— मार डालना
बाल की खाल खींचना— बारीक बात खोजना।
गला घोंटना— फाँसी देना ।
गले का हार होना— बहुत प्यारा ।
गाँठ का पूरा— धनवान।
गाँठ खोलना—खर्च करना ।
गाल बजाना— बात बनाना
चाँद मारना— निशाना मारना ।
चाल चलना— धोखा देना ।
चिकना घड़ा बनना — बे शर्म ।
चित्त देना— ध्यान देना ।
चित्त लगाना—मन लगाना ।
चुटकी लगाना—जेब काटना ।
चुट की मे—बहुत शीघ्र ।
चूर रहना— मस्त रहना ।

मित्र को

गोकुलपुरा, आगरा

प्रिय नरेन्द्र, २० दिसम्बर, सन् १९५३ ई०

आज १० बजे आपका पत्र मिला, पढ़ कर चित्त को बड़ा आनन्द हुआ। बहुत दिनों से आपके पत्र की बाट देख रहा था। कभी-कभी सोचता था कि कहीं आप मुझ से अप्रसन्न न हो गये हों। पत्र से मुझे ज्ञात हुआ है कि आप बड़े दिन की छुट्टियों में अपने भाई के साथ बम्बई की सैर करने जा रहे हैं। यह आपका सौभाग्य है। मैं आज अपने पिताजी को पत्र भेज रहा हूं यदि उनकी आज्ञा मिल जाय तो मैं भी उक्त यात्रा का आनन्द लूटूँगा। पर मुझे अधिक आशा नहीं है। आपको एक कष्ट अवश्य दूँगा। बम्बई में मेरे लिये वैस्ट एण्ड वाच कम्पनी की २५ रुपये तक की एक हाथ घड़ी आपको लानी पड़ेगी। ईश्वर करे आपकी यात्रा सकुशल समाप्त हो।

आपका सुहृद,
सुरेन्द्रकुमार।

बधाई-पत्र

[छोटे भाई के जन्म-दिवस (वर्ष-गाँठ) पर]

अमीनाबाद पार्क,
लखनऊ
१६ मार्च, १९५४ ई०

प्रिय हरी,

आशीर्वाद।

आज तुम्हारे जन्म दिवस पर तुम्हें बधाई देते हुए मुझे अपार हर्ष . । उपहार-स्वरूप एक फाउण्टेनपैन और गुप्ताजी की 'भारत-भारती' की एक प्रति भेज रहा हूं।

ईश्वर करे तुम चिरंजीव हो और जन्म-दिवस के अनेक उत्सवों का आनन्द लूटो, यही मेरी शुभ कामना है। सस्नेह,

तुम्हारा हितेच्छु,
जगदीशचन्द्र

शोक-पत्र

(मित्र को उसकी पत्नी की मृत्यु पर)

गोकुलपुरा,
आगरा।
१७ मार्च, १६५० ई०

प्रिय रामगोपालजी,

सप्रेम नमस्ते।

आज आपकी पत्नी की मृत्यु का दुःखद संदेश सुनकर अपार शोक हुआ। ईश्वर की गति कौन जानता है ? अभी एक सप्ताह पूर्व जब मैं आपके यहां आया था तब वे पूर्ण स्वस्थ थीं। उनका सा अच्छा स्वास्थ्य मैंने कम स्त्रियों का देखा है। सचमुच आपके ऊपर विशाल वज्रपात हुआ है। आपकी इस क्षति की पूर्ति किसी प्रकार नहीं हो सकती। आपकी पत्नी सरलता, सौजन्यता, शिष्टता, एवं सदाचार की साक्षात् मूर्ति थीं। उनकी विनोद-प्रियता, मधुर भाषण और आदर-सत्कार का स्मरण करके नेत्रों से अश्रु धारा प्रवाहित होने लगती है। अपने पति पर सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाली आदर्श महिलाओं में उनका उच्च स्थान था।

ऐसे रमणी-रत्न के खो जाने पर मैं आपके साथ हार्दिक समवेदना प्रगट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह आपको इस असह्य दुःख सहने की शक्ति और दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

भवदीय शुभाकांक्षी,
हरिहरनिवास

(उत्तर)

हरिहर-भवन,
मेरठ
२० मार्च, १६५० ई०

प्रिय हरिहरनिवासजी,

सप्रेम वन्दे !

आपके समवेदना-सूचक पत्र के लिये अनेक धन्यवाद । इससे मुझे पर्याप्त सान्त्वना मिली है । पत्नी की मृत्यु ने तो मेरे हृदय को विदीर्ण कर दिया है, परन्तु आप लोगों की सहानुभूति मुझे शक्ति प्रदान कर रही है ।

आपका,
रामगोपाल ।

विवाह का निमन्त्रण-पत्र

॥ ॐ ॥

श्री गणेशायनमः

सिद्धसदन करिवर-वदन, बुद्धिराशि गणराज ।
विघ्न-हरन मंगल करन, सफल करहु मम काज ॥

श्रीमान्,

सेवा में सविनय निवेदन है कि परब्रह्म परमात्मा की असीम अनुकम्पा से चिरंजीवी गुलाबराय के सुपुत्र हरदयाल का पाणिग्रहण संस्कार बुलन्दशहर के ईटारोड़ी मुहल्ला निवासी डाक्टर गौरीशङ्करजी की सुपुत्री शान्तिदेवी के साथ शुभ मिती वैशाख शुक्ला ११ मंगलवार

सम्वत् १६५५ वि० तदनुसार ता० १० मई सन् १६३८ ई० को होना निश्चित हुआ है। अतः विनम्र प्रार्थना है कि आप इस शुभ अवसर पर अपने इष्ट जनों के साथ पधार कर विवाह की शोभा बढ़ाइएगा और हमें अनुग्रहीत कीजिएगा।

इगलास,
अलीगढ़

आपके दर्शनाभिलाषी—
कुंजबिहारीलाल मगनीराम गुप्त

प्रीति-भोज का निमन्त्रण-पत्र

श्रीमान्,

आपको यह सूचित करते हुए मुझे अपार हर्ष है कि मेरे सुपुत्र प्रेमनारायण ने इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। इसके उपलक्ष में मैंने एक प्रीति-भोज ता० २८ जून सन् १६५४ ई० को सायंकाल ७॥ बजे देने का निश्चय किया है। अतः आपसे सविनय निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर पधारकर मुझे अनुगृहीत कीजियेगा।

शान्तिकुटीर,
फीरोजाबाद

आपका दर्शनाभिलाषी,
अमृतलाल गुप्त

पुस्तकालय के संचालक को पत्र

इगलास,
अलीगढ़
१७ मई, सन् १६४६ ई०

श्री संचालकजी,

साहित्य-रत्न भण्डार,

टण्डी सड़क, आगरा।

प्रिय महाशय,

मैं इस वर्ष हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग की मध्यमा परीक्षा में बैठ रहा हूं। अतएव मुझे निम्नाङ्कित पुस्तकों की आवश्यकता है। कृपया उचित कमीशन काटकर शीघ्र से शीघ्र इन पुस्तकों को वी० पी० पार्सल से भेज दीजिएगा।

(१) व्रजमाधुरीसार	(हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग)
(२) कवितावली	(हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग)
(३) प्रिय-प्रवास	(खड्गविलास प्रेस, बाँकी पुर)
(४) उत्तर-रामचरित	(रत्नाश्रम आगरा)
(५) तुलसी दास	(नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
(६) भूषण-ग्रन्थावली	(हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग)

भवदीय,
गंगाप्रसाद सारस्वत

समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र

श्री सम्पादकजी,
'दैनिक प्रताप',
कानपुर

महाशय,

क्या आप मुझे अपने पत्र द्वारा सरकार का ध्यान अपने गाँव बिठूर के किसानों की उस करुणाजनक दुर्दशा की ओर आकर्षित करने की आज्ञा दीजिएगा जो इस वर्ष अनावृष्टि के कारण उनकी हुई है ?

बिठूर के किसानों के दुर्भाग्य से इस वर्ष बिठूर में वर्षा नहीं हुई है। असाढ़ के अन्त में कुछ पानी बरस गया था। तभी किसानों ने खेत बो दिये थे। उसके पश्चात् आज तक वर्षा नहीं हुई है। परिणाम

दिया था कि मैं प्रति माह का किराया चुकाता रहूँगा। इस समय आप पर दो माह का किराया ५० रुपये चाहिए।

कृपया पत्र देखते ही ५० रुपये भेज दीजिएगा, अन्यथा आपके ऊपर अदालती कार्यवाही की जायगी।

भवदीय,
लक्ष्मीनारायण

छुट्टी का प्रार्थना-पत्र

श्रीमानन् हैडमास्टर साहब,
बैपटिस्ट हाई स्कूल,
आगरा

श्रीमान्,

सेवा में सादर निवेदन है कि मेरे बड़े भाई का विवाह ता० १५ मार्च सन् १६५४ को है। मैं इस विवाह में सम्मिलित होने के लिए ता० १४ मार्च को घर जाना चाहता हूं। अतः प्रार्थना है कि आप मुझे ता० १४ से १६ मार्च तक की छुट्टी दे दीजिएगा। आशा है आप उक्त दिनों की छुट्टी देकर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

आगरा — रमेशचन्द्र पन्त
ता० १३ मई, सन् १६२६ ई० — कक्षा ६ ब

शोक-प्रस्ताव

हिन्दी-साहित्य-विद्यालय, आगरा के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की यह सभा हिन्दी के उत्कृष्ट कवि, नाटककार, कहानी तथा उपन्यास लेखक बाबू जयशंकर 'प्रसाद' की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रगट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह शोक-संतप्त को यह असह्य दुःख सहने के लिए शक्ति तथा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

माता को

जोधपुर,

पूज्य माताजी, जून ६, १६५४.

आपका पत्र मिला। पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। अपने पिछले पत्र में मैंने आपको लिखा था कि श्याम हाई स्कूल की परीक्षा में पास हो गया है। मैंने सोचा था कि आगे पढ़ने के लिये जशवन्त कॉलेज में भरती करवा दूं। मगर सब लोग उसे व्यवसाय में लगाना चाहते हैं। कहते हैं कि और पढ़ने से फिर क्या होगा? नौकरियाँ आज कल लाख कोशिश करने पर भी नहीं मिलती। जब तक B. A. पास करेगा तब तक तो वह बहुत कमालेगा।

दूसरी बात जिस पर आप से मुझे सलाह लेनी है वह यह है कि आज कल सोना बहुत तेज हो रहा है। मैं तो नहीं चाहती परन्तु और लोगों की राय है कि दस बीस तोले इस समय बेच दिया जाय। जब सस्ता होगा फिर खरीद लिया जायगा। ऐसा करने से काफी लाभ होने की सम्भावना है। जैसी आप की राय हो लिखियेगा। बच्चे आपको नमस्ते कहते हैं।

आपकी प्रिय पुत्री
विमला

पिता को

(पढ़ाई के सम्बन्ध में)

शिव निवास
सरदारपुरा, २ जून, १६५४ ई०

मान्यवर पिताजी,

आपका पत्र पढ़ कर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। अब मेरा स्वास्थ्य ठीक है। मेरा नाम गांधी पाठशाला में छठी कक्षा में लिखा दिया गया है।

मुझे कई दिन तक पाठशाला में अच्छा न लगा । मैं वहाँ किसी को भी नहीं जानता था । सभी चीजें नई थीं। अब मेरे कई मित्र हो गये हैं। और अब जी लगने लग गया है । पाठशाला बड़ी है। इस में १० जमात तक की पढ़ाई होती है। पास में छोटा बगीचा वो खेलने का बड़ा मैदान है।

यहाँ पर अध्यापक अच्छी प्रकार से पढ़ाते हैं । इस पाठशाला में बहुत से बालक हैं। इससे पूर्व मैंने कभी भी पाठशाला में इतने बालक नहीं देखे। पाठशाला का कार्य क्रम सुबह ७ बजे से ११॥ बजे तक होता है। सब से पहले प्रार्थना होती है । पाठशाला में ८ घंटे होते हैं और ११। बजे छुट्टी होती है। ड्रिल का घंटा भी होता है जिससे बालकों का स्वास्थ्य ठीक रहता है। कभी २ व्याख्यान् वो नाटक भी खेला जाता है। जो बालक अच्छा काम करते हैं उनकों पारितोषिक भी दिया जाता है।

मेरा विचार आगामी छुट्टी में आने का है श्याम, मन्नू और वल्लभ को याद करना।

भवदीय
विट्ठल नाथ

बड़े भाई को

नवचौक
पुरानी कोटवाली जोधपुर
अगस्थ २, १६५४

पूज्य भ्राता,

बहुत दिनों से आप का पत्र मिला । यह जान कर कि शान्ति अब अच्छी हो रही है मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । अजमेर का जलवायु अच्छा नहीं है। काफी समय तक उसको पथ्य से रखने की आवश्यकता है।

आपने लिखा था कि मैं घर आने वाला हूँ। होली निकल गई, जन्माष्टमी भी हो गई, आप नहीं पधारे। सभी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप की छुट्टी भी मंजूर हो गई। दरवाजे पर तांगें की आहट पा कर यह समझता हूँ कि भाई साहब पधार गये परन्तु आप को न देख कर निराश लौटना पड़ता है। आप डाकखाने की नौकरी छोड़ कर कोई दूसरी क्यों न कर लेते? श्याम, नारायण और भाभी को देखने की बहुत इच्छा है। आप सब को साथ लेकर पधारें। माताजी आप को आशीर्वाद कहती है। विट्ठल का आगे पढ़ने का विचार है।

आपका अनुज
रामानन्द

नियुक्ति (आवेदन) पत्र

सेवामें,

प्रबन्धक महोदय,
महिला विद्यालय,
लखनऊ

महोदय,

यह जान कर कि आपके विद्यालय में संस्कृत अध्यापिका की जरुरत है यह पत्र भेज कर प्रार्थना है कि जाती है कि मुझे उस पद पर नियुक्त किया जाय।

योग्यता के विषय में निवेदन है कि मैंने गत वर्ष प्रयाग विश्व विद्यालय से हिन्दी और संस्कृत में बी० ए० पास की थी। संस्कृत में मैंने विशिष्टता प्राप्त की थी। कुछ समय तक मैंने हाई स्कूल में अध्यापिका का कार्य भी किया है।

मेरी आयु इस समय २२ वर्ष की है। स्वस्थ हूँ तथा छात्राओं के व्यायाम सम्बन्धी कार्यों में भी रुची रखती हूं।

यदि आप उपयुक्त पद पर मुझे नियुक्त करने की कृपा करेंगी त
ापको विश्वास दिलाती हूं कि मेरा कार्य सदैव संतोष जनक रहेगा।

ाहगंज, लखनऊ आपकी कृपाकांक्षी
४ अगस्त, १९५४ कृष्णा कुमारी

अध्याय—

वर्ण विभाग

वर्ण अर्थात् अक्षर दो प्रकार के होते हैं:—

(१) स्वर (२) व्यञ्जन

स्वर

जिन अक्षरों का उच्चारण अपने आप या स्वयम् होता है उन्हें
वर कहते हैं।

जिन अक्षरों का उच्चारण बिना स्वर की सहायता के नहीं होता
न्हें व्यञ्जन कहते हैं।

स्वर निम्न लिखित हैं:—
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ।

स्वर तीन प्रकार के होते हैं:—

(१) एक मात्रिक। (२) द्विमात्रिक। (३) प्लुत स्वर।

जिस स्वर के उच्चारण में थोड़ा समय लगता है उसको ह्रस्व य
एक मात्रिक स्वर कहते हैं।
जैसे— अ, इ, उ, ऋ।

जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व का दूना समय लगता है उसको दीर्घ या द्विमात्रिक स्वर कहते हैं जैसे— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ औ

जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व का तिगुना समय लगता है उसको प्लुत स्वर कहते हैं जैसे – ओ३म ।

व्यञ्जन

निम्नलिखित अक्षर व्यञ्जन हैं:—

क ख ग घ ङ — कवर्ग।
च छ ज झ ञ — चवर्ग।
ट ठ ड ढ ण — टवर्ग।
त थ द ध न — तवर्ग।
प फ ब भ म — पवर्ग।
य र ल व — अन्तस्थ।
श ष स ह — ऊष्म।

१. जिन अक्षरों का उच्चारण कण्ठ से होता है उन्हें कण्ठ्य अक्षर कहते हैं जैसे-क ख ग घ ङ अ आ।

२. जिन अक्षरों का उच्चारण तालु से होता है उन्हें तालव्य अक्षर कहते है जैसे— च छ ज झ ञ श य इ ई।

३. जिन अक्षरों का उच्चारण मूर्द्धा से होता है उन्हें मूर्द्धन्य अक्षर कहते हैं जैसे— ट ठ ड ढ ण र ष ऋ।

४. जिन अक्षरों का उच्चारण दाँतों से होता है उन्हें दाँन्त्य अक्षर कहते हैं जैसे— त थ द ध न ल स।

५. जिन अक्षरों का उच्चारण ओठों से होता है उन्हें ओष्ठ्य अक्षर कहते हैं जैसे— प फ ब भ म उ ऊ।

जिन अक्षरों का उच्चारण कण्ठ और तालु से होता है उन्हें कण्ठ तालव्य अक्षर कहते हैं जैसे — ए ऐ। जिन अक्षरों का उच्चारण कण्ठ और ओठों से होता है उन्हें कण्ठोष्ठ्य अक्षर कहते हैं जैसे— ओ औ। जिन अक्षरों का उच्चारण दाँतों और ओठों से होता है उन्हें दन्तोष्ठ्य अक्षर कहते है जैसे— व। जिन अक्षरों का उच्चारण नासिका द्वारा होता है उन्हें सानुनासिक अक्षर कहते हैं जैसे—ङ ञ ण न म।

जब दो या दो से अधिक वर्णो के मध्य में स्वर नहीं होता तब वे आपस में मिलकर लिखे जाते है जिन्हें संयुक्ताक्षर कहते हैं जैसे— पक्का, अच्छा, स्त्री।

विसर्ग संधियों के सरल नियम

विसर्ग के साथ जब स्वर या व्यंजन का मेल हो जाता है तो उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

जैसे— मनः+ हर=मनोहर, निः+आधार=निराधार

(१) यदि विसर्ग से पहिले इ या उ हो और उसके परे क ख प फ हो तो विसर्ग ष् हो जाता है। जैसे निः+कपट=निष्कपट।

निः+पाप=निष्पाप।

(२) यदि विसर्ग से पहिले अ हो और उसके परे ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह, हो तो विसर्ग ओ हो जाता है। जैसे, मनः+हर=मनोहर, तेजः+मय= तेजोमय।

नोट—इस अवस्था में यदि विसर्ग के परे अ हो तो अ का लोप हो जाता है और खंडाकार का चिन्ह् (ऽ) लिख दिया जाता है जैसे मनः+अवधान=मनोऽवधान।

(३) यदि विसर्ग से परे च, छ, हो तो विसर्ग श् हो जाता है, त, थ हो तो वह स् हो जाता है और ट, ठ हो तो वह ष् हो जाता है। जैसे निः+चल=निश्चल। निः+छल=निश्छल।

(४) यदि विसर्ग के पहिले अ, आ को छोड़कर दूसरा स्वर हो और उसके परे ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह अथवा कोई स्वर हो तो विसर्ग र् हो जाता है। जैसे, निः+धन=निर्धन। निः+गुण=निर्गुण।

(५) यदि विसर्ग के पहिले अ इ उ स्वर हो और उसके परे र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उसके पहिले का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे— निः+रस=नीरस, निः+रोग=नीरोग।

— विराम चिन्ह —

हिन्दी में केवल एक ही विराम है अर्थात् (।) जिसको पूर्ण-विराम कहते हैं। परन्तु आधुनिक समय में हिन्दी में अंग्रेजी भाषा के निम्न लिखित विरामों का भी प्रयोग होता है:—

(,), (;) (:—), (?), (!), (" "), (—)

(१) (,) इस चिन्ह को अंग्रेजी में कामा और हिन्दी में अल्प-विराम कहते हैं। इसका प्रयोग उस समय होता है जब एक ही प्रकार के कई शब्दों या वाक्यांशों का प्रयोग एक ही अवस्था में होता है। इस दशा में अन्त के दो शब्दों के मध्य में और का प्रयोग होता है। जैसे-

(१) राम, श्याम, मोहन, लल्लू और कल्लू आये।

(२) यह लड़का चंचल, नटखट और जुआरी है।

(३) जिसका हृदय गिरा हुआ है, जिसका महास नष्ट हो गया है, जिसकी कमर झुक गई है, तथा जिसका कन्धा गिर गया है, अर्थात् जो पुरुषार्थ रहित है, उस मनुष्य की अवस्था शोचनीय है।

(२) (;) इस चिन्ह को अंग्रेजी में सेमीकोलन और हिन्दी में अर्धविराम कहते हैं। प्रायः इस चिन्ह का प्रयोग स्वतन्त्र वाक्यों को अलग करने के लिये होता है। जैसे— श्रीरामचन्द्रजी १४ वर्ष के पश्चात् अयोध्या लौट आये; तब उनका राज्याभिषेक किया गया।

नोटः— इस चिन्ह का प्रयोग हिन्दी में बहुत कम होता है। इस के स्थान पर अल्प विराम का ही प्रयोग किया जाता है।

(३) (:—) इस को कोलन और डैस कहते हैं। इसका का प्रयोग उस समय होता है जब किसी वाक्य के आगे कई बातें क्रमांक से लिखी जाती हैं। जैसे निम्न लिखित शब्दों की परिभाषा लिखोः—

(१) संज्ञा (२) सर्वनाम (३) क्रिया।

(४) (?) इस को प्रश्नवाचक चिन्ह कहते हैं। इस का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम के बदले होता है। जैसे तुम कहाँ जा रहे हो ?

(५) (!) इसको विस्मयादि बोधक चिन्ह कहते हैं। इसका प्रयोग कहीं विस्मयादि बोधक वाक्य के अन्त में, कहीं विस्मयादि बोधक अव्यय के अन्त में और कहीं सम्बोधन कारक की संज्ञा के अन्त में होता हैं। जैसे— हैं, उसने सिंह को मारा ! हाय ! उसके पिता का देहान्त हो गया।

(६) (" ") इस चिन्ह को उल्टा विराम कहते है। इसका प्रयोग किसी की कही हुई बात के आदि और अन्त में होता है। जैसे किसी महात्मा ने कहा कि "जिस कुल की स्त्रियाँ दुखी होती हैं उस कुल का नाश हो जाता है"

(७) (-) इसको हाइफन कहते है। इसका प्रयोग सामासिक शब्दों के मध्य में होता है जैसे— हे रवि-कुल-कलंक।
मानस-सलिल-सुधा-प्रतिपाली।

(८) (।) इसको विराम कहते हैं। इसका प्रयोग प्रत्येक वाक्य के अन्त में आवश्यक है। वाक्यांशों के आदि में इसका प्रयोग कभी न होना चाहिये।

(६) (।।) इसको पूर्ण विराम कहते हैं। जब सम्पूर्ण आशय समाप्त हो जाता है तब उस के अन्त में उसका प्रयोग होता है।

अध्याय

वाक्य विचार

वाक्य

जिस पद-समूह के योग से कोई पूरा भाव प्रकाशित हो जाय, उसे, 'वाक्य' कहते हैं। वाक्य के पदों में परस्पर अपेक्षा होती है । किसी भाव को प्रकाशित करने के लिये व्यवहृत-पद-समूह में परस्पर सम्बन्ध होना चाहिये, नहीं तो वाक्य का अर्थ समझ में नहीं आवेगा। वाक्य के अन्तर्गत पदों के सम्बन्ध को 'आकांक्षा' 'योग्यता' और 'क्रम' कहते हैं ।

आकांक्षा—मतलब समझने के लिये एक पद को सुन कर दूसरे पद के सुनने की इच्छा होती है, उसें आकांक्षा' कहते हैं; जैसे 'पेड़ से' इसके पीछे यह सुनने की इच्छा होती है 'पत्ते गिरते हैं'। 'वे सब चले गये' इसके पीछे यह कहना पड़ेगा— 'जो रात को यहाँ ठहरे थे'।

योग्यता—वाक्य के पदों का अन्वय करने के समय अर्थ-सम्बन्धी बाधा न हो, जैसे—'रेत पर कोई तैरने लगा ।' यहाँ योग्यता के अनुसार पद विन्यास नहीं है, रेत पर कोई नहीं तैरता, पानी पर तैरते हैं।

क्रम—योग्यता और आकांक्षा-युक्त पदों के ठीक रीति से स्थापन करने को 'क्रम' कहते हैं, जैसे—'पानी' इसके पीछे ही "बरसता है" लिखना पड़ेगा।

'पिता की' बड़ा धर्म है, आज्ञा मानना।'

इसमें क्रम नहीं है, अतः वाक्य नहीं है।

वाक्य यह है 'पिता की आज्ञा मानना बड़ा धर्म है'। अतः दूसरे रूप में वाक्य की परिभाषा इस प्रकार हुई—"किसी आकांक्षा, योग्यता और क्रम सहित पद-समूह को 'वाक्य' कहते हैं।

वाक्यांश

जिन सब पदों से मन का पूरा भाव प्रकाशित न होकर, केवल भाव का कुछ भाग प्रकाशित हो उसे 'वाक्यांश' कहते हैं जैसे-'महाराज बड़ौदा ने कहा, 'कल रात को महात्मा गाँधी'।

कहीं कहीं एक पद भी वाक्यांश हो जाता है, जैसे 'राम गये' में दोनों पद वाक्यांश हैं। 'वह कार्य करना है, जो कल कहा था।' इसमें दोनों वाक्य, वाक्यांश हैं।

वाक्य खंड।

वायु वेग से वह रही है। पुष्प खिल रहे हैं। भारतवर्ष सुहावना प्रदेश है। मोहन परोपकारी बालक है।

इन वाक्यों में 'पुष्प' 'वायु' 'भारतवर्ष' और 'मोहन' के नाम हैं। हर एक वाक्य में किसी नाम के संबंध में कुछ कहा गया है।

वाक्य में जिस पदार्थ अथवा प्राणी के संबंध में कुछ चर्चा की जाती है उसे **उद्देश्य** कहते हैं। किसी पदार्थ या प्राणी के बारे में जो कुछ वर्णन होता है उसे **विधेय** कहते हैं, ऊपर के वाक्यों की उद्देश्य-विधेय -तालिका नीचे दी जाती है:—

वाक्य भेद

(१) सरल वाक्य

सरल वाक्य में एक उद्देश्य वा कर्त्ता और एक विधेय वा समापिका क्रिया अवश्य होती है। प्रायः उद्देश्य और विधेय अन्य नाना प्रकार के पदों के मिलने से बढ़ जाते हैं, इसलिये एक वाक्य में दो से अधिक पद होते हैं। वाक्य में उद्देश्य और विधेय के अतिरिक्त जितने पद हों उनमें से कुछ तो उद्देश्य के सहकारी होंगे और कुछ विधेय के। सहकारी पद सहित मुख्य उद्देश्य, उद्देश्य के अन्तर्गत और सहकारी पद सहित मुख्यविधेय, विधेय अंश के अन्तर्गत समझे जाते हैं। यदि क्रिया सकर्मक होगी तो उसका कर्म भी विधेयवाच्य होगा; जैसे- 'घोड़ा घास खाता है'—इसमें घास सहित खाता है पद विधेय होगा। उद्देश्य और विधेय जिस प्रकार सहकारी पदों के मिलने से बढ़ जाते हैं; उसी प्रकार कर्मादि भी अन्य पदों से बढ़ते हैं; जैसे'—"मुझे एक पका फल मिला" इससे 'फल' कर्म 'एक' और 'पका' दो विशेषणों द्वारा बढ़ा हुआ है। विशेष्य, (संज्ञा) सर्वनाम और विशेष्य रूप से आया हुआ वाक्यांश, विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा यह उद्देश्य और कर्म रूप में आते हैं, जैसे—

विशेष्य—राम प्रदर्शिनी देखता है।

[illegible] है।

शेष्य रूप में आया विशेषण—शिक्षित, अशिक्षितों को घृणा से हैं।

क्रियावाचक संज्ञा—खाना कहने से भोजन करना समझा जाता है

वाक्यांश—बिना पूछे ले जाना चोरी करना कहाता है।

जिन पदों के नीचे रेखा है वह उद्देश्य और जिनके ऊपर रेखा है कर्म हैं।

विशेषण, विशेषण भाव वाले विशेष्यादि पद और वाक्यांश के लें से उद्देश्य वा कर्म बढ़ता है, यथा—

विशेषण द्वारा—सुन्दर बालक उत्तम पुस्तक पढ़ता है।

सम्बंध पद द्वारा—राम का मित्र हमारी बात सुनता था।

विशेष्य द्वारा—राजा रामचन्द्र पुरोहित वशिष्ठ से कहने लगे।

वाक्यांश द्वारा—मंत्री ने विद्रोह का संवाद पाकर, उसमें लिप्त सब को पकड़वा दिया।

नीचे की रेखा वाले पदों से विशेष्य और ऊपर की रेखा वाले पदों से कर्म बढ़ाया गया है।

एक प्रकार के दो वा बहुत से पदों की सहायता से भी उद्देश्य और कर्म बढ़ाया जा सकता है, यथा—

बीस वर्ष की आयु वाला राम का पुत्र मोहन अत्यन्त लाभदायक दो सौ पन्ने की पुस्तक लिख रहा है।

विधेय

एक ही क्रियापद पूरा अर्थ प्रकाशित करे उसे 'सरल विधेय' कहते हैं।

यथा—मैं पुस्तक लिखता हूँ इस वाक्य में 'लिखता हूँ' एक ही क्रिया पद के द्वारा वक्ता का सम्पूर्ण आशय प्रकाशित होजाता है, इसलिए यह सरल विधेय है।

विधेय यदि अपूर्ण अर्थप्रकाशक क्रिया हो और उसके साथ पूर्ण अर्थप्रकाशक सहकारी पद हो तो, उस विधेय को 'जटिल विधेय' कहते हैं; जैसे—आकाश परिष्कृत हुआ, सूर्य उदय हुआ. यहां परिष्कृत और उदय पद न होने से केवल हुआ से पूरा अर्थ प्रकाशित नहीं होता इसलिये 'उदय' 'परिष्कृत' पद 'हुआ' सहित जटिल विधेय हैं।

क्रियविशेषण वा क्रिया विशेषण भाव वाले पद या वाक्यांश द्वारा विधेय परिवर्द्धित होता है; यथा—राम शीघ्र आया है उसने बहुत समय बिता दिया। तुम स्पष्ट करके कहो। यत्नपूर्वक कार्य करो।

करण, अपादान और अधिकरण पद भी विधेय को परिवर्द्धित करते हैं; यथा—मैं आँखों से देखता हू। हृदय से चाहता हूं। लाठी से मारता हूं। आकाश से पानी गिरता है। पक्षी आकाश में उड़ता है। वह कल रात को आया था। सूर्योदय से अन्धकार दूर हुआ।

असमापिका क्रिया द्वारा भी विधेय परिवर्द्धित होता है; यथाः—राम दौड़ते दौड़ते कहने लगा, सुन्दर दृश्य देखते देखते अवाक रह गया।

अर्थ के विचार से विधेय वर्द्धक के छः भेद होते हैं; जैसे—

कालवाचक—कल आऊँगा। उसका उत्तर आने तक ठहरुँगा।

रीतिवाचक—धीरे धीरे ज्ञान होता है। शान्ति से सोचो।

परिमाणवाचक—थोड़ा सोचना भी चाहिये।

कारणवाचक—तुम्हारे **दर्शन से** प्राण बच गये।

कार्यवाचक—**मेरे लिये** ऐसा क्यों करते हो।

स्थानवाचक—**मेरे पास** वह आया, **यहां से** चला गया।

(२) जटिल वाक्य

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय मुख्य हो और उसकी सहायक एक या कई क्रियाएं हों उसको **जटिल वाक्य** कहते हैं; यथा —"मैं जानता हूँ उसने बड़ा अन्याय किया है।" 'किस प्रकार ऐसा हुआ यह मैं नहीं समझ सकता।'

जटिल वाक्य का जो अंश प्रधान उद्देश्य और प्रधान विधेय है, उसको प्रधान अंश, और अन्य भाग को आनुषङ्गिक कहते हैं। पहले उदाहरण में **'मैं जानता हूँ'** प्रधान अंश और **'उसने बड़ा अन्याय किया'** यह इस अंश का आनुषङ्गिक है। आनुषङ्गिक अंश दो प्रकार का होता है—**एक विशेष्य भाव प्राप्त दूसरा विशेषण भाव प्राप्त।**

जो आनुषङ्गिक वाक्य विशेष्य भाव वाला हो उसे 'विशेष्य भावापन्न वाक्य' कहते हैं, जैसे:—उसने जो साहस का काम किया था, मुझे सब मालूम है; अर्थात् उसका साहस कार्य मुझे मालूम है। 'मैं देख कर आया हूँ' उसकी कैसी दशा है, अर्थात् मैं उसकी दशा देख कर आया हूँ। 'मैं इच्छा करता हूँ कि, सब सुखी हों' अर्थात् मैं सब के सुखी की इच्छा करता हूँ।

जटिल वाक्य में "विशेष्य भावापन्न आनुषङ्गिक अंश" उद्देश्य और कर्म दोनों हो सकते हैं। पहले उदाहरण में आनुषङ्गिक अंश उद्देश्य और दूसरे व तीसरे में कर्म रूप से आया है।

जो आनुषङ्गिक वाक्य किसी विशेष्य व सर्वनाम की क्रिया का गुण प्रकाश करे उसे 'विशेषण-भावापन्न-वाक्य' कहते हैं, 'जो मनुष्य केवल स्वार्थ देखता है सो प्रकृत-सुखी नहीं होता', अर्थात् स्वार्थी मनुष्य सच्चा सुखी नहीं होता। 'उन्होंने जो बात कही थी मुझे भली प्रकार याद है,' अर्थात् उनकी कही हुई बात मुझे भली प्रकार याद है।

आनुषङ्गिक-विशेषण-भावापन्न वाक्य, उद्देश्य और कर्म और विधेय विशेषण भी हो सकता है; यथा—'आज जो वृष्टि हुई है, उससे विशेष उपकार होगा;' अर्थात्, आज की वृष्टि से विशेष उपकार होगा। 'उन्होंने जो रुपया भेजा था, मुझे मिल गया' अर्थात् उनका भेजा हुआ रुपया मुझे मिल गया। इस औषध को जब तुम खाओगे तभी लाभ पहुँचायगी, अर्थात्, यह औषध खाते ही लाभ पहुँचायगी। प्रथम उदाहरण वाक्य में, आनुषङ्गिक-वाक्य उद्देश्य का, दूसरे में कर्म का, तीसरे में विधेय का विशेषण है। इसलिये प्रथम दो 'विशेषण' और अन्तिम आनुषङ्गिक-वाक्य क्रिया-विशेषण भाव वाला है।

(३) यौगिक वाक्य

जिसमें अनेक या कुछ सरल और कुछ जटिल वाक्यों का मेल हो उसे 'यौगिक वाक्य' कहते हैं—जैसे—राम तो आये हैं पर, हरि नहीं आवेंगे। राम जाँयगे अथवा हरि जाँयगे। यहाँ भिन्न भिन्न सरल वाक्य 'और' 'अथवा किन्तु' योजकों द्वारा मिलकर यौगिक वाक्य होते हैं।

वाक्य विश्लेषण।

सरल वाक्यों का विश्लेषण इस प्रकार होगा—

१—पहले उद्देश्य-पद निर्देश करना पड़ेगा।

२—जिन २ पदों के द्वारा उद्देश्य बढ़ाया है उनका निर्देश करना पड़ेगा।

३—विधेय पद का निर्देश। यदि विधेय पद पूर्ण अर्थ प्रकाशक नहीं है तो पूर्ण-अर्थ-प्रकाशक अंश भी उसी के साथ निर्देश करना पड़ेगा।

१—यदि विधेय सकर्मक क्रिया है तो उसका कर्म निर्देश करना पड़ेगा।
२—कर्म पद जिन पदों के द्वारा बढ़ाया गया है उनका निर्देश करना पड़ेगा।
३—विधेय पद जिन सब पदों के द्वारा बढ़ाया गया है उन सब का निर्देश करना पड़ेगा।

विश्लेषण चित्र।

(१) बन्दर की टाँगें मजबूत होती हैं।
(२) कल से पानी बरस रहा है।
(३) धीरजवान मनुष्य कठिनाइयों से नहीं घबड़ाता है।
(४) चरित्र ही मनुष्य का सब से बढ़ कर गहना है।
(५) हिन्दी-भाषा का इतिहास अभी तक नहीं मिला।
(६) राम ने सुन्दर पुस्तक दान की।

	उद्देश्य अंश		विधेय अंश				
	मुख्य उद्देश्य	उद्देश्य विस्तार	विधेय	विधेय पूरक	कर्म: कर्म	कर्म: विशेषण	विधेय विस्तार
१	टाँगें	बन्दर की	होती हैं	मजबूत			
२	पानी		रहा है	बरस			कल से
३	मनुष्य	धीरजवान	घबड़ाता है	नहीं			कठिनाइयों से
४	चरित्र ही		है	गहना			मनुष्य का सबसे बढ़कर
५	इतिहास	हिन्दी भाषा का	मिला	नहीं			अभी तक
६	राम ने		की	दान	पुस्तक	सुन्दर	

जटिल वाक्य ।

पहले जटिल वाक्य में कौन अंश प्रधान है और कौन आनुषङ्गिक है, यह ढूंढ़ना पड़ेगा। फिर आनुषङ्गिक वाक्य को 'पद विशेष' समझ कर, समग्र वाक्य का विश्लेषण करना पड़ेगा । फिर आनुषङ्गिक वाक्य का पृथक् रूप से विश्लेषण करना पड़ेगा, यथा—

वाक्य—"आज वह न आवेंगे, मैंने पहिले ही कहा था" ।

इस जटिल वाक्य में 'मैंने पहिले ही कहा था' यह प्रधान अंश और 'वह आज नहीं आवेंगे' आनुषङ्गिक अंश है ।

(१) उद्देश्य— मैंने
उद्देश्य विस्तार
विधेय कहा था
कर्म रूप वाक्य आज हरि नहीं आवेंगे
विधेय विस्तार पहिले ही (काल वाचक)

(२) 'आज हरि नहीं आवेंगे' इस वाक्य में—
उद्देश्य—हरि
विधेय—नहीं आवेंगे
विधेय विस्तार—आज

यौगिक वाक्य ।

जिन सब वाक्यों से मिलकर 'यौगिक वाक्य' बना है, उनका अलग २ विश्लेषण कर के पीछे जिन योजकों द्वारा वह मिले हैं उनको दिखाना चाहिये । और यदि यौगिक वाक्य सरल वाक्यों से बना हो तो सरल वाक्य की रीति के अनुसार और यदि जटिल वाक्यों से बना हो तो जटिल वाक्य की रीत्यनुसार विश्लेषण करना चाहिये ।

३ प्रत्यय ।

१ जो निरकेवल आप कुछ अर्थ नहीं रखता पर प्रकृति (मूल शब्द) त्तर लगने से विशेष अर्थ बोधित करता है वह प्रत्यय कहाता है ।

२ प्रत्यय प्रायः तीन प्रकार के हैं—स्त्रीप्रत्यय, तद्धितप्रत्यय और त्प्रत्यय ।

(१) स्त्रीप्रत्यय ।

१ पुंलिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिये जिस प्रत्यय का योग किया जाता है उसको स्त्रीप्रत्यय कहते हैं । कभी २ स्त्रीप्रत्यय के ग से शब्द में लघुता का भाव निकलता है; परन्तु ऐसे शब्द के लिये क्य में स्त्रीलिङ्ग की क्रिया आती है इससे इसको स्त्रीलिङ्ग ही कहते ।

(२) तद्धितप्रत्यय ।

१ संज्ञा या अव्यय के उत्तर लग कर संज्ञा बनाने वाला प्रत्यय द्धितप्रत्यय कहाता है । तद्धितप्रत्यय एक प्रकार की संज्ञा को दूसरे कार की संज्ञा बना देता है ।

२ हिन्दी प्रचलित तद्धितप्रत्यय बहुधा पांच व छ प्रकार के हैं— अपत्यवाचक, व्यापारादिवाचक, भाववाचक, विद्यमानतादिवाचक, अल्पतादिवाचक और अधिकतादिवाचक ।

१ अपत्यवाचक

अ ई इत्यादि अपत्यवाचक प्रत्यय से पुत्रादि सन्तान जाना जाता है ।

(१) वे अपत्यवाचक जो आदि अक्षर के स्वर को दीर्घ करने से बनते हैं, जैसे—

जनक से जानकी	वसिष्ठ से वासिष्ठ	वसुदेव से वासुदेव
पर्वत से पार्वती	कश्यप से काश्यप	दशरथ से दाशरथ वा दाशरथि

२ वे अपत्यवाचक जो आदि अक्षर के स्वर को वृद्धि और अन्त्य अक्षर के 'उ' को 'अव' आदेश करने से बनते हैं, जैसे—

शिव से शैव	रघु से राघव	मनु से मानव	यदु से यादव
विष्णु से वैष्णव	मधु से माधव	कुरु से कौरव	भृगु से भार्गव

३ वे अपत्यवाचक जो अन्त्य अक्षर के स्वर को 'ई' आदेश करने से बनते हैं, जैसे—

कबीर पंथ से कबीरपंथी	बंगाल से बंगाली	पंजाब से पंजाबी
दयानन्द से दयानन्दी	नेपाल से नेपाली	रामानन्द से रामानन्दी

४ वे अपत्यवाचक जो शब्द के अन्त में 'ज' के योग से बनते हैं; जैसे—

पिंड से पिंडज	पंक से पंकज	जल से जलज
अंड से अंडज	स्वेद से स्वेदज	श्रम से श्रमज

५ वे अपत्यवाचक जो आदि स्वर को वृद्धि इ० और अन्त्य अक्षर के स्थान में दूसरे अक्षर के आदेश इत्यादि से बनते हैं; जैसे —

सुमित्रा से सौमित्र	अदिति से आदित्य	कुंती से कौन्तेय
देव से दैव	गर्ग से गार्ग्य	पञ्चाल से पाञ्चाल
विनता से वैनतेय	गोतम से गौतम	

गो से गव्य (गाय से उत्पन्न वस्तु)

६ 'इक', 'इन' इत्यादि तद्धितप्रत्यय के लगाने में सम्बन्ध का अर्थ निकलता है; जैसे—

मानस से मानसिक	संसार से सांसारिक	ग्राम से ग्रामीण
संवत् से सांवत्सरिक	वर्ष से वार्षिक	मास से मासिक

२ व्यापारादिवाचक

संज्ञावाचक शब्द के अन्त में 'वाला' 'हारा' 'इया' 'इक' इत्यादि तद्धितप्रत्यय के लगने से बहुधा उसका व्यापारी और स्वामी जाना जाता है; जैसे—

दूध से दूधवाला	चूड़ी से चुड़िहारा	लकड़ी से लकड़िहारा
गाड़ी से गाड़ीवाला	माखन से मखनिया	आढ़त से अढ़तिया
धन से धनिक	स्थान से स्थानिक	धर्म से धार्मिक

समाज से सामाजिक (समाज का रक्षक)

३ भाववाचक

भाववाचक से किसी का भाव समझा जाता है। भावबोधनार्थ संज्ञाओं और गुणवाचकों के अन्त में प्रत्यय जोड़ते हैं; जैसे, आई—चतुराई, पंडिताई, ललाई। ई—भलाई, सुधाई, लड़िकाई। त्व-दासत्व, पुरुषत्व, प्रभुत्व। पन-खोटापन, लड़कपन, भोलापन। ता—सुन्दरता, सज्जनता, उत्तमता। पा—बुढ़ापा, रँड़ापा, पुजापा।

४ विद्यमानतादिवाचक

जिस वस्तु की विद्यमानता इत्यादि अर्थ बोध्य होते हैं उस वस्तु के वाचक शब्द के उत्तर 'मान्' 'वान्' 'मन्त' 'वन्त' 'ई' 'आलु' 'लु' 'आ' 'ईला' 'इत' 'ईय' 'इया' 'शाली' 'वी' इत्यादि प्रत्यय जोड़े जाते हैं; जैसे—

(१) वे अपत्यवाचक जो आदि अक्षर के स्वर को दीर्घ करने से बनते हैं; जैसे—

जनक से जानकी	वसिष्ठ से वासिष्ठ	वसुदेव से वासुदेव
पर्वत से पर्वती	कश्यप से काश्यप	दशरथ से दाशरथ वा दाशरथि

२ वे अपत्यवाचक जो आदि अक्षर के स्वर को वृद्धि और अन्त्य अक्षर के 'उ' को 'अव' आदेश करने से बनते हैं; जैसे—

शिव से शैव	रघु से राघव	मनु से मानव	यदु से यादव
विष्णु से वैष्णव	मधु से माधव	कुरु से कौरव	भृगु से भार्गव

३ वे अपत्यवाचक जो अन्त्य अक्षर के स्वर को 'ई' आदेश करने से बनते हैं; जैसे—

कबीर पंथ से कबीरपंथी	बंगाल से बंगाली	पंजाब से पंजाबी
दयानन्द से दयानन्दी	नेपाल से नेपाली	रामानन्द से रामानन्दी

४ वे अपत्यवाचक जो शब्द के अन्त में 'ज' के योग से बनते हैं; जैसे—

पिंड से पिंडज	पंक से पंकज	जल से जलज
अंड से अंडज	स्वेद से स्वेदज	श्रम से श्रमज

५ वे अपत्यवाचक जो आदि स्वर को वृद्धि इ० और अन्त्य अ के स्थान में दूसरे अक्षर के आदेश इत्यादि से बनते हैं; जैसे—

सुमित्रा से सौमित्र	अदिति से आदित्य	कुन्ती से कौन्तेय
देव से दैव	गर्ग से गार्ग्य	पञ्चाल से पाञ्चाल
विनता से वैनतेय	गोतम से गौतम	

गो से गाव्य (गाय से उत्पन्न वस्तु)

६ 'इक', 'इन' इत्यादि तद्धितप्रत्यय के लगाने में सम्बन्ध का अर्थ निकलता है; जैसे—

मनस से मानसिक	संसार से सांसारिक	ग्राम से ग्रामीण
संवत् से सांवत्सरिक	वर्ष से वार्षिक	मास से मासिक

२ व्यापारादिवाचक

संज्ञावाचक शब्द के अन्त में 'वाला' 'हारा' 'इया' 'इक' इत्यादि तद्धितप्रत्यय के लगने से बहुधा उसका व्यापारी और स्वामी जाना जाता है; जैसे—

दूध से दूधवाला	चूड़ी से चुड़िहारा	लकड़ी से लकड़िहारा
गाड़ी से गाड़ीवाला	माखन से मखनिया	आढ़त से अढ़तिया
धन से धनिक	स्थान से स्थानिक	धर्म से धार्मिक

समाज से सामाजिक (समाज का रक्षक)

३ भाववाचक

भाववाचक से किसी का भाव समझा जाता है। भावबोधनार्थ संज्ञाओं और गुणवाचकों के अन्त में प्रत्यय जोड़ते हैं; जैसे, आई— चतुराई, पंडिताई, ललाई। ई—भलाई, सुधाई, लड़िकाई। त्व-दासत्व, मनुष्यत्व, प्रभुत्व। पन-खोटापन, लड़कपन, भोलापन। ता—सुन्दरता, सज्जनता, उत्तमता। पा—बुढ़ापा, रंड़ापा, पुजापा।

४ विद्यमानतादिवाचक

जिस वस्तु की विद्यमानता इत्यादि अर्थ बोध्य होते हैं उस वस्तु के वाचक शब्द के उत्तर 'मान्' 'वान्' 'मन्त' 'वन्त' 'ई' 'आलू' 'लु' 'आ' 'ईला' 'इत' 'ईय' 'इया' 'शाली' 'वी' इत्यादि प्रत्यय जोड़े जाते हैं; जैसे—

मान् - श्रीमान्, बुद्धिमान्। वान् - रूपवान्, गुणवान्, शिक्षावान्,। वन्त-कुलवन्त, गुनवन्त, शीलवन्त। मन्त-हनुमन्त, श्रीमन्त। ई-सुखी दरिद्री, दण्डी। आलू-झगड़ालू। लु-दयालु कृपालु। आ-भूखा, प्यासा। ईला-सजीला, चमकीला, भड़कीला, इत-दूषित, आनन्दित, दुखित नीय-आदरणीय। इया-बखेड़िया, झमेलिया शाली-भाग्यशाली। वी-मायवी, यशस्वी

२ जो जहां का होता है वह वहां के वाचक शब्द के उत्तर 'अ' 'ई' 'एला' 'एलू' 'ईय' इत्यादि प्रत्यय के लगाने में बनता है; जैसे—

अ-नगर नागर। ई- बनारस से बनारसी। लाहौर से लाहौरी। एला-गांव से गंवेला, वन से वनैला। 'एलू'-घर से घरेलू। 'ईय'-भारतवर्ष से भारतबर्षीय, पर्वत से पर्वतीय।

३ 'तुल्य' अर्थ में 'वत्' प्रत्यय लग के अव्यय शब्द निष्पन्न होता है, जैसे, पशुवत् इत्यादि।

४ 'वना' इस अर्थ में 'ई' 'मय' इत्यादि प्रत्यय लगते हैं, जैसे, ऊनी, सूती, लोहमय, मृत्तिकामय, गोमय (गोबर), आम्रमय (आम्रका विकार वा अवयव) इत्यादि

५ अल्पतादिवाचक

अल्पता आदि अर्थ के बोधनार्थ 'ड़ी' प्रत्यय, प्यार का द्योतक 'क' प्रत्यय और अनादर का द्योतक 'आ' प्रत्यय बहुधा लगाया जाता है, जैसे, ड़ी-पलंगड़ी, कुल्हाड़ी। क-पुत्रक, ठंढक। आ, टहलुआ, मतलुआ।

६ अधिकतादिवाचक

अधिकता आदि के बोधनार्थ 'अ' वा 'आ' प्रत्यय लगाया जाता है; जैसे, अ-धार, नद। आ-घंटा, रस्सा, कलसा।

(३) कृदन्तप्रत्यय

१ जो प्रत्यय धातु में परे आ के क्रिया के कर्त्ता आदि अर्थ का बोध करते हैं वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय के लगने से जो संज्ञा बनती है वह कृदन्त संज्ञा कहलाती है। वह कृदन्तसंज्ञा क्रियायुगतभाव को प्रकाश करती है।

२ भाषा में कृदन्त संज्ञा पांच प्रकार की प्रचलित है–कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक व क्रियाद्योतक।

१ कर्तृवाचक

कर्तृवाचक कृदन्तसंज्ञा वह है जिसमें कर्त्तापन का बोध होता है। क्रिया के चिन्ह 'ना' को 'ने' करके उसके-उत्तर 'वाला' वा 'हारा' प्रत्यय के जोड़ने से यह कृदन्तसंज्ञा बनती है; जैसे—

बोलने वाला	हांकने वाला	जोतने वाला	काटने वाला
खाने हारा	देने हारा	सोने हारा	बेचने हारा

(अ) क्रिया के चिह्न 'ना' का लोप करके धातु के अन्त्य 'अ' के स्थान में 'अक' 'इया' 'अवैया' आदेश करने से यह कृदन्तसंज्ञा बनती है; जैसे—

पूजक पालक जड़िया लखिया करवैया बोलवैया

(इ) जहां धातु का अन्त्य वा उसके आदि अक्षर का स्वर दीर्घ हो वहां उसको ह्रस्व करके तब 'अवैया' आदेश करते हैं; जैसे—
गवैया खवैया सुतवैया जितवैया पिसवैया मरवैया

(उ) कर्त्ता अर्थ में 'ता' 'ई' 'मान' 'क' इत्यादि प्रत्यय हैं; जैसे—
दाता, भाषी, विराजमान, सेवक इत्यादि।

(ऋ) वर्त्तमान काल का कर्त्ता बोधित करने के लिये धातु के उत्तर 'ता' अथवा 'ता हुआ' इतना जोड़ देते हैं और भूतकाल का

कर्त्ता बोधित करने के लिये धातु के उत्तर 'आ' वा 'या' अथवा 'आ हुआ' वा 'या हुआ' इतना जोड़ देते हैं; जैसे—

खाता	हंसता	खेलता	जागता
खाता हुआ	हंसता हुआ	खेलता हुआ	जागता हुआ
खाया	सोया	बोया	दिया वा दिआ
खाया हुआ	सोया हुआ	बोया हुआ	दिया(वा दिआ)हुआ

(२) कर्मवाचक

कर्मवाचक कृदन्तसंज्ञा वह है जिसमें कर्मत्व का बोध होता है। क्रिया के सामान्य भूतकाल के रूप में 'जानेवाला' वा 'जानेहारा' इतना जोड़ देने से कर्मवाचक संज्ञा बनती है; जैसे-खाया जानेवाला, पिया जानेहारा, बोया जानेहारा, दियाजानेवाला।

(अ) 'वाला' वा 'हारा' ये दोनों प्रत्यय कभी भविष्यकाल के कर्तृत्व आदि के बोधनार्थ भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे, 'कल मैं जौनपुर जानेवाला वा जानेहारा हूँ' इत्यादि।

(इ) क्रिया के सामान्यभूतकाल के रूप के उत्तर 'जाता' वा 'जाता हुआ' इतना लगा देने से वर्त्तमानकाल के कर्म की वाचिका संज्ञा बनती है और यथोक्त भूतकाल के रूप के उत्तर 'गया' वा 'गया हुआ' इतना लगा देने से भूतकाल के कर्म की वाचिका संज्ञा बनती है, जैसे-

खाया जाता खाया जाता हुआ खाया गया हुआ

(उ) सकर्मक धातु के सामान्यभूतकाल का रूप भी साक्षात् कभी २ कर्मवाचक संज्ञा के आकार में प्रयुक्त होता है; जैसे—

खाया अन्न पिया पानी पढ़ी विद्या लिखी चिट्ठी

(१) प्रस्तुत प्रयोग के स्थल में कभी २ 'हुआ' इतना और भी जोड़ दिया जाता है; जैसे – दैव का मारा हुआ।

(अ) कभी २ क्रियाद्योतक संज्ञा के भी आकार में कर्मवाचक संज्ञा होती है; जैसे-ओढ़ना बिछावना इत्यादि।

(१) लघुत्वादि अर्थ बोधित करने के लिये बहुधा पुंलिङ्ग संज्ञा का स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग करते हैं; जैसे ओढ़ना बड़ा होता है और ओढ़नी छोटी।

३ करणवाचक

करणवाचक कृदन्तसंज्ञा उसे कहते हैं जिससे करणत्व ज्ञात होता है। कोई २ करणवाचक कृदन्तसंज्ञा क्रियाद्योतक कृदन्त संज्ञा के ही रूप में होती है; जैसे—

ढकना ओढ़ना घोटना बेलना

(१) कभी २ प्रस्तुत संज्ञा नियत स्त्रीलिङ्ग होती है; जैसे—

कतरनी कुरेलनी खोदनी

(अ) कभी २ 'इत्र' यह प्रत्यय कर्म वा करणवाचक संज्ञा बनने में प्रयुक्त होती है; जैसे—चरित्र पवित्र खनित्र।

४ भाववाचक

भाववाचक कृदन्तसंज्ञा उसे कहते हैं जिससे शुद्ध धात्वर्थ वा भाव का बोध होता है। इसके बनाने की रीतियाँ नीचे लिखी जाती हैं-

(१) बहुत करके धातुही के आकार में भाववाचक कृदन्त संज्ञा होती है; जैसे

मार पीट लूट पुकार समझ बूझ सूजन

(२) कहीं २ क्रियाद्योतक संज्ञा के चिन्ह 'ना' को 'न' और कहीं 'ना' को 'नी' कर देने से यह संज्ञा बनती है; जैसे—लेन देन खान पान करनी भरनी इत्यादि।

(३) कहीं २ धातु के अन्त्य 'अ' को 'आव' आदेश कर देने से यह संज्ञा बनती है, जैसे—सजाव चढ़ाव बिकाव मिलाव घुमाव जुटाव इत्यादि।

(४) कहीं २ धातु के अन्त्य 'अ' को 'आई' आदेश कर देने अथवा 'आई' जोड़ देने से यह संज्ञा बनती है; यदि धातु के आदि अक्षर का स्वर दीर्घ हो तो उसको ह्रस्व कर देते हैं, जैसे—पढ़ाई लिखाई जोताई बोआई भराई सिंचाई देखाई इत्यादि

(५) कहीं २ धातु के अन्त्य 'अ' के स्थान में 'आवट' 'आहट' 'ई' इत्यादि आदेश करने से स्त्रीलिङ्ग में यह संज्ञा बनती है, जैसे लिखावट चिल्लाहट बनावट झनझनाहट फेरी हंसी इत्यादि।

(६) कहीं २ धातु के उत्तर 'त' वा 'तो' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिङ्ग मे और धातु के अन्त्य 'अ' स्थान में 'आ' वा 'आप' वा 'आव' आदेश करने से पुंलिङ्ग में यह संज्ञा बनती है; जैसे—बचत खपत बढ़ती घटती छाप मिलाप जुटाव फैलाव इत्यादि।

(७) कहीं २ धातु के आदि अक्षर को दीर्घ कर देने से यह संज्ञा बनती है, जैसे—चल से चाल ढल से ढाल इत्यादि।

(८) कहीं २ धातु के चिन्ह 'ना' का लोप कर देने से यह संज्ञा बनती है; जैसे—बोल, मान, समझ, पुकार, चाह इत्यादि।

५ क्रियाद्योतक

क्रिया का भाव बोधित करने के लिये धातु के उत्तर 'ना' यह प्रत्यय लगाने से जो संज्ञा निष्पन्न होती है वह क्रियाद्योतक कृदन्तसंज्ञा कहाती है, जैसे-कहना, खेलना, हंसना, रोना, गाना, बजाना, इत्यादि।

(१) क्रियाद्योतक कृदन्तसंज्ञा भाववाचक कृदन्तसंज्ञा का ही भेद है। शुद्ध धात्वर्थरूपी भाव के बोधन में इसका विशेष उपयोग देख पृथक् उल्लेख कर दिया है।

(४) उपसर्ग।

१ प्रादि* अव्यय शब्द जब क्रियावाचक शब्द के पूर्व युक्त हो कर कभी उस (क्रिया) के स्वार्थ को और कभी उसके भिन्न ही अर्थ को द्योतित करते हैं तब उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे, विराजमान इत्यादि।

२ कहीं दो कहीं चार उपसर्ग एकत्र प्रयुक्त होते हैं; जैसे, विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, समभिव्याहार इत्यादि।

३ उपसर्ग के प्रधान अर्थ वा भाव जो उसके योग से निकलते हैं वे नीचे लिखे जाते हैं—

अति—अतिशय; जैसे, अतिशुभ्र।

---

*प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निर्, दुर्, वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि प्रति, परि, उप—ये प्रादि हैं।

अधि—अधिकता, उपरिभाव, स्वामित्व; जैसे, अधिकार, अध्याहार, अधिराज।

अनु—पीछे, सादृश्य; जैसे अनुगामी, अनुताप, अनुरूप।

अन्तर—भीतर; जैसे, अन्तर्धान।

अप-हीनता, त्याग, वैरूप्य; जैसे, अपवाद, अपमान, अपरूप।

अभि—चारों ओर से, सन्मुख, प्रधानता, समीपता; जैसे, अभिमत, अभिमान, अभिभावक, समभिव्याहार।

अव—अनादर, नीचता; जैसे, अवहेला, अवनति।

आ—सीमा, ग्रहण, विरोध; जैसे, आभोग, आदान, आक्रमण।

उत्—ऊपर, उत्कर्ष; जैसे, उन्नति, उदार।

उप—समीपता, निकृष्टता; जैसे, उपस्थिति, उपासङ्ग (पसँगा)

दुः—दुष्टता, कष्ट, निन्दा; जैसे, दुर्योग, दुर्गम, दुर्वाद।

नि—निषेध, अवरोध अत्यन्त; जैसे, निवारण, निरोध, निहत।

निः—निषेध, बाहर होना; जैसे, निश्चल, निर्गोण।
परा—प्रतिघात, विरोध; जैसे, पराजय पराङ्मुख।
परि—सर्वतोभाव, अतिशय, जैसे, परिवार, परिपूर्ण।
प्र—प्रकर्ष, अतिशय, गति; जैसे, प्रज्ञान, प्रयत्न, प्रचार।
प्रति—बदले में, प्रत्येक, सादृश्य; जैसे, प्रतिनिधि, प्रत्यगात्मा प्रतिरूप, प्रतिकृति, प्रतिमा।
वि—भिन्नता, विशेषता, वियोग, विरोध।
सम्—संयोग, आभिमुख्य, उत्तमता, आधिक्य; जैसे, समागम, संवाद समीचीन, संस्कृत, सम्भार।
सु—उत्तमता, सुगमता; जैसे, सुधार, सुलभ।

अध्याय—१६

कहावतें

१. अजगर के दाता राम—गरीबों का रक्षक ईश्वर है।
२. अगर मगर करना अच्छा नहीं—बहाना करना ठीक नहीं।
३. अण्डे सेना—निकम्मे बैठे रहना।
४. अटका बनिया देइ उधार—दबा हुआ आदमी सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।
५. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—एक आदमी कुछ नहीं कर सकता।
६. अति सर्वत्र वर्जयेत—किसी कार्य को अपनी सीमा से परे करना ठीक नहीं।
७. अन मांगे मोती मिले मांगी मिले न भीख—संतोषी को बैठे बिठाये सब कुछ मिल जाता है।

८. अपने घर में कुत्ता भी शेर—अपने घर में निर्बल आदमी भी शेर बन कर रहता है।

९. अपनी करनी अपनी भरनी—अपने किये का फल अपने को मिलता है।

१०. अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना—स्वतंत्र रहना।

११. अपनी जाँघ उघारिये आपुन मरिये लाज—
अपनी बुराई करने से अपने आपको शर्म आती है।

१२. आप तो डूबे थे यार को भी ले डूबे—
अपने नाश के साथ साथ मिलने वालों का भी नाश किय।।

१३. अपने मुँह बनिया वाई } अपनी प्रशंसा अपने आप
अपने मुँह मिहाँ मिट्ठू बनना } करना।

१४. अपने हाथ अपने पैरों कुल्हाड़ी मारना—
अपने आपही अपनी हानि करना।

१५. अपना सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित होना।

१६. अफसर चून का भी बुरा—अफसर कितना ही अच्छा क्यों न हो पर मातहत को बुरा ही लगता है।

१७. अब पछताये होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत—
सर्वनाश होने के बाद पछताना फिजूल है।

१८. अधजल गागर छलकत जाय-ओछे आदमी इतरा कर चलते हैं

१९. अशरफी लुट गई और कोयले पर छाप—बहु मुल्य वस्तुओं को खर्च कर उनकी परवाह न करना और तुच्छ वस्तुओं को खर्च करते समय उन पर ध्यान देना।

२०. अमरौती खाकर कोन आया है—सब को ही मरना है।

२१. अँधेर नगरी अन्यायी राजा, टका सेर भाजी और टका सेर खाजा — जहां का अफसर मूर्ख और अन्यायी होता है वहां पर बुरे भले सब एक से होते हैं।

२२. अमानत में खयानत—सौंपी हुई चीज में चोरी करना।

२३. अँधे के आगे रोवे और अपने दीदे खोवे—
मूर्ख को समझाना निष्फल है।

२४. आँधी क्या जाने आरसी का सार
जट क्या जाने भट्ट के भेद को
बंदर क्या जाने अदरक के स्वाद को
गधा क्या जाने गंगा के नीर को
भैंस क्या जाने खेत सगा को
—मूर्ख आदमी अच्छी चीज की कदर नहीं कर सकता।

२५. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास—लक्ष भ्रष्ट होना।
—अपने उद्देश्य को भूल कर दूसरे काम में लग जाना।

२६. आप काज महा काज—अपने हाथ से काम करना सब से अच्छा है।

२७. आप मरे जग प्रलय-आप मर गये तो मानो सब संसार मर गया

२८. आती लक्ष्मी को लात मारना—मिलते हुए को न लेना।

२९. आप न जावे सास के औरों को सिख देय—
खुद काम करे नहीं और दूसरों को करने के लिये कहे

३०. आप भला तो जग भला—जो खुद अच्छा होता है तो उसके लिये सब अच्छे हैं।

३१. आगा पीछा देख कर चलो—प्रत्येक कार्य को सोच विचार कर करना चाहिये।

३२. आग लगा कर पानी को दौड़ना
आग लगने पर कुआ खोदना
—कार्य को बिगाड़ कर उसे सुधारने की कोशिश करना

३३. आगे नाथ न पिछे पगा,
सब से भले निखट्टू तगा।
—अकेला आदमी हर तरह से सुखी रहता है।

३४. आधी तज सारी को धावे, एसा डूबे पार न पावे। — ज्यादा लालच में जो थोड़ा भी मिलता है वह मारा जाता है।

३५. आधा तीतर आधा बटेर
आधे गांव दिवाली और आधे गांव फाग
एक घर होली और एक घर दिवाली — सब जगह एकसा कार्य आ बर्ताव का न होना।

३६. आस पराई जो करे जीते ही मर जाय—दूसरों का भरोसा बुरा होता है।

३७. आदर मेरी चादर का परोसा मेरे गहने का। — धनवान का आदर सब जगह होता है और निर्धन का कहीं पर नहीं

३८. आम के आम गुठलि के दाम—एक लाभकारी काम में दूसरा लाभ अपने आप हो जाना।

३९. आँख का अँधा नाम नयन सुख—नाम से गुण विपरीत।

४०. आँख का अंधा गांठ का पूरा—मूर्ख धनवाला।

४१. आँख हुई चार तो दिल में आया प्यार—देखने से प्रेम उत्पन्न होता है।

४२. आँख हुई ओट तो दिल में बसा खोट—दिखावटी लोग पीछे बुराई करते हैं।

४३. आँख कान में चार अंगुल का अन्तर है—सत्य झूट में चार अंगुल का फर्क है।

४४. आठ कनौजिया नौ चुल्हे—हिन्दुओं की छूत और फूट।

४५. आठ सिद्धि और नौ निधि—अत्यन्त सुख और एश्वर्य्य।

४६. इस हाथ दे दस हाथ ले—कर्मों का फल करते ही मिलता है।

४७. इधर न उधर यह बला किधर—यह नई आपत्ति कहां से आ गई।

४८. न इधर के रहे न उधर के रहे, न खुदा ही मिले न विसाले सनम — न यह लोक बना और न परलोक सुधरा।

४९. एक पन्थ दो काज—किसी एक काम के करने से दो काम का हो जाना।

५०. ऊंचा बोलने वाला— घमंडी

५१. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे—खोटे मनुष्य अच्छे मनुष्यों पर दोष लगाते हैं।

५२. उल्टी गंगा बहाना—अन होनी बात का होना।

५३. ऊँची दुकान फिका पकवान—नाम बड़ा और काम छोटा।

५४. ऊँट के मुँह में जीरा—अयोग आदमी को योग आसन देना।

५५. उजड़ खेड़ा नाम विवेड़ा—खाली नाम ही नाम।

५६. ऊँट की चोरी दूका दूक—बड़े भारी काम छिप नहीं सकते।

५७. एको पाप न काटिया सौ मन लादे और—एक झगड़ा दूर न हुआ और बहुत से लग गये।

५८. अँधे के हाथ बटेर लग गई—मूर्खों को अचानक कोई अच्छी चीज मिल जाना।

५९. करे तो डर न करे तो डर—दुनिया में सब तरह से मुशकिल है।

६०. कभी नाव गाड़ी पर और कभी गाड़ी पर नाव—जो मनुष्य दूसरों का काम करते हैं तो दूसरे भी उनका काम कर देते हैं

६१. कहां राजा भोज और कहां गंगा तेली—छोटे और बड़ों का क्या साथ

६२. काजल की कोठरी में दाग लागे पर लागे—बुरी संगति से बुराई अवश्य मिलती है

६३. काठ की हाँडी एक दफे चढ़ती है—छल से एक दफे काम निकल सकता है पर भेद खुलने पर नहीं।

६४. क्या काबुल में गधे नहीं होते—अच्छी जगह में बुरे आदमी भी होते हैं।

६५. काम रहे तक काजी न रहे तो पाजी—नीच लोग मतलब के समय खुशामद करते हैं और काम निकलने पर बुराई करते हैं।

६६. का बषा जब कृषि सुखाने } समय पर कार्य न करके फिर समय चुकि पुनि का पछताने } पछताने से कोई मतलब नहीं।

६७. कागा किसका धन हरे कोयल किसको देय } मीठे बोलने से मीठे वचन सुनाय कर जग अपना कर लेय } सब वश में हो जाते हैं।

६८. काग पढ़ाये पिंजरा पढ़ गये चारों वेद। नीच को शिक्षा से जब सुध आई देश की अन्त ढेड के ढेड॥ कुछ लाभ नहीं होता कोयले की दलाली में हाथ काले—बुरे काम में मदद देने से भी हानी उठानी पड़ती हैं।

६९. घड़ी में औलिया और घड़ी में भूत—कभी कुछ और कभी कुछ

७०. घर का भेदी लंका ढाहे—घर का भेद जानने वाला आदमी शत्रु बन कर हानी पहुँचाता है।

७१. घी के दिये जलाना—खुशीयें मनाना।

७२. चलती का नाम गाड़ी—जिसका काम चलजाय वह अच्छा है।

७३. चलवे चरखा चर्क चूं, बहु के बदले आया तूं—भारत की सारी लक्ष्मी जाती देख कर महात्मा गांधी ने चरखा चलाया है, अर्थात् सर्वस्व के बदले चरखा मिला है।

७४. चल वे टट्टू इधर को भी, जिजमान का घर है—सब तरफ अपना काम है।

७५. चल संसार अचल करतार—दुनिया नाशवान है और ईश्वर अविनाशी।

७६. चली चल नाले नाले, तेरा घर मेरे हवाले—हमारे साथ चल प्रबन्ध हो जायगा।

७७. चमार को अर्श पर भी बेगार-गरीब को हर जगह पर दुख ही दुख है।

७८. चिंटी के मरते समय पर लगते हैं—मौत के समय मति उल्टी हो जाती है।

७६. चौबेजी छबे होने गये, पर दुब्बे ही रह गये—लाभ के लिये काम किया पर नुकशान हो गया।

८०. जगन्नाथ का भात, जगत पसारे हाथ-ईश्वर से सब मांगते हैं।

८१. जब आया देही का अन्त, जैसा गधा वैसा सन्त-मौत-बुरे भले सब को आती है।

८२. जब ओटली लोई, तो क्या करेगा कोई—जब लाज उतार डाली फिर गम किस बात का।

८३. जब भूख लगी भड़वे को तन्दूर की सूझी। अंधे को अन्धेरी में बड़ी दूर की सूझती है — मतलब की बात सब को जल्दी ही याद आती है।

४८. जल में रह कर मगर से बैर-किसी के अधिकार में होकर उसी से बैर करना

८५. जहां जाय भूखा वहीं पड़े सूखा—दुखिया को हर जगह दुख है।

८६. जर है तो नर है, नहीं तो पक्षी बेपर है-निर्धन निकम्मा होता है

८७. जर है तो नर है, नहीं तो पुरा खर है-निर्धन महा मूर्ख होते है

८८. जाके पांव फटि न बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई-सुखिया दूसरे के दुख को नहीं जान सकता।

९३ जोरु चिकनी मियां मजूर-मियां मजूरी कर के लाते हैं वी बी मौज उड़ाती है।

९४. झटपट की घाणी, आदा तेल आदा पानी-जलदी का काम बुरा होता है।

९५. झूठा मीठे के कारण खाया जाता है-लोभ के कारण बुरा काम किया जाता है।

९६. टट्टी की ओट में शीकार खेलना-बहाने से माल मारना।

९७. टाट का लगोंटा नवाब साहिब से यारी-शेखी मारना।
तन पर नहीं लता पान खाय अलबता- ,, ,,

९८. ठाकुरजी क्या खलसी खाते हो, यह भी कुत्तों से छीनी है क्या ? अत्यन्त कंगाली दशा में।

९९. डूबते को तिनके का सहारा काफी है-दुखी को थोड़ी सी भी सहायता बहुत है।

१००. ढकले परदा रखले लाज, कर न पिता हम को मुहताज-हे ईश्वर आबरू रखले, किसी का मुहताज न कर

१०१. ढाक के तीन पात-थोड़ा धन।

१०२. तक तिरिया तू आपनी, पर तिरिया मत ताक।
पर नारी के ताकते, परे शिश पर खाक॥ -पर स्त्री को देखना घोर पाप है।

१०३. तबेले की बला बन्दर के सर पर।
रंडियों का दंड फकीरों पर-काम कोई बिगाड़े और भुगते कोई।

१०४. तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार-अच्छे लोगों की बात एक होती है।

१०५. तीतर के मुँह लक्ष्मी—हाकिम की जबान पर फैसला है।

१०६. तीतर की बोली—जिस बात में बहुत से अर्थ निकले।

१०७. तीन पाव आटा और पुल पर रसोई—थोड़ी सी बात को व्यर्थ बढ़ाना।

१०८. तेल देखो तेल की धार देखो—आगे २ देखना क्या होता है।
१०९. तेली का बैल – दिन रात काम करने पर भी कछु न मिलना।
११०. तेली से यारी कर के पानी से सींचना–बड़ों से मेल होने पर भी तकलीफ उठाना।

१११. तेली वे तेली तेरे सिर पर कोल्हू–बे बुनियाद बात करना।
११२. तोता चश्मी करना–बे वफाई करना।
११३. थूक में सत्तू साधना–थोड़े खर्च से बड़ा काम करना।
११४. दर्जी की सुई कभी रजाई में कभी मुखमल में–काम वाले को कभी छोटा कभी मोटा काम मिलता है।
११५. दाता दे और भंडारी पेट पीटे — खर्च कोई करे और जी निकले किसी का।

११६. दादा खरीदे पोता बरते—मजबूत चीज बहुत चलती है।
११७. देशी कुत्ता मराठी चाल—दूसरों की नकल करना।
११८. दाल भात में मुसलचन्द– व्यर्थ में काम बिगाड़ने वाले।
११९. दाई से पेट नहीं छिपता–जानने वाले से भेद नहीं छिपता।
१२०. दिये तले अन्धेरा, -पास की या घर की खबर न ले और दूर २ की सोचे

१२१. दाँतों तले उंगली दबाना-- आश्चर्य करना।
१२२. ना बांस रहे ना बंसी बजे– फड़ को ही खोद डालना।
१२३. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी– न तो पूरा धन होगा और न पूरा काम होगा।

१२४. न पाने की खुशी न खोने का रंज-हर हालत में खुश रहना।
१२५. परदेशी की प्रीती फूस का तापना–अनजान से प्रेम करने में सुख थोड़ा और दुःख अधिक होता है।
१२६. पकाई खीर और हो गया दलिया–लाभ के बदले हानि हो गई।

१२७ नौ दो ग्यारह होना— भाग जाना।
१२८ नौकरी की जड़ पत्थर पर—नौकरी में कुछ सार नहीं।
१२९ नंगी क्या नहाय और क्या निचोड़े-निर्धन कुछ नहीं कर सकता।
१३० निन्यानवे की फेर में पड़ना—धन इकट्ठा करने में लगजाना।
१३१ नीम हकीम खतरे जान—नादान मनुष्य से काम बिगड़ता है।
१३२ नौ दिन चले अढ़ाई कोस-काम बहुत किया पर फल थोड़ा मिला।
१३३ नौ नकद न तेरह उधार—उधार से नकद थोड़ा भी हो तो अच्छा होता है।
१३४ नदी में रहकर मगर से वैर-बलवान पड़ौसी से वैर करना ठीक नहीं।
१३५ नाच न जाने आंगन टेढ़ा— अपनी मूर्खता की खोट दूसरे पर लगाना।
१३६ दोनों हाथों में लड्डू है—अधिक लाभ है।
१३७ पानी पर से मलाई उतारना—अत्यन्त चालाकी करना।
१३८ पानी २ हो जाना—लज्जित हो जाना।
१३९ पानी में आग लगाना—झगड़ा करा देना।
१४० पानी का बताशा पानी का बुलबुला—नाशवान पदार्थ।
१४१ पांचों उंगलियां घी में है—खूब लाभ है।
१४२ पैसे पेड़ पर नहीं लगते—पैसा बड़ी महनत से मिलता है।
१४३ पढ़े न लिखे नाम विद्यासागर—महा मूर्ख।
१४४ पैसे की हांडी गई पर कुत्ते की जात पहचानी गई—थोड़े से खर्च में जांच हो गई।
१४५ पौ बारह होना—अधिक लाभ होना।
१४६ फला वृक्ष नीचे को नवता है—भले लोग नम्र होते हैं।
१४७ फूला नहीं समाना—बहुत प्रसन्न होना।
१४८ फूंक फूंक कर पैर रखना—सोच विचार कर काम करना।
१४९ बगल में तौशा मंजल का भरोसा—माल पास में रहने से बेफिक्री रहती है।

१५० बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी—फंसा हुआ आदमी कब तक बचा रहेगा।

१५१ बन्दर के गले में मोतियों की माला—छोटे आदमी को बड़ी चीज मिल जाना।

१५२ बाप राजघर खाये न पान, दांत निकाले निकले प्राण—नीच आदमी थोड़ी दौलत पाकर इतरा जाते हैं।

१५३ बांझ क्या जाने प्रसव की पीड़—सुखी लोग दुखिया का दुख नहीं जान सकते।

१५४ बुढ़िया मरी तो मरी पर आगरा तो देखा—नुकशान तो हुआ ही सो हुआ पर अनुभव भी हो गया।

१५५ भड़भूजे की लकड़ी और केशर का तिलक—छोटे मुंह बड़ी बात करना।

१५६ भाड़ में जाय सोना जिससे नाक फटे—बदनामी का लाभ बुरा ही होता है।

१५७ भूखा बंगाली भात २ पुकारे—मतलबी को मतलब से काम।

१५८ भोला फटरा दूध पिये स्याना कौवा खे खाय—भोला आदमी सुख पाता है।

१५९ मच्छर मार कर ऐंटा सिंह—तनिक सी बात पर इतराना।

१६० मान का पान लाल के समान—आदर के साथ थोड़ी सी चीज भी अच्छी।

१६१ मान न मान मैं तेरा महमान—जबरदस्ती से किसी के सिर पड़ना।

१६२ मियां के मियां गये बुरे सपने दिखे—दुख पर दुख पड़ा।

१६३ मूर्गों को तकले का गाव बहुत है—निर्बल को थोड़ा सा दुख भी बहुत है।

१६४ मूसलों से बचे तो बड़े ही खाये—कष्ट से बचना बड़ा लाभ है।

१६५ मोची के मोची ही रहे—नीच के नीच ही रहे।

१६६ यारों को यारी से काम, उसके फेलों से क्या काम—अपने काम से मतलब ।

१६७ सात पांच की लाकड़ी एक जने का बोझ— कई लोगों की मदद से एक आदमी का काम निकल जाता है ।

१६८ सिद्ध को साध पुजवाता है—गुरु का मान चेले करवाते हैं ।

१६९ सीधी उंगली से घी नहीं निकलता—सीधेपन से काम नहीं चलता ।

१७० सूरज धूल डालने से नहीं छिपता—अच्छा तो अच्छा ही रहता है उसकी बुराई करने पर भी वह अच्छा ही रहता है ।

१७१ सदा दिवाली पूजलो जो घर गेहूँ होय—धन पास है तो सदा त्यौंहार है ।

१७२ सत्तू बांध कर पीछे पड़ना—लगातार काम करते रहना ।

१७३ सावन सूखे न भादों हरे—सदा एकसा रहना ।

१७४ सावन के अंधे को हरा ही हरा दीखता है—सुखी को सुख ही दीखता है ।

१७५ सांप मरे न लाठी टूटे—किसी को हानि न हो और अपना काम हो जाय ।

१७६ सांप को दूध पिलाने से विष बढ़ता है—दुष्ट को शिक्षा का लाभ कठिन है ।

१७७ सांप छछूंदर का डौल है—दोनों ही तरफ से कठिनाई है ।

१७८ सब के दाता राम—परमेश्वर सब को देने वाला है ।

१७९ सब दिन होत न एक समान—हमेशा एक सी नहीं होती है ।

१८० सब गुड़ लाट हो गया—सारा काम बिगड़ गया ।

१८१ सब्र का फल मीठा—सन्तोष अच्छी चीज है ।

१८२ सदा नाव कागज की चलती नहीं—धोखा खुल जाता है ।

१८३ सदा दौर दौरा दिखाता नहीं—। गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ॥ — सब दिन एक से नहीं रहते और बीता हुआ समय फिर हाथ नहीं आता।

१८४ राम रस—नमक

१८५ रीछ का बाल भी बहुत है—मक्खीचूस से जो मिलजावे वही अच्छा है।

१८६ लिखना न आवे, कलम को टेढी बतावे—बहाना करके मूर्खता को छिपावे।

१८७ लकीर के फकीर होना—पुरानी चाल चलना।

१८८ वक्त पड़े बांका और गधे से कहे काका—दुख में नीचों की भी खुशामद करनी पड़ती है

१८९ शौकिन बुढ़िया और चटाई का लंहगा—इतराने की बात।

१९० सिर पर पड़ी बजाये सिद्ध- आ पड़ने पर काम करना ही पड़ता है।

१९१ सिर मूँड कर क्या घूटना मूँडते हो—मरे को क्या मारते हो।

१९२ सूत के बिनौले होना—अधिक हानि पहुँचना।

१९३ सब धान बाईस पंसेरी—अच्छे बुरे सब एक भाव।

१९४ हाथ की लकीर नहीं मिटती—रिश्ता दूर नहीं होता।

१९५ हिनोज दिल्ली दूर है—अभी काम में देर है।

१९६ होनहार बिरवान के होत चिकने पात—होनहार बालक बचपन में भी अच्छा होता है।

१९७ हाजिर में हुज्जत नहीं—जो मौजूद है वह सामाने है।

१९८ हाथी के दांत खाने के और और दिखाने के और—कहना कुछ और करना कुछ।

१९९ हथेली पर सरसों जमाना—अनोखा काम करना।

२०० हाथ कगन को आरसी क्या है—प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण।

२०१ हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा आजाय—मुफ्त में काम बन जाय।

कुछ विशेष कहावतें—

मय प्रयोग के—

१ आँख मारना-इशारा करना-आँख मार कर बात करना ठीक नहीं।

२ आँख मूँदना—विचार न करना—
आजकल श्याम आँख मूँदकर काम कर रहा है।

३ आँख मिचना—मरना—राधे के पिता ने कल सदा के लिये आँख मिचली।

४ आँख खुलना—समझ आना—आप की आज बहुत दिनों से काम करने को आँखें खुली है।

५ आँख दिखाना—धमकाना या गुस्से होना—बिना आँख दिखाये नौकर काम नहीं करेंगे

६ आँख लगना—सोना या प्रेम होना—
(i) श्याम की राधा से आँख लग गई।
(ii) आँख लगते ही चोर धन ले कर नौ दो ग्यारह हो गये।

७ चार आँखें होना— सामने आना—ज्यों ही पुलिस और चोरों की चार आँखें हुई चोर भाग गये।

८ आँख बदलना—मन फिरना—गुस्से में आज उसकी आँखें बदली हुई दिखाई देती हैं। राम के आँख बदलते ही सोहन चुप होगया।

९ आँखों में चर्बी छाना—घमण्ड होना—धनाढ्य होने के नाते आज उसकी आँखों में चर्बी छागई है।

१० आँखों में धूल झोंकना—छल करना—वह अध्यापक की आँखों में धूल झोंकना चाहता है।

११ आँखें नीली पीली करना—नाराज होना— मेरे अपराध पर मास्टर साहब आँखें नीली पीली करने लगे।

१२ आँख उठा कर देखना—सामना करना—राम की ओर आँख उठा कर देखना एक टेढ़ी खीर है।

१३ आटे दाल का भाव मालूम होना—अकल ठीक होना—
पिता के मरते ही मोहन को आटे दाल का भाव मालूम होगया।

१४ आँधी के आम— बहुत सस्ती चीज—आजकल बाजार में चना आँधी के आम के भाव बिक रहा है।

१५ अपना उल्लू सीधा करना—अपना काम बनाना।

१६ अंधे की लकड़ी—एक मात्रा सहारा
एक और एक ग्यारह होना — मिल कर शक्ति बढ़ाना।

१७ इज्जत धूल में मिलना—मान खोना—सरे बाजार में सेठ माधवदास जी के जूते पड़ने से उनकी इज्जत धूल में मिल गई।

१८ ईद का चांद होना—कभी २ दिखाई देना या मिलना
किताबी कीड़े होना—अधिक पढ़ना।

१९ कान में तेल डालना—ध्यान न देना।

२० कच्चा चिट्ठा खोलना—भेद खोलना।

२१ कलम तोड़ना—आशा से अधिक काम करना—परीक्षा में कैलाश ने अपनी कक्षा में कलम तोड़ डाली।

२२ कलई खुलना—पोल खुलना—समय पर हिसाब न चुकने के करण आज बाजार में सेठ रामदास की कलई खुल गई।

२३ कोल्हू का बैल—अधिक परिश्रम करना—राम के कोल्हू के बैल की तरह काम करते रहने पर भी सफलता नहीं मिलती।

२४ कान पर जूं न रेंगना—तनिक भी ध्यान न देना—विमला के रात्रि में बहुत देर तक चिल्लाने पर भी उसके भाई के कान पर जूं तक न रेंगी। (निद्रा से उठ नहीं पाया)।

२५ कृष्णार्पण करना—दान दे देना—राम ने आज सौ रुपये कृष्णार्पण कर दिये।

२६ गाल बजाना—डींग हांकना—हर बात में मोहन अपने गाल
१ है।

१७ गिरगिट की तरह रंग बदलना—अपनी बात पर स्थिर न रहना या बार २ कपड़े बदलना।

हर बात में मोहन गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

२८ गूंगे का गुड़—अपनी बात में आप ही समझना—मोहन और मोहन गूंगे के गुड़ के समान बात चीत कर रहे थे।

२९ चाँदी का जूता मारना—रुपये से काम निकालना—आज कल हर जगह चांदी के जूतों से काम आसानी से निकल सकता है।

३० चिकनी चुपड़ी बातें करना—कपट भरी बातें करना।

३१ चुल्लू भर पानी में डूब मरना—लज्जित होजाना।

३२ चोटी से एड़ी तक का ज़ोर लगाना—खूब कोशिश करना।

३३ चिकना घड़ा—कुछ असर न करना - आपकी शिक्षा मोहन के लिये चिकने घड़े के समान है।

३४ छापा मारना—छिप कर युद्ध करना—शिवाजी ने मुगलों के खिलाफ कई बार छापे मारे।

३५ जुगनु की चमक—कभी २ दिखाई देना—आज कल आपका आवागमन जुगनु की चमक के समान है।

३६ जीती मक्खी निगलना—बिलकुल सच्ची बात को झूठ कह देना।

३७ जान हथेली पर रखना—जान जोखम में डालना—शूरवीर अपनी जानको हथेली में रखते हैं।

३८ टका सा जवाब देना—तुच्छ उत्तर देना।

३९ टेढ़ी खीर—कठिन काम - आप के इस टकेसा जवाब से मेरा काम बिगड़ नहीं सकता।

४० ढोंग रचना—झूठा दिखावा करना - बिलकुल सच्ची बात को झूठ कह देना।

४१ तारे गिनना—आफत में पड़ना, दुख में पड़ना - आज मुझे इतना बुखार आय कि तारे गिनने पड़े।

४२ तिलांजलि देना—नष्ट करना—क्या आज कल आपने पढ़ाई को तिलांजलि देदी है।

४३ तबियत हरी होजाना—चित्त प्रसन्न होजाना—राम के आते पड़ते ही मोहन की तबियत हरी होगई।

४४ तिनके का पहाड़ करना—छोटी बात को बढ़ा कर कहना।

४५ दिल टूट जाना—साहस कम होना—युद्ध में पराजय हो जाने पर योद्धाओं के दिल टूट गये।

४६ दुम दबा कर भागना—डर कर भागना—सोहन अकेला बाजार जा रहा था। रास्ते में उसका शत्रु चम्पा अपने मित्रों के साथ मिला और उस पर वार होते ही सोहन दुम दबाकर भाग गया

४७ दांत खट्टे करना—हराना—राम ने रावण के दांत खट्टे कर दिये

४८ दाल में काला—शक करना।

४९ नमक छिड़कना—पिछली बात को याद दिला कर किसी के दिल को दुःखाना।

५० नाक रखलेना—इज्जत रख लेना।

५१ नमक मिर्च लगाना—बात को बढ़ा कर कहना।

५२ पानी का बुलबुला—थोड़े समय तक रहने वाला क्षणभङ्गुर। —मानव जीवन एक पानी का बुलबुला है।

५३ पानी के मोल—बहुत सस्ता—आज बाजार में कपड़ा पानी के मोल बिक रहा है।

५४ पानी मरना—कसूर साबित होना—मुझ में कौन सा पानी मरता है सो आप मुझ से इतना परहेज रखते हैं।

५५ पानी मरना—फीका पड़ना—श्यामा के कर्त्तव्यों के सामने विमला पानी भरती है।

५६ पानी में आग लगाना—असम्भव बात को सम्भव सिद्ध करना—क्या कोई पानी में आग लगा सकता है?

५७ पानी २ होना—लज्जित होना—अपने दोषों के कारण, अध्यापक के सामने मैं आज पानी पानी हो गया।

५८ पहाड़ से टक्कर लेना—कठिन बातों का सामना करना।

५६ पेट में डाढ़ी होना—मन में छल होना।

६० परछाईं से डरना— किसी के नाम से डरना—अफसरों की परछाईं से डरने पर अपना काम पूरा नहीं हो सकता।

६१ पौबारह होना—अधिक लाभ होना—आजकल सोने के व्योपार में पौबारह है।

६२ फूले न समाना—अधिक प्रसन्न होना।

६३ बायें हाथ का खेल—बहुत सरल।

६४ बावन तोले पाव रत्ती—बिलकुल ठीक।

६५ बुढ़े की लकड़ी—थोड़ा सा सहारा
श्यामा राम के लिए बुढ़े की लकड़ी के समान है क्योंकि वे दोनों अनाथ हो गये थे।

६६ बात की बात में—बहुत जल्दी या सहज ही में—मैं बातें करता २ बात की बात में स्टेशन पहुँच गया।

६७ बाजी मारना—जीतना।
बात ही बात में मोहन ने कबड्डी के खेल में बाजी मारली।

६८ भागते भूत की लंगोटी—जो कुछ मिलजाय वही अच्छा।
बनियों से अनाज का भाव गिरते देख अपने कोठों का माल जल्दी २ बेचने लगे और कहने लगे कि भागते भूत की लंगोटी अच्छी है।

६६ मन के लड्डू खाना—मन ही मन प्रसन्न होना। विद्या पढ़ने से सफलता मिलती है केवल मन के लड्डू खाने से नहीं।

७० मुँह मोड़ना—मना करना।

७१ मुँह की खाना—कड़वा जवाब पाना या हारना
मुगलों ने महाराणा प्रताप से मुँह की खाई।

७२ लोहे के चने चबाना—बहुत कठिन काम।
प्रथमा की परीक्षा में उत्तीर्ण होना लोहे के चने चबाना है।

७३ ललकारना पुकारना।
महाराणा प्रताप ने मुगलों को युद्ध के लिये ललकारा।

७४ रंग में भंग होना—खुशी में बाधा पड़ना।
लक्ष्मण के विवाह में उनकी सास की मृत्यु ने रंग में भंग कर दिया।

७५ सूत्र पात होना—प्रारंभ होना।
आज से मोहन के विवाह का सूत्र पात होगा।

७६ सफाया करना—नष्ट करना
युवराज ने अपने पिता की सम्पत्ति का थोड़े ही दिनों में सफाया कर दिया।

७७ श्री गणेश करना—शुरु करना।
राम ने आज अपनी पढ़ाई का श्री गणेश कर दिया है।

७८ हाथ धो बैठना—खो देना
यमुना अपनी पुस्तक से हाथ धो बैठी।

७९ हाथ डालना—काम छोड़ना। मैं इस काम में हाथ नहीं डालूंगा।

८० हाथ खींचना—रुचि न रखना। मैंने राम के कार्य से हाथ खींच लिया।

८१ हाथ उठाना—मारना। बच्चों पर हाथ उठाना ठीक नहीं।

८२ हाथ मारना—शर्त करना। मैं हाथ मार कर कहता हूँ कि मैं परीक्षा में अवश्य सफल होऊंगा।

८३ हाथ होना—कृपा होना। उसके ऊपर ईश्वर का हाथ है।

८४ हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना—कुछ न करना।
मोहन, आधुनिक युग में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से काम नहीं चलेगा।

८५ हथियाना—लेना। उसने मेरी पुस्तक हथियाली।

८६ हाथ मलना—पछताना। मोहन ने समय पर तो काम किया नहीं, अब बैठे २ केवल हाथ मल रहा है।

८७ हाथ आना—मिलना। सर्प को मारने से आपके क्या हाथ आया?

८८ हाथ का मैल—किसी वस्तु को तुच्छ समझना। पैसा टका मनुष्य के हाथ का मैल है।

८९ हवा से बातें करना—अधिक घमण्ड करना। आज कल मोहन परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद हवा से बातें कर रहा है।

९० जान बची और लाखों पाये और घर के बुधु घर को आये—अपने आपे से बाहर काम करना और फिर उसमें पूर्ण नष्ट न होकर कुछ बच जाना।

मोहन शिकार खेलना नहीं जानता था फिर भी अपनी होशियारी को दिखलाने के लिये राम के साथ शिकार खेलने गया। जंगल में उसने भालू पर गोली चलाई परन्तु भालू गोली से बचकर मोहन पर बड़े वेग से झपटा और मोहन अपने आपको बचा नहीं सका। परन्तु राम ने भालू पर ऐसा निशाना मारा कि भालू मोहन को शिकार बनाने के पहिले खुद ही शिकार बन गया। जब यह हाल उसके दोस्त श्याम को मालूम पड़ा तो उसने मोहन को कहा कि जान बची और लाखों पाये और घर के बुधु घर को आये।

टक्कर खाना— ठोकर खाना।
टस से मस— इधर से उधर।
टाल मटोल करना— बहाना बाजी करना।
टीप टाप करना— बनावट करना।
ठिकाना लगाना— प्रबन्ध करना या बर्बाद करना।
डींग मारना— घमण्ड करना।
तलवा चाटना— खुशामद करना।
ताली बजाना— ठट्ठा करना।
त्यौरी चढ़ाना— आंखें बदलना।
दाँत काटी रोटी— घनी मित्रता।
धावा मारना— चढ़ाई करना।
नाक का बाल— खास।
पांव कांपना— डरना
पीछे पड़ना— सताना।
फूट २ कर रोना— खूब रोना।
बाल बाँका न होना— किसी प्रकार का कष्ट या हानि न होना।
भाग जागना— धनी होना।
मुँह में पानी आना— अत्यन्त चाह होना।
रंग चढ़ना— शौकीन होना।
लम्बा होना— भाग जाना।
साभाँ बाँधना—रंग जमाना।
सिर चढ़ाना— बढ़ावा देना।
शान बघारना— घमण्ड की बातें करना।
हाथ धोना— आशा खो देना।
हाथ मलना— पश्चाताप करना।
हाथों हाथ— एक दम।
हाथ-पाँव फूल जाना— घबरा जाना।

छाती पर पत्थर रखना— कायल (लज्जित) करना।
छाती पर मूँग दलना— कुढ़ाना।
छाती पीटना— विलाप करना।
छाती ठोकना— उत्साहित होना।
छाती खोलकर मिलना— प्रेम से मिलना।
छाती लगाना— प्यार करना।
छाती निकाल कर चलना— अकड़ कर चलना।
छाती भर आना— आँसू निकल पड़ना।
छापा मारना— धावा बोलना।
जल उठना— ईर्ष्या करना
जले पर नौन लगाना— सताये को सताना
जी बुरा करना— जी मचलना।
जी बढ़ाना— उत्साहित होना।
जी भर जाना— अघा जाना या शान्ति मिलना
जी भर आना— दया आना।
जी बहलाना— मन बहलाना।
जी पिघलना— दया उत्पन्न होना।
जी जलना— पीड़ा होना।
जी जलाना— सताना
जी में आना— स्मरण आना
जी निकलना— मरना।
जी हट जाना— मन हट जाना।
जीभ चाटना— लालायित होना।
जीभ निकालना— हार जाना
झख मारना— व्यर्थ समय गंवाना।
झाड़ पछाड़ खा कर देखना— घूर घूर कर देखना।
टकसाल का खोटा— पहले से ही बिगड़ा हुआ।

कार्य अपूर्ण ही रह गया। मगर इनका यश चारों ओर फैल गया। सौभाग्य से एक समय वाट की कारखाने के मालिक वाल्टन से वर्किंघम में भेंट हुई। वाल्टन उस समय उनके यश से परिचित थे। उन्होंने उनको अपना साझीदार बनाने का सोच लिया और यह विचार कार्य रूप में परिणित भी होगया। इसके परिणाम स्वरूप वाट ने छोटे से बड़ा इञ्जिन बनाया जिससे कारखाने को बड़ा लाभ हुआ और यह ईंजिन भी बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ। अन्य देशों के बड़े २ व्यवसायी इसे मंगाने लगे। वाट ने धनोपार्जन की ओर अधिक ध्यान न रखकर ईंजिन को सुधारने में अपना ध्यान रखा और जहां तक होसका उसमें सुधार भी किया।

समझने की बात है कि साधारण घटना से भी ऐसी शक्तियों का आविर्भाव हो जाता है कि सारा संसार उससे सुख और समृद्धि प्राप्त कर सकता है। अगर दिमाग रखकर प्रयत्न किया जाय तो ऐसे आविष्कार असंभव नहीं।

कितनी साधारण घटना से संसार को सुख और समृद्धि प्रदान करने वाली शक्ति का आविर्भाव हुआ। तुम दिन-रात अपने घर में भात-दाल की हाँडी से निकलती हुई भाप को देखते हो, पर तुम में से ऐसा कौन है जो इस बालक के ऐसे रेलगाड़ी चलाने की बात को सोची हो? अगर तुम भी पढ़ो-लिखो, उद्योग-धंधों की विद्या सीखो, परिश्रमी बनो तो ऐसी कितनी ही शक्तियों का आविष्कार कर सकते हो।

विद्युत-शक्ति

वर्षा ऋतुमें जब काले मेघ आकाश में घिर आते हैं और उमड़-घुमड़ कर घहराने लगते हैं तब कभी-कभी उनके संघर्ष से ऐसे कड़ाके का घोष होता है और हम सबों की दृष्टियों के समक्ष क्रम से जगमगाती

ज्योति छिटक जाती है। हम सभी भयभीत हो जाते हैं और हमारी दृष्टियां पलकों में छुप जाती हैं। यह है विद्युत-शक्ति, कभी कभी हम तुम यह सुन लेते हैं कि अमुक मनुष्य वज्रपात या बिजली गिरने से मर गया। उस वृक्ष की विशाल शाखायें भहरा कर गिर पड़ीं और मन्दिर के गगनचुंबी कलश टूट गये। अगर तुम किसी नगर के रहने वाले होगे या नगर जाकर बड़े-बड़े राजकीय भवन देखे होगे तो अवश्य तुम्हें दो चार छड़ दिखलाई पड़े होंगे जिनके सिरे में त्रिशूल के आकार की पतली छोटी कनखियां निकली होंगी। जानते हो ये किस लिये हैं ? जब विद्युत-शक्ति आकाश से गिरती है तब वह विशाल और उच्च भवनों, मन्दिरों पर आती है और उन्हें विनष्ट कर देती है। ये छड़ ऐसी धातुओं से निर्मित होते हैं कि गिरने वाली विद्युत शक्ति को अपने में विलीन कर धरती की सतहों तक पहुँचा देते हैं और भवन या मन्दिर सुरक्षित रहता है। जहां ये छड़ नहीं है, वहीं के ऊंचे ऊंचे मकान, मन्दिर टूट-फूट जाते हैं। इतनी महान शक्ति रखने वाली विद्युत क्या है ? ये सब बातें कैसे होती हैं ? इन्हीं बातों को जानना जरूरी है।

भूमण्डल—सारी पृथ्वी और वायुमण्डल—में सब स्थानों में एक प्रकार का सूक्ष्म पदार्थ है। उसका नाम है तड़ित् (शक्ति)। इस आश्चर्यजनक पदार्थ को सब लोग नहीं देख सकते। पर कभी-कभी किसी वस्तु से चमक के रूप में यह उत्पन्न हो जाती है। विद्युत और वज्रध्वनि इसी का काम है। काँच, रेशम, गन्धक, धूआं आदि घिस करके थोड़ी सी तड़ित प्रकट की जा सकती है।

यदि काँच अथवा लोहे को सूखे हाथों में खूब मलकर या ऊनी कपड़ों पर उन्हें रगड़ कर बाल, सूत, पर, कागज अथवा किसी ऐसे हलके पदार्थ के पास रक्खें तो वे हलके पदार्थ काँच-अथवा लोहा में

विशाल भवनों पर दिखाई पड़ने वाले छड़ जिन धातुओं से बनते हैं उनमें ताड़ित प्रवाह को क्षमता और शक्ति बहुत तीव्र होती है। इसी से उन भवनों पर ज्योंही वज्रपात होने का चिन्ह दृष्टिगोचर होता है त्योंही तड़ित् प्रवाह को ये छड़ पृथ्वी के पेट में पहुँचा देते हैं। इससे वे भवन सुरक्षित रह जाते हैं।

एरोप्लेन वा वायुयान

हाईड्रोजन गैस की शक्ति के सहारे बैलून में आदमी उड़ने तो लगे पर स्वच्छंद रूप से आकाश में स्वेच्छापूर्वक आ जा न सके। बैलून को अपने मनोनुकूल दिशा-निर्धारित करने का साधन मनुष्य के हाथ में नहीं आया था। अब भी आकाश में उड़ने वाले वायु की गति पर ही उड़ते थे। वायु की गति के विरुद्ध उड़ना उनकी सामर्थ्य और शक्ति दोनों के बाहर था।

बैलून उड़ने के १०० वर्ष बाद तक किसी ने यह कल्पना भी नहीं की कि इच्छानुसार उड़ने के लिये अपनी बुद्धि और प्रतिभा का पूर्ण उपयोग किया जाय। हां, बीच बीच में एक दो ने इधर अपने मस्तिष्क को लगाया था। एक व्यक्ति ने यह सोचा कि नाव पर जैसे पाल लगा कर के उसे इच्छानुकूल दिशा की ओर बहा ले जा सकते हैं उसी भांति बैलून पर भी पाल तान दिया जाय तो मनोवांछित दिशा की ओर उड़ाया जा सकता है। उनके कथनानुसार बैलून पर पाल लगाया गया पर उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। जिधर चाहिये उधर बैलून उड़ न सका। क्योंकि ज्योंही बैलून को वायु की गति के सहारे दूसरी ओर उड़ाने के लिये पाल उठाया गया त्योंही यह पाल के साथ ही हवा की ओर घूम गया और हवा के साथ उड़ने लगा।

जब पाल का प्रयत्न सफल नहीं हुआ तब एक व्यक्ति ने पतवार के उपयोग के लिये सम्मति दी। तुम लोग तो यह बात देखते होंगे कि पतवार को लेश-मात्र इधर उधर किया कि बड़ी-बड़ी नावें अपनी दशा में परिवर्तन कर देती हैं। इसी तरह बैलून में भी पतवार लगाई गयी पर यह भी साधन सफल नहीं हुआ। यह प्रश्न हो सकता है कि यदि पतवार घूमाने से नाव की गति में परिवर्तन हो जाता है तो भला उससे बैलून की गति क्यों नहीं नियंत्रित की जा सकती है ?

यदि तुम कभी नदी के प्रवाह की ओर अपनी नाव छोड़ दो और ऐसा समय आ जाय कि तुम्हारी नाव की ओर प्रवाह की गति समान हो जाय उस समय तुम कितना ही प्रयत्न करो कि पतवार घुमा कर नाव के वेग को बदल दें तो संभव नहीं होगा। यदि डांड लेकर अथवा पाल तान कर प्रवाह की अपेक्षा नाव शीघ्रता से प्रवाहित की जाय अथवा किसी प्रयत्न से प्रवाह की अपेक्षा नाव की गति कम की जाय तभी पतवार घुमा कर नाव की दिशा में परिवर्तन लाया जा सकता है।

जिस समय आकाश में बैलून उड़ता है उस समय वायु की और बैलून की गति बराबर रहती है। इसी से हजार पतवार घुमाने पर भी बैलून की गति में कुछ भी अन्तर नहीं पड़ता। साथ ही लोगों ने यह भी विदित किया कि किसी प्रकार यदि बैलून की गति वायु की गति से तीव्र कर दी जाय तो पतवार घुमाने से मनोवांछित दिशा की ओर बैलून को अग्रसर किया जा सकता है।

आज कल मोटर इंजिन का आविष्कार हुआ है। इसकी सहायता से बैलून की गति बढ़ाई जा सकती है। पर जिस समय की बात हम कहते हैं, उस समय मोटर-इंजिन की कल्पना भी नहीं की गई थी। लोग बैलून की गति में वृद्धि के लिये तरह-तरह के प्रयत्नों में लगे

रहे पर जब तक मोटर इंजिन नहीं आविष्कृत हुआ तब तक उसकी गति यथेष्ट रूप से नहीं बढ़ायी जा सकी। बैलून के प्रगट होने पर भी यह हर आदमी के काम में उपयोगी नहीं हो सका। जब मनुष्य को हल्के और शक्तिशाली पेट्रोल इंजिन का पता लग गया तब अनन्त आकाश का विस्तृत और दुर्गम पथ खुलने और सरल होने लगा। इसी के परिणाम-स्वरूप आज अनेक छोटे बड़े परिवर्तनों के साथ विज्ञान ने एक सम्पन्न विमान की भेंट संसार को दी है।

वायुयान

वायुयान के आविर्भाव से मनुष्य आकाश में स्वच्छंद उड़ान तो लेने लगे, किन्तु आकाश पर उनकी विजय तब हुई जब उन्होंने वायुयान को आज के नवीन वैज्ञानिक साधनों से सम्पन्न किया।

अब तक बैलून या हवाई जहाज, जो आकाश में उड़ने के लिये साधन थे, वायु की अपेक्षा हल्के थे पर वायुयान हवा से भारी बैलून और उसके बाद के हवाई जहाज आकाश में उड़ते थे, वे वायु से हल्के होने के कारण और यह होना उचित ही था। क्योंकि हल्की वस्तु हवा में उड़ती है, किन्तु वैज्ञानिक वायुयान उड़ा अपनी शक्ति से। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति की उसने लेश-मात्र भी परवाह नहीं की। यह काम कैसे प्रकृति के विरुद्ध हुआ। इसे सुनिये।

चादर रहती है ऐसे एरोप्लेन को मोनोप्लेन और जिसमें दो चादरें रहती हैं उन्हें बाईप्लेन कहते हैं। निम्नलिखित दृष्टान्त के द्वारा तुम समझ लोगे कि कैसे एरोप्लेन हवा में चढ़ता जाता है।

तुम लोगों ने घड़े या हांड़ी की टुकड़ियों को तलाब या गड्ढे के जल में फेंक-फेंक कर छिछली का खेल बहुत बार खेला होगा। तुमने देखा होगा कि घड़े की पतली-पतली टुकड़ियां शक्ति लगाकर फेंकने से कैसे पानी के ऊपरी सतह पर छल-छल करती आगे की ओर बढ़ी चली जाती हैं और जब तक उन टुकड़ियों में शक्ति बनी रहती है तब तक छलछलाती हुई चली जाती हैं। जहां गति में कमी आयी वहीं वे डूब जाती हैं।

एरोप्लेन के बारे में भी यही बात है। एरोप्लेन की बड़ी बड़ी चादर फूटे घड़े की टुकड़ी सी है। पानी के जल के समान ऊपर हवा भरी हुई है। जल में यह चादर न चल कर हवा की सतहों पर से चलती है। जब तक मोटर इंजिन इन चादरों को हवा पर आगे ठेले ले जा सकती है तब तक यह अपनी शक्ति के द्वारा हवा को दाब कर नीचे नहीं उतर सकती।

जिस दिन मोटर-इंजिन बना उसी दिन कागज की गुड्डी के अनुकरण के द्वारा वायुयान बना लिया गया और उसे उड़ाने के लिये मोटर-इंजिन लगा दिया। अर्विल राइट और विल्बर राइट नामक दोनों भाइयों ने ऐसा एरोप्लेन या विमान बना लिया।

इतने दिनों के उद्योग और यत्न से, अनवरत परिश्रम के पश्चात् और कितने अमूल्य जीवन देने से आकाश में वाञ्छित वायुयान उड़ा ले जाने का मनोरथ सफल हुआ। इन वायुयानों ने यूरोप के महान युद्धों में इतने चमत्कार दिखलाये हैं कि लोग स्तंभित रह गये। इन विमानों की प्रतिद्वन्द्विता इन्द्र की परियां भी आज करने का नाम न लेंगी।

टेलिफोन—तार द्वारा सुनने का खेल

बाल्यावस्था में हम लोग तार द्वारा सुनने का खेल खेलते थे। वह ऐसे कि फोंक बांस के एक-एक बित्ता के दो टुकड़े काटकर चोंगा बना लेते थे। फिर इन दोनों का मुंह एक कागज से मढ़ देते थे और मढ़े हुए मुंहों के बिच में अटका कर बहुत लम्बा तागा नत्थी कर देते थे। इस तरह से हमारी तार द्वारा सुनने की तैयारी हो जाती थी। अब दोनों चोंगों में से एक को लेकर एक बालक दूर जहां तक तागा जा सकता था चला जाता था। वहां खड़ा होकर वह बालक चोंगे के खुले हुए मुँह को अपने कान में लगाता था और दूसरा बालक चोंगे के खुले हुए मुंह में अपना मुंह लगाकर धीरे से बोलता था। वह बालक जो बोलता था वह ज्यों का त्यों कानों में भन-भन करके सुनाई पड़ जाता था। इसी तरह पहला बालक बोलता और दूसरा सुनता। बारी-बारी करके जब सब बालक बोलते और सुन लेते थे तो तागे को उन दोनों चोंगे में भर कर उन्हें एकत्रित कर रख देते थे। इस खेल में हम लोगों को जो आनन्द मिलता था, जो कौतूहल और आश्चर्य उत्पन्न होता था वह वयस्क होने पर, आंख खुलने पर चारों ओर के संसार की अवस्था देखने पर नहीं प्राप्त हो सकता।

यह खेल एक दूसरी भांति से भी कुछ दिनों बाद खेला जाने लगा। पर इस तरह सब जगह खेला नहीं जा सकता था। हमारे गांव के पास एक नदी पर पुल है। उस पुल के ऊपर जिसमें नदी की ओर कोई लुढ़क कर गिर न जाय इसकी रोक के लिये दोनों ओर बांस बराबर मोटे लोहे के नल लम्बे लम्बे दूर तक लगे हुए हैं। वे इस छोर से उस छोर तक खोखले हैं। उनके दोनों छोर जहां ईंट की जोड़ाई से मिलते हैं कुछ अलग हैं। बस, बालकों के मन में बात बैठ गई। एक बालक इस ओर मुंह लगा कर बोलने लगा और दूसरा उस ओर सुनने लगा फिर क्या पूछना था। दनों ओर से समाचार आने जाने लगे। बालकों की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। अब भी हम उस पुल से पार करते हैं तो कभी-कभी छोटे बालकों को बोलते और सुनते देखते हैं।

हो सकता है कि भारत के और भागों में भी इस प्रकार के खेल बालक खेलते हों और उससे उनको और बातें भले ही विदित न होती हों पर उनका मनोरंजन तो अवश्य होता होगा। ये खेल हमारी ही बाल्यावस्था के हों ऐसी बात नहीं है। हमारे वृद्धजन भी तो इस खेल को खेलते आये हैं। जब तो हमने उनसे सीखे हैं। यह खेल वृद्धजनों का खड़ा किया हो या बालकों का ही आविष्कार हो, इससे हमारी कोई बहस नहीं है, हमें यह कहना है कि उन दोनों खेलों में आधुनिक युग के टेलिफोन का रहस्य अवश्य समाया हुआ है, एक में देखते हैं कि हमारे बोलने का शब्द तागे के संबंध से दूसरे के कानों में पहुँचता है और दूसरे में वह बाहर निकल कर—नल के भीतर घिरे रह कर। हम यह नहीं कह सकते कि बहुत दूर पर ये ऐसे खेल खेलें जांय तो कहां तक मेरा मनोरथ पूरा हो सकता है क्योंकि यह मेरी परीक्षित बात नहीं है, अगर इस तरह समाचार आने-जाने भी लगे तो इसमें बड़ी बड़ी कठिनाइयां हैं, जो आज कल टेलिफोन में नहीं है।